अंतस

अर्धवार्षिक पत्रिका, अंक-26, 15 अगस्त 2024

जीवन भाषा एवं प्रौद्योगिकी

एक समसामयिक दृष्टिकोण

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर

नियम-निर्देश

- अंतस के आगामी अंक के प्रकाशन हेतु अपनी मौलिक एवं यथासंभव अप्रकाशित रचनाएं भेजने का कष्ट करें।
- रचनाएं यथासंभव टाइप की हुई हों, रचनाकार का पूरा नाम, पद एवं संपर्क विवरण का उल्लेख अपेक्षित है।
- लेखों में शामिल छाया-चित्र तथा आंकड़ों से संबंधित आरेख होना चाहिए।
- अनुदित लेखों की प्रामाणिकता अवश्य सुनिश्चित करें। अनुवाद में सहायता हेतु संस्थान राजभाषा प्रकोष्ठ से संपर्क कर सकते हैं।
- प्रकाशन के लिए किसी भी लेखक को किसी प्रकार का मानदेय नहीं दिया जाएगा।
- अंतस में उन सभी प्रकार के विचारों का स्वागत होगा जो संस्थान परिसर में रहने वाले अथवा काम करने वाले लोगों का प्रतिनिधित्व करते हैं किन्तु किसी प्रकार के राजनीतिक विचारों को प्रोत्साहित नहीं किया जाएगा।
- अंतस में प्रकाशित रचनाओं में निहित विचारों के लिए संपादक मंडल अथवा राजभाषा प्रकोष्ठ उत्तरदायी नहीं होगा और इसके लिए पूरी की पूरी जिम्मेदारी स्वयं लेखक की होगी।
- रचनाएं अंतस के अनवरत दो अंकों में प्रकाशित न होने की स्थिति में संबंधित रचनाकार राजभाषा प्रकोष्ठ से जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।
- प्रयुक्त भाषा सरल, स्पष्ट एवं सुवाच्य हिंदी भाषा हो।

स-आभार
संपादक मंडल

अंतस परिवार

संरक्षक
प्रोफेसर मणीन्द्र अग्रवाल

निर्देशन
प्रोफेसर ब्रज भूषण

कुलसचिव
श्री विश्व रंजन

मुख्य संपादक
डॉ0 अर्क वर्मा

संपादक
श्री विजय कुमार पाण्डेय

संपादन सहयोग
प्रोफेसर शिखा दीक्षित
प्रोफेसर कांतेश बालानी
प्रोफेसर संतोष कुमार मिश्र
प्रोफेसर ललित सारस्वत

अभिकल्प
नितेश कुमार

अनुवाद
श्री जगदीश प्रसाद

वर्तनी शोधन
श्री अरविन्द कुमार सैनी

छायाचित्र
श्री गिरीश पंत

विशेष सहयोगः प्रस्तुत अंक के सभी रचनाकार, समस्त संस्थान कर्मी एवं विद्यार्थी साहित्य सभा।

संकेतक

शुभेच्छा

निदेशक ... 03
उप निदेशक ... 04
कुलसचिव ... 05

संपादकीय

मुख्य संपादक ... 06

रिपोर्ट

57वाँ दीक्षान्त समारोह ... 07
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की सातवीं बैठक ... 09

गुरुदक्षिणा

श्री सुधाकर केशवन ... 11

साक्षात्कार

डॉ0 ज्योतिर्मयी दाश ... 14
गाथा महोत्सव-2024 ... 17
कानपुर हैरिटेजः भ्रमण एवं सराहना ... 18

साहित्य यात्रा

मैं और बच्चे ... 22
सरल भाषा-सफल प्रौद्योगिकी ... 24
जल बचाएं जीवन बचाएं ... 25
पेड़ और पत्ते ... 25
मोड़ ... 26
साहस-विद्यार्थी का धन ... 26
जीवन भाषा एवं प्रौद्योगिकी ... 27
जीवन है, पर क्या है जीवन ... 27
अखबार ... 28
एक साधारण छात्र ... 29
जिंदगी की कश्मकश ... 30
ठूंठा आम ... 30
पैसे देकर आज मैंने एक अनुभव कमाया ... 31
विश्व आत्महत्या रोकथाम दिवस ... 31
मन ... 32
वो साँवली लड़की ... 32

तकनीकी लेख

मेडटेक आईआईटी कानपुरः स्वदेशी नवाचार के लिए एक केंद्र ... 33
मोटरस्पोर्ट्स नवाचार और प्रतिबद्धता की उत्कृष्ट यात्रा ... 35

विरासत

बड़े भाई साहब ... 37

अतिथि रचनाकार

श्रीमद्भगवद्गीता से प्रकट हुए सर्वकालिक नेतृत्व सिद्धान्त ... 42

भाषा-विमर्श

उलटबांसी ... 45

बाल बत्तीसी

गर्म पहाड़ ... 47

शुभेच्छा
निदेशक की कलम से....

प्रिय पाठकों,

78वें स्वतंत्रता दिवस के पावन अवसर पर संस्थान की हिंदी पत्रिका 'अंतस' के 26वें अंक का लोकार्पण करते हुए मुझे अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है। इस पत्रिका के सफल एवं समयबद्ध प्रकाशन हेतु, समस्त रचनाकारों एवं प्रकाशन से जुड़े सभी सदस्यों को मेरी तरफ से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं। इस बार यह पत्रिका 'जीवन, भाषा और प्रौद्योगिकी: एक समसामयिक दृष्टिकोण' विषय पर प्रकाशित की गई है।

मानव-जीवन में भाषा और प्रौद्योगिकी दोनों ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और मुझे प्रसन्नता है कि इस संस्थान ने इन दोनों ही क्षेत्रों में अहम योगदान दिया है। प्रतिवर्ष, इस संस्थान में विभिन्न राज्यों से, अलग-अलग भाषायी और सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि का प्रतिनिधित्व करने वाले छात्र प्रवेश लेते हैं। इन छात्रों की भाषा संबंधी समस्याओं को ध्यान में रखते हुए, हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं के संपोषण एवं समन्वय हेतु 'शिवानी केन्द्र' की स्थापना की गई है। इस केन्द्र के माध्यम से विविध स्थानीय पृष्ठभूमि से आए संस्थान के छात्रों को शिक्षा में सहज परिवर्तन के साथ-साथ तकनीकी भाषायी सहायता प्रदान की जाती है। इस संस्थान द्वारा उच्च अध्ययन में हिंदी भाषा के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए हिंदी में विज्ञान और प्रौद्योगिकी संबंधी विषयों को 'विज्ञानविकी' नामक वेबसाइट पर संगृहीत किया गया है जहां पर यह सभी के लिए सहज ही उपलब्ध है। वर्तमान में 9वीं से 12वीं कक्षा तक के स्कूली छात्रों के लिए गणित, भौतिकी, जीव विज्ञान और रसायन विज्ञान पाठ्यक्रमों को हिंदी में उपलब्ध कराने का कार्य प्रगति पर है। साथ ही विभिन्न तकनीकी पुस्तकों को भी हिंदी में उपलब्ध कराने का प्रयास जारी है।

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर लगातार विभिन्न क्षेत्रों में अनुसंधान करता रहा है, जिन्हें देश ही नहीं बल्कि दुनिया में पहचान मिली है। पिछले 3 साल से लगातार 100 से अधिक एवं वर्ष 2023 में 124 आईपीआर (IPR) दाखिल किए गए हैं, जो देश के किसी भी संस्थान द्वारा सबसे अधिक हैं। इस संस्थान ने तकनीकी एवं चिकित्सा के क्षेत्र और नए स्टार्टअप को बढ़ावा देने के लिए अनवरत प्रयास किया है जिसके परिणाम स्वरुप, एनआईआरएफ (NIRF) रैंकिंग 2023 के अनुसार, इनोवेशन के मामले में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर, देश का सर्वश्रेष्ठ संस्थान है। हमने हाल ही में जीन थेरेपी तकनीक को लॉरस लैब्स और रिलायंस लाइफ साइंसेज जैसी कंपनियों को हस्तांतरित किया है जिससे कि हम जीन थेरेपी के क्षेत्र में काम करने वाले और औद्योगिक भागीदारों को तकनीक हस्तांतरित करने वाले भारत के पहले शैक्षणिक संस्थानों में से एक बन गए हैं। जीन थेरेपी, मांसपेशीय दुर्विकास (मस्कुलर डिस्ट्रॉफ़ी), रतौंधी और वर्णान्धता जैसी आनुवंशिक बीमारियों को ठीक कर सकती है।

इस संस्थान ने दुनिया का पहला पोर्टेबल मृदा परीक्षण उपकरण 'भू परीक्षक' विकसित किया है, यह एक ऐसा मृदा परीक्षण उपकरण है, जो 90 सेकंड में मिट्टी के स्वास्थ्य का पता लगा सकता है। इसके अतिरिक्त एक अन्य तकनीक "मुख परीक्षक" उपकरण है जो कि 90 सेकंड के भीतर मुंह के कैंसर का पता लगा सकती है। यह तकनीक, स्वास्थ्य-क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव लाएगी, जिससे अगर सही समय पर मुंह के कैंसर का पता लगाया जाता है, तो कई लोगों की जान बचा सकती है। इसके अलावा, हमने भारत की पहली 'हाइपरवेलोसिटी एक्सपेंशन टनल टेस्ट' सुविधा की सफलतापूर्वक स्थापना और परीक्षण किया है, जो एक बड़ी उपलब्धि है, तथा भारत को इस उन्नत हाइपरसोनिक परीक्षण क्षमता हासिल करने वाले कुछ चुनिंदा देशों में शामिल करती है।

मेरी यही कामना है कि यह संस्थान इसी तरह से मानव जीवन, भाषा और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अधिक से अधिक योगदान देता रहे।

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ!

मणीन्द्र अग्रवाल
निदेशक

शुभेच्छा

उप निदेशक की कलम से...

प्रिय पाठकों,

आप सभी को 78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं!

जीवन, भाषा और प्रौद्योगिकी आपस में एक दूसरे के पूरक हैं। भाषा के द्वारा ही हम अपने विचार, दूसरों से भली-भांति प्रकट कर सकते हैं और दूसरों के विचार स्पष्टतया समझ सकते हैं। किसी भी विषय को सोचते समय हम मानसिक संभाषण करते हैं, जिससे कि हमारे विचार आगे चलकर भाषा के रुप में प्रकट होते हैं। भाषा, हमारी शिक्षा, संस्कृति और प्रगति की तस्वीर है जिससे ज्ञान, संवर्धन होता है और जीवन की राह आसान हो जाती है। यह संस्कारों से जुड़ी होती है और हमारे पूर्वजों के संस्कारों को अगली पीढ़ियों तक पहुंचाने में मदद करती है अतएव यह हमारी अस्मिता की पहचान का एक साधन भी है। भाषा, वैचारिक आदान-प्रदान, आंतरिक अभिव्यक्ति एवं विकास का सबसे विश्वसनीय माध्यम है, इसके बिना इंसान अधूरा है और अपने इतिहास तथा परंपरा से अलग रह जाता है।

भाषा और प्रौद्योगिकी हमारे दैनिक जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। प्रौद्योगिकी के बिना अब हमारे जीवन की कल्पना कर पाना मुश्किल है, इसने मानव समाज के हर क्षेत्र में व्यापक रूप से योगदान दिया है, जिसकी वजह से समय के साथ-साथ मानव जीवन निरंतर समृद्ध हुआ है। प्रौद्योगिकी ने समाज, अर्थव्यवस्था, और व्यक्तिगत जीवन के हर पहलू में महत्वपूर्ण सुधार किए हैं। अगर संचार के क्षेत्र में देखें, तो प्रौद्योगिकी ने संपर्क करने के तरीकों को बदल दिया है। हम पक्षियों के द्वारा संदेश भेजने से लेकर, अंतर्देशीय पत्र कार्ड, पोस्ट कार्ड, पेजर, एस टी डी बूथ आदि से होते हुए वीडियो काल तक पहुंच चुके हैं, और न केवल पहुंचे हैं, बल्कि आज सभी के पास यह सुगमता से उपलब्ध है। इसके अलावा प्रौद्योगिकी ने वैज्ञानिक अनुसंधान के क्षेत्र में भी गति प्रदान की है, जिससे कि उत्पादकता में वृद्धि, चिकित्सा उपकरणों का नवीनीकरण, ऊर्जा प्रणालियों में नवाचार, और पर्यावरणीय संरक्षण में सुधार हुआ है। नई-नई तकनीकों से उत्पादकता और दक्षता में वृद्धि हुई है जिससे कि व्यक्तिगत और सामाजिक-आर्थिक स्तर समृद्ध हुआ है, और इसका असर देश के आर्थिक विकास के रुप में दिखाई देता है।

भाषा एवं प्रौद्योगिकी का हमारे जीवन एवं समाज के विकास में अप्रतिम योगदान है, और इसी को याद करते हुए संस्थान की हिंदी पत्रिका अंतस का 26वां अंक 'जीवन, भाषा और प्रौद्योगिकी: एक समसामयिक दृष्टिकोण' आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है।

आप सभी से अनुरोध है कि इस पत्रिका के निरंतर विकास में इसी तरह सहभागी बने रहें, चाहे एक पाठक के रुप में इसे अपना स्नेह देते रहें या फिर अपनी उत्कृष्ट रचनाओं के माध्यम से इसे अभिसिंचित करते रहें। इस पत्रिका के संपादन से जुड़े सभी सदस्यों को अशेष बधाई एवं कोटिशः शुभकामनाएं।

एक बार पुनः स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाओं के साथ!

ब्रज भूषण
उप निदेशक

शुभेच्छा

कुलसचिव की कलम से...

प्रिय पाठकों,

संस्थान की हिंदी पत्रिका 'अंतस' का 26वां अंक ''जीवन, भाषा एवं प्रौद्योगिकी: एक समसामयिक दृष्टिकोण'' जैसे महत्वपूर्ण विषय को लेकर प्रकाशित की गई है। उल्लेखनीय है कि आज के युग में भाषा और प्रौद्योगिकी के मिश्रण ने मानव जीवन को पूरी तरह से बदल कर रख दिया है। आज शासन, प्रशासन, शिक्षा, स्वास्थ्य, व्यापार, बैंकिग तथा सैन्य कार्यों जैसे अनगिनत क्षेत्रों में प्रौद्योगिकी के प्रयोग से कार्य करना काफी आसान एवं सुविधाजनक हो गया है। कोरोना काल जैसे मुश्किल वक्त से बाहर निकालने में भी प्रौद्योगिकी का अहम योगदान रहा है। इस दौरान संस्थान के प्रोफेसर एवं उनकी टीम ने कई जनोपयोगी यंत्रों एवं मॉडलों को विकसित किया, जैसे कि कोरोना का सूत्र मॉडल, पोर्टेबल वेंटिलेटर, स्वासा एन-95 मास्क आदि जिनसे कि मुश्किल समय में लाखों जीवन बचाने में अहम योगदान प्राप्त हुआ।

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर परिसर में बहुभाषी पृष्ठभूमि वाले विद्यार्थी, संकाय तथा कर्मचारी शोध कार्यों में शामिल रहते हैं जो विविध भाषा-भाषी होने के बावजूद अनुसंधान के क्षेत्रों में उन्नत प्रौद्योगिकी विकसित कर रहे हैं और ये प्रौद्योगिकी समाज तथा राष्ट्र के लिए उपयोगी सिद्ध हो रही हैं। हमारे कई पूर्व-छात्र देश-विदेश में प्रौद्योगिकी तथा तकनीकी संस्थानों के प्रमुख के रूप में अपनी सेवाएं दे रहे हैं। इन पूर्व-छात्रों द्वारा विकसित की गई प्रौद्योगिकी/ तकनीकों को वैश्विक स्तर पर मान्यता मिल रही है। शिक्षा, संचार, स्वास्थ्य और प्रशासन जैसे क्षेत्रों में तकनीकी नवाचारों ने हमारी भाषा और संचार की पद्धतियों को नए आयाम दिए हैं।

संस्थान स्थित छात्र हिंदी साहित्य सभा, शिवानी केन्द्र, राजभाषा प्रकोष्ठ एवं अन्य संस्थाएं, भाषा, संस्कृति संबंधी आयोजनों के माध्यम से परिसर वासियों के अंदर, वर्ष पर्यन्त साहित्यिक रस का संचार करते रहते हैं। इसके अलावा, अधिष्ठाता अंतर्राष्ट्रीय संबंध कार्य, शिवानी केन्द्र के माध्यम से, संस्थान में अध्ययनरत विदेशी छात्रों को हिंदी भाषा सिखाने के लिए साप्ताहिक कक्षाओं का आयोजन कर रहे हैं ताकि विदेशी छात्र परिसर के अंदर सहजता महसूस कर अपने शोध कार्यों को सफलतापूर्वक निष्पादित कर सकें। निश्चित रूप से ये सब गतिविधियाँ मनुष्य की मनोदशा और जीवन को प्रभावित करती है जो उन्हें भविष्य की योजनाओं और परियोजनाओं के लिए प्रेरित करती हैं।

स्वतंत्रता दिवस के इस पावन अवसर पर, हिंदी पत्रिका 'अंतस' के विमोचन का हिस्सा बनते हुए मुझे अत्यन्त हर्ष की अनुभूति हो रही है। संपादन मंडल के समस्त सदस्यों, रचनाकारों एवं पाठकों को मेरी तरफ से बधाई एवं शुभकामनाएं। अंतस भविष्य में भी ऐसे ही लोकप्रिय बनी रहे, यही मेरी कामना है।

स्वतंत्रता दिवस की ढ़ेरों शुभकामनाओं के साथ!

विश्व रंजन
कुलसचिव

संपादकीय

मुख्य संपादक की कलम से...

अंतस परिवार से जुड़े सभी सदस्यों एवं पाठकों को सादर प्रणाम!

आप सभी को 26वें अंक के सफल एवं समयबद्ध प्रकाशन पर हार्दिक बधाई एवं 78वें स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएं!

सर्वप्रथम, अंतस परिवार में नए संरक्षक, उप निदेशक एवं कुलसचिव का हार्दिक स्वागत है एवं पूर्ण विश्वास है कि आपके मार्गदर्शन में अंतस दिनों-दिन और समृद्ध होगी।

भाषा एवं प्रौद्योगिकी, आज मनुष्य की अपरिहार्य आवश्यकताओं में से एक है तथा इस संस्थान में प्रौद्योगिकी के साथ-साथ विविध भाषाओं का एक अद्भुत संगम देखने को मिलता है। इस परिसर में हिंदी दिवस, विश्व हिंदी दिवस, विश्व मातृ-भाषा दिवस, गाथा एवं अक्षर जैसे साहित्यिक महोत्सव के साथ-साथ, भाषा एवं संस्कृति के उत्थान हेतु विविध कार्यक्रमों का वर्ष पर्यन्त आयोजन होता रहता है जिसमें सभी परिसरवासी उत्साहपूर्क हिस्सा लेते हैं। तकनीकी संस्थान होने के बावजूद भी, भाषा को समृद्ध करने की दिशा में किए गए प्रयासों की वजह से अंतस का यह अंक 'जीवन, भाषा एवं प्रौद्योगिकीः एक समसामयिक दृष्टिकोण' विषय पर प्रकाशित की गई है।

विद्यार्थी हर संस्थान की शोभा एवं अमूल्य धरोहर होते हैं एवं विद्यार्थियों के लिए दीक्षान्त समारोह से बढ़कर कोई समारोह नहीं। अतएव इस अंक की शुरुआत 57वें दीक्षान्त समारोह से ही है जिसका आयोजन 29 जून 2024 को किया गया । इस समारोह की मुख्य अतिथि ओरेगॉन स्टेट यूनिवर्सिटी यूएसए की अध्यक्ष, प्रोफेसर जयति वाई मूर्ति रहीं जिन्होने कि इस अवसर पर विद्यार्थियों को रिस्क लेने तथा असफलता से न डरने हेतु प्रेरित किया।

गुरुदक्षिणा में इस बार आपकी मुलाकात होगी आईसीएफ के पूर्व अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी, **श्री सुधाकर केशवन** से जिन्होंने कि इस संस्थान में, ऊर्जा नीति और जलवायु समाधान के लिए चंद्रकांता केशवन केंद्र की स्थापना में महत्वपूर्ण सहयोग किया। साक्षात्कार में इस बार हम मिलेंगे, संस्थान की पूर्व छात्रा एवं 2020 के प्रतिष्ठित शांति स्वरुप भटनागर पुरस्कार से सम्मानित **डॉ. ज्योतिर्मयी दाश** से, जो कि वर्तमान में कोलकाता के जादवपुर स्थित इंडियन एसोसिएशन फॉर द कल्टीवेशन ऑफ साइंस, के आर्गेनिक केमिस्ट्री विभाग में प्रोफेसर हैं। तत्पश्चात, गाथा महोत्सव 2024 जिसमें कि कला एवं साहित्य के क्षेत्र से विद्वानगण श्री राजेन्द्र गुप्ता, अभिनेता अशोक पाठक, डॉ. विष्णु सक्सेना आदि शामिल हुए। इसके बाद हम जानेंगे एक बहुत ही महत्वपूर्ण पहल के बारे में, **कानपुर हैरिटेजः भ्रमण एवं सराहना,** जिसकी शुरुआत इस संस्थान के एप्रोच सेल द्वारा की गई है।

साहित्य यात्रा में डॉ. आकांक्षा द्विवेदी की **मैं और बच्चे,** डॉ. संतोष कुमार मिश्र 'केशवेन्दु' की **सरल भाषा-सफल प्रौद्योगिकी,** क्षमा जायसवाल की **जल बचाएं जीवन बचाएं** आदि प्रेरणादायी लेख हैं। इसके अतिरिक्त इस बार आपको कई अच्छी कविताओं से रूबरू होने का मौका मिलेगा जिसमें **पेड़ और पत्ते, जीवन भाषा एवं प्रौद्योगिकी, एक साधारण छात्र, ठूंठा आम, पैसे देकर आज मैने एक अनुभव कमाया** आदि प्रमुख हैं। इस बार का तकनीकी लेख चिकित्सा के क्षेत्र में स्वदेशी तकनीक, संयत्रों के विकास, डिजाइन, निर्माण एवं शोध को समर्पित है एवं आगे अतिथि रचानाकर में, पद्मश्री एवं सरदार पटेल राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित एवं पूर्व कुलपति मेरठ विश्वविद्यालय, डॉ. रवीन्द्र कुमार की **श्रीमद्भगवद्गीता से प्रकट हुए सर्वकालिक नेतृत्व सिद्धान्त** है।

अंत में, मैं सभी सुधी पाठकों से अनुरोध करता हूं कि आप भी एक रचनाकार के रुप में अंतस का हिस्सा बनने का प्रयास करें एवं अपनी श्रेष्ठ रचनाओं से इसे और उत्कृष्ट बनाने में अपना योगदान दें। इस अंक के सभी रचनाकारों तथा संपादन से जुड़े सभी सदस्यों को साधुवाद।

धन्यवाद!

अर्क वर्मा

अर्क वर्मा
मुख्य संपादक

रिपोर्ट

57वाँ दीक्षान्त समारोह

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर में प्रवेश पाने वाले विद्यार्थी, संस्थान की विशिष्ट शिक्षण पद्धति तथा प्रयोगशालाओं में होने वाले अनुसंधान कार्यों को अपनी शैक्षणिक दिनचर्या का अभिन्न अंग बना लेते हैं। विद्यार्थियों को देर रात तक परिसर में अपनी अनुसंधान संबंधी परियोजनाओं पर कार्य करते देखा जा सकता है। पठन-पाठन के दौरान कई विद्यार्थियों के अपने शिक्षकों के साथ आत्मीय संबंध बन जाते हैं जिन्हें वह जीवन भर संजोए रखते हैं। विद्यार्थी चाहे जहाँ भी रहें लेकिन वह अपने शिक्षकों (गुरुओं) के प्रति हमेशा समर्पण एवं कर्तव्य निष्ठा की भावना से ओत-प्रोत रहते हैं। संस्थान भी गुरु-शिष्य की इस परंपरा का निर्वहन करते हुए अपने विद्यार्थियों को उनकी अनिवार्य शिक्षा समाप्त होने के पश्चात उपाधियां प्रदान करता है। इसी क्रम में, शिक्षा एवं दीक्षा को एक ही मंच से सम्मान प्रदान करने के उद्देश्य से दिनांक 29 जून 2024 को संस्थान के मुख्य ऑडिटोरियम में 57वें दीक्षान्त समारोह का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर 2331 विद्यार्थियों को उपाधियां प्रदान की गईं। दीक्षान्त समारोह की मुख्य अतिथि ओरेगॉन स्टेट यूनिवर्सिटी यूएसए की अध्यक्ष प्रोफेसर जयति वाई मूर्ति रही। प्रोफेसर जयति ने अपने संबोधन में, उपाधि पाने वाले विद्यार्थियों को शुभकामनाएं दी एवं कहा कि जीवन में रिस्क जरूर लें, फेल होने से न डरें और शिक्षित बनने के बाद समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी समझें और इसका निर्वहन भी करें। उन्होंने अपना उदाहरण देते हुए कहा कि जब मैंने सन् 1974 में आईआईटी कानपुर के यांत्रिक अभियांत्रिकी विभाग में प्रवेश लिया, तो मेरे विभाग में केवल दो छात्राएं तथा पूरे कैंपस में कुल सात छात्राएं थीं इसके बावजूद मेहनत की बदौलत बिना डरे पढ़ाई जारी रखी और आज इस मुकाम पर पहुंची हूँ।

दीक्षान्त समारोह की अध्यक्षता कर रहे संस्थान संचालक मंडल के सदस्य डॉ. महेश गुप्ता ने कहा कि कार्बन मुक्त और क्लाउड डेटा की सुरक्षा बेहद जरूरी है। देश के युवा वैज्ञानिक सस्टेनेबिलिटी के साथ डेटा सुरक्षा पर उत्कृष्ट तकनीक विकसित करने का कार्य करें जिससे समाज एवं देश का कल्याण हो सके।

इस अवसर पर संस्थान के निदेशक प्रोफेसर मणीन्द्र अग्रवाल ने कहा कि कॉलेज से स्नातक होना विद्यार्थी के जीवन में मील का पत्थर होता है तथा अपने आप में सबसे मधुर क्षणों में से एक होता है। इसलिए आप सब के लिए यह बेहद महत्वपूर्ण है क्योंकि आज आपने यह लक्ष्य हासिल कर लिया है जिसके लिए आप काम कर रहे थे, और साथ ही आप अब उस संस्थान को अलविदा कहने वाले हैं जहाँ आपने कई साल अध्ययन किया तथा कई दोस्त भी बनाएं। आप जो भी पेशा चुनें उसमें आईआईटी कानपुर की भावना को जरूर आत्मसात करें। यह भावना आपको जीवन भर मार्गदर्शक के रूप में प्रेरित करेगी। तकनीकी ज्ञान का लाभ उठाकर इसे नवाचार और उद्यमिता के क्षेत्र में जरूर इस्तेमाल करें, क्योंकि इससे आप न केवल सामाजिक चुनौतियों का समाधान कर सकते हैं बल्कि रोजगार सृजन के माध्यम से आर्थिक विकास को भी बढ़ावा दे सकते हैं।

पिछले वर्ष के दौरान की गई शैक्षणिक पहलों पर प्रकाश डालते हुए प्रोफेसर अग्रवाल ने कहा कि संस्थान के मिशन के अनुरूप हमने कई शैक्षणिक पहल की हैं जो न केवल वैश्विक मानक स्थापित करेंगी बल्कि महत्वपूर्ण राष्ट्रीय आवश्यकताओं को पूरा करने में भी योगदान देंगी। पिछले वर्ष के दौरान 'कोटक स्कूल ऑफ सस्टेनेबिलिटी' की शुरुआत समाधान प्रदान करने और भविष्य की पीढ़ियों को सतत विकास के लिए नेतृत्व प्रदान करने के लिए की गई थी।

दीक्षान्त समारोह में प्रदान की गई उपाधियों का विस्तृत विवरण (पाठ्यक्रमानुसार) निम्नानुसार है।

उपाधि	विद्यार्थियों की संख्या
पीएचडी	226
एमटेक-पीएचडी (दोहरी उपाधि)	12
एमडेस-पीएचडी (दोहरी उपाधि)	01
एमटेक	456
एमबीए	36
एमडेस	17
एमएस (अनुसंधान द्वारा)	77
पीजीपीईएक्स-वीएलएफएम	40
एमएससी (द्विवर्षीय)	165
ई.मास्टर्स	205
डबल मेजर	26
दोहरी उपाधि	89
एमएस-पीडी (एम.एस दोहरी उपाधि का भाग)	14
बीटेक	842
बीएस	125
कुल	2331

दीक्षान्त समारोह के अवसर पर संस्थान के प्रतिभावान छात्रों को विशिष्ट पुरस्कारों एवं मेडल से सम्मानित किया गया। पुरस्कार एवं मेडल प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों का विवरण इस प्रकार से है।

प्रेसिडेंट गोल्ड मेडलः श्री कुंवरप्रीत सिंह, कंप्यूटर साइंस एंड इंजीनियरिंग

निदेशक स्वर्ण पदक (पांच वर्षीय स्नातक कार्यक्रम): विप्लव पटेल, केमिकल-इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग,

निदेशक स्वर्ण पदक (चार वर्षीय स्नातक कार्यक्रम): सार्थक कोहली, कंप्यूटर साइंस एंड इंजीनियरिंग

रतन स्वरूप मेमोरियल पुरस्कारः श्री तेजस रामाकृष्णनन, कंप्यूटर साइंस एंड इंजीनियरिंग

डा. शंकर दयाल शर्मा पदकः सुश्री गरिमा बावा, भौतिकी विभाग

इस दौरान विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को प्रवीणता पदक तथा सामुदायिक सेवा के मामलों में नेतृत्व करने तथा कला एवं सांस्कृतिक गतिविधियों में योगदान देने लिए उत्कृष्टता पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

संस्थान के निदेशक प्रोफेसर मणीन्द्र अग्रवाल ने पुरस्कार, पदक एवं उपाधि ग्रहण करने वाले समस्त छात्र-छात्राओं, उनके परिवार के सदस्यों को अपनी हार्दिक शुभकामनाएं दीं तथा दीक्षान्त समारोह में उपस्थित समस्त अतिथियों का स्वागत किया एवं आभार प्रकट किया।

अहं सर्वस्य प्रभवो मत्तः सर्वं प्रवर्तते।
इति मत्वा भजन्ते मां बुधा भावसमन्विताः।।
(श्रीमद्भगवद्गीताः 10:08)

भावार्थ

मैं समस्त आध्यात्मिक तथा भौतिक जगतों का कारण हूँ, प्रत्येक वस्तु मुझ ही से उद्भूत है। जो बुद्धिमान यह भलीभाँति जानते हैं, वे मेरी प्रेमाभक्ति में लगते हैं तथा हृदय से पूरी तरह मेरी पूजा में तत्पर होते हैं।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की सातवीं बैठक का आयोजन

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति कानपुर कार्यालय-3 की सातवीं बैठक का आयोजन समिति के कार्यवाहक अध्यक्ष प्रोफेसर ब्रज भूषण की अध्यक्षता में दिनांक 16 मई 2024 को हुआ। इस बैठक में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (उत्तरी क्षेत्र-2) गाजियाबाद के उप निदेशक (कार्यान्वयन) डॉ. छबिल कुमार मेहेर, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, हिंदी शिक्षण योजना, मीरपुर कैंट कानपुर के सहायक निदेशक श्री नव़ाज शरीफ, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति कानपुर, कार्यालय-3 के सदस्य सचिव श्री विजय कुमार पाण्डेय के अलावा समिति के 24 सदस्य कार्यालयों से कुल 46 कार्यालय प्रमुखों/वरिष्ठ अधिकारियों ने भाग लिया।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (उत्तरी क्षेत्र-2), गाजियाबाद के उप निदेशक डॉ. छबिल कुमार मेहेर ने सभी सदस्य कार्यालय प्रमुखों को संबोधित करते हुए कहा कि किसी भी नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति को उत्कृष्ट बनाने में सदस्य कार्यालयों का योगदान महत्वपूर्ण होता है। उन्होंने सभी कार्यालय प्रमुखों को प्रोत्साहित करते हुए, आह्वान किया कि जो कार्यालय प्रमुख, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की लगातार तीन बैठकों में शामिल होंगे, उन्हें प्रमाण पत्र प्रदान कर सम्मानित किया जाएगा। साथ ही साथ जो नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (अध्यक्षीय कार्यालय) नियत समय पर नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक संपन्न करेंगे, उन्हें भी राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (उत्तरी क्षेत्र-2), गाजियाबाद द्वारा सम्मानित किया जाएगा। उन्होंने नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति कार्यालय-3 की पत्रिका प्रकाशन की महत्ता पर जोर दिया तथा इस कार्य के लिए भारतीय खाद्य निगम कानपुर द्वारा उत्तरदायित्व लेने के लिए उनकी प्रशंसा की। उल्लेखनीय है कि इस पत्रिका के लिए सभी सदस्य कार्यालयों द्वारा लेख उपलब्ध कराए जाएंगे।

हिंदी शिक्षण योजना, मीरपुर कैंट, कानपुर के सहायक निदेशक श्री नवाज शरीफ द्वारा, हिंदी शिक्षण योजना के अधीन संचालित हिंदी संबंधी प्रशिक्षण सुविधाओं और उनके उपयोग के बारे में विस्तार से जानकारी उपलब्ध कराई। उन्होंने आगे जानकारी देते हुए बताया कि इस योजना के अंतर्गत केंद्र सरकार के कर्मचारियों और अधिकारियों को हिंदी भाषा, हिंदी टाइपिंग एवं हिंदी आशुलिपि का प्रशिक्षण दिया जाता है। उन्होंने आगे यह भी बताया कि इस योजना के तहत हिंदी भाषा, हिंदी टाइपिंग का प्रशिक्षण वर्ष में दो बार दिया जाता है तथा हिंदी आशुलिपि का प्रशिक्षण वर्ष में एक बार दिया जाता है। साथ ही साथ एक अल्पकालिक प्रशिक्षण 5 दिनों की अवधि का होता है। इन सभी प्रशिक्षण कार्यक्रमों के अंतर्गत कर्मचारी अथवा अधिकारी, हिंदी शिक्षण योजना मीरपुर कैंट में आकर प्रशिक्षण ले सकते हैं। इसके अतिरिक्त यदि किसी कार्यालय में, जिनके यहाँ प्रशिक्षण के लिए कम से कम 10 कर्मचारी शेष बचे हों, वे हिंदी शिक्षण योजना मीरपुर कैंट को प्रशिक्षण संबंधी प्रस्ताव भेज सकते हैं। ऐसे कर्मचारियों को उनके कार्यालय में ही आकर प्रशिक्षण दिया जाएगा बशर्ते संबंधित कार्यालय द्वारा कम्प्यूटर संबंधी सुविधाएं उपलब्ध करा दी जाएं।

इस अवसर पर नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति कानपुर कार्यालय-3 के सदस्य कार्यालयों से प्राप्त दिनांक 1 जुलाई 2023 से 31 दिसम्बर 2023 तक की छमाही प्रगति रिपोर्ट की समीक्षा की गई। सदस्य सचिव ने जानकारी देते हुए बताया कि छमाही प्रगति रिपोर्ट में आंकड़ें भरते समय सावधानी बरतें क्योंकि कुछ कार्यालयों द्वारा भेजी गई रिपोर्ट में दिये गये आंकड़े कुल योग से मेल नहीं खा रहे हैं। अलग-अलग शीर्ष में दर्शाये गये आंकड़ों का ध्यानपूर्वक योग करके, उनकी कुल संख्या दर्शायी जानी चाहिए। साथ ही साथ धारा 3(3) के तहत जारी होने वाले 14 प्रकार के दस्तावेजों को अनिवार्यतः हिंदी एवं अंग्रेजी (द्विभाषी) में ही जारी करें। इसके अतिरिक्त उन्होंने यह भी जानकारी दी कि कार्यालय अपनी छमाही प्रगति रिपोर्ट, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा उपलब्ध कराए गए फार्मेट में ही प्रेषित करें जिससे संकलित करते समय सुविधा हो सके।

इस दौरान उत्कृष्ट कार्य निष्पादन करने वाले निम्नलिखित कार्यालयों को स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया।

1. दि न्यू इंडिया एश्योरेंन्स कंपनी लिमिटेड, कानपुर
2. भारतीय खाद्य निगम, मंडल कार्यालय, कानपुर
3. केन्द्रीय विद्यालय आईआईटी, कानपुर

गत छमाही के दौरान नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति कानपुर कार्यालय-3 के निम्नलिखित कार्यालयों द्वारा हिंदी की अधोलिखित प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिनका विवरण इस प्रकार से है :

1. भारतीय जीवन बीमा निगम, उत्तर मध्य क्षेत्रीय कार्यालय, कानपुर द्वारा दिनांक 20.11.2023 को निबंध लेखन प्रतियोगिता

क्र सं.	नाम	पदनाम	कार्यालय	स्थान
1	प्रियंका शुक्ला	कनिष्ठ रसायनज्ञ	क्षेत्रीय एगमार्क प्रयोगशाला कल्याणपुर, कानपुर	प्रथम
2	विकास यादव	कनिष्ठ सहायक	भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर	द्वितीय
3	समता कटियार	प्रशासनिक अधिकारी	भारतीय जीवन बीमा निगम उ0 मध्य क्षेत्रीय कार्यालय कानपुर	तृतीय
4	वैभव गुप्ता	कनिष्ठ सहायक	भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर	सांत्वना

2. राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर द्वारा दिनांक 19.12 2023 को निबंध लेखन प्रतियोगिता

क्र सं.	नाम	पदनाम	कार्यालय	स्थान
1	अजय पाण्डेय	स.श्रे. III (तकनीकी)	भारतीय खाद्य निगम	प्रथम
2	विजय शर्मा	वाणिज्य निरीक्षक	उ.म. रेलवे कानपुर	द्वितीय
3	नीतेश कुमार	स.श्रे. II (तकनीकी)	भारतीय खाद्य निगम	तृतीय
4	प्रदीप कुमार सेंगर	प्रबन्धक	कानपुर हवाई अड्डा	सांत्वना

3. दि न्यू इंडिया एश्योरेंन्स कंपनी लिमिटेड द्वारा दिनांक 19.02.2024 को चित्र आधारित कविता प्रतियोगिता

क्र सं.	नाम	पदनाम	कार्यालय	स्थान
1	अशोक कुमार शाही	प्रशासनिक अधिकारी	दि न्यू इंडिया एश्योरेंन्स कम्पनी लि0	प्रथम
2	छवि श्रीवास्तव	कनिष्ठ सहायक	भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर	द्वितीय
3	अजय पाण्डेय	स. श्रे. III (तकनीकी)	भारतीय खाद्य निगम	तृतीय
4	दया शंकर मिश्र	आशुलिपिक ग्रेड- I	राष्ट्रीय शर्करा संस्थान कानपुर	सांत्वना

अध्यक्षीय संबोधन

समिति के अध्यक्ष प्रोफेसर ब्रज भूषण ने उपस्थित समस्त सदस्यों का स्वागत किया तथा आभार प्रकट करते हुए कहा कि मुझे समिति की लगातार तीसरी बैठक में अध्यक्ष के रूप में निदेशक महोदय का प्रतिनिधित्व करने का सुअवसर प्राप्त हुआ।

उन्होंने कहा कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति कानपुर कार्यालय-3 के तहत पत्रिका का प्रकाशन किया जाए और इस कार्य के लिए यदि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति कानपुर कार्यालय-3 के पचास प्रतिशत कार्यालय भी आगे आ जाए तो पत्रिका का प्रकाशन आसानी से हो सकता है। उन्होंने आगे यह भी सुझाव दिया कि यदि पत्रिका के लिए लेख की कमी पड़ी तो केन्द्रीय विद्यालयों के अध्यापकों और वहाँ के छात्रों से भी लेख आमंत्रित कर सकते हैं तथा सुविधा एवं बजट के अनुसार पत्रिका की हार्ड कॉपी अथवा उसकी सॉफ्ट कॉपी भी निकाल सकते हैं। पत्रिका की ई-कॉपी का लिंक आईआईटी की मुख्य वेबसाइट के अंतर्गत राजभाषा प्रकोष्ठ की वेबसाइट पर दिया जा सकता है, जिसे नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति कानपुर कार्यालय-3 के सदस्य आसानी से कहीं से भी देख सकते हैं। साथ ही अध्यक्ष महोदय ने सुझाव दिया कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति कानपुर कार्यालय-3 का सोशल मीडिया हैंडल भी होना चाहिए ताकि उस पर नराकास संबंधी गतिविधियों को नियमित रूप से पोस्ट किया जा सके। उन्होंने आगे यह भी कहा कि जो कार्यालय नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति कानपुर कार्यालय-3 की गतिविधियों में बढ़-चढ़ कर अपना सहयोग दें, उन कार्यालयों का उल्लेख (प्रचार-प्रसार) सोशल मीडिया के माध्यम से किया जाए। इससे अन्य कार्यालयों को भी कार्य करने का प्रोत्साहन मिलेगा जिसके फलस्वरूप जिन कार्यालयों के प्रमुख, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों में भाग नहीं लेते वे भी बैठकों में भाग लेने के लिए प्रेरित होंगे ।

अंत में, सदस्य सचिव ने सभी को सादर धन्यवाद ज्ञापित किया एवं राष्ट्रगान के साथ बैठक संपन्न हुई।

गुरुदक्षिणा

श्री सुधाकर केशवन

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर ने अपने नवोन्मेषी अनुसंधान कार्यों के कारण देश-विदेश में अपनी चमक बिखेरी है। संस्थान को यह गौरव दिलाने में निश्चित रूप से संस्थान के प्रोफेसरों एवं विद्यार्थियों का विशिष्ट एवं असाधारण योगदान रहा है। संस्थान के पूर्व छात्रों ने प्रौद्योगिकी एवं अनुसंधान के क्षेत्रों में कई उपलब्धियाँ हासिल की हैं। अध्ययन के पश्चात अनेक पूर्व छात्र अपने व्यावसायिक उत्तरदायित्वों का सफलतापूर्वक निर्वहन करने के साथ साथ जन-कल्याण की भलाई के लिए भी स्वेच्छा से कई योजनाओं/परियोजनाओं को मूर्त रूप देने का कार्य कर रहे हैं। ऐसे पूर्व छात्र अपने मातृ संस्थान की बेहतरी के लिए हमेशा संस्थान प्रशासन के संपर्क में रहते हैं तथा समय-समय पर संस्थान को अपने नवोन्मेषी विचारों एवं परियोजनाओं से अवगत कराते रहते हैं। पत्रिका के इस अंक के माध्यम से 'गुरुदक्षिणा' कालम के अंतर्गत हम संस्थान के एक ऐसे ही पूर्व छात्र श्री सुधाकर केशवन, जो आईसीएफ के पूर्व अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी हैं, से पाठकों को रूबरू करा रहे हैं।

अंतस परिवार: आईसीएफ लंबे समय से कई सामाजिक कार्यक्रमों से जुड़ा हुआ है। क्या आप हमें इसके बारे में कुछ बता सकते हैं?

सुधाकर केशवन: आईसीएफ, पर्यावरण, जलवायु परिवर्तन, ऊर्जा, सार्वजनिक स्वास्थ्य, आवास और आपदा प्रबंधन जैसे विषयों पर काम करता है। इस केन्द्र द्वारा विकसित किए गए कार्यक्रम सार्वजनिक भलाई में योगदान देने पर केंद्रित हैं। इसलिए यह केन्द्र अपनी स्थापना के बाद से ही सामाजिक कार्यक्रमों को विकसित करने और उन्हें लागू करने का कार्य कर रहा है। इस केन्द्र द्वारा अधोलिखित विशिष्ट परियोजनाओं/कार्यक्रमों को लागू किया गया है।

- आईसीएफ ने 1970 और 1980 के दशक में उत्सर्जन व्यापार प्रणाली विकसित की और उसे लागू भी किया जिसने एसिड वर्षा को रोकने की दिशा में अमेरिका और कनाडा की सल्फर डाइऑक्साइड उत्सर्जन को कम करने में मदद की।
- इसने यूएस ईपीए और यूएस ऊर्जा विभाग के लिए एनर्जी स्टार ऊर्जा दक्षता कार्यक्रम को डिजाइन करने में सहायता की।
- इसने कैटरीना और रीटा तूफान पीड़ितों को मुआवजा देने के लिए प्रणाली विकसित की और अब जलवायु परिवर्तन के प्रभाव से निपटने के लिए प्रतिरोधक क्षमता वाले बुनियादी ढांचे को विकसित करने के तरीके विकसित करने पर ध्यान केंद्रित कर रहा है।

अंतस परिवार: आईसीएफ ने ग्रीन प्रैक्टिस संबंधी कई पहलों को अपनाया है तथा वर्ष 2006 से कार्बन न्युट्रल की दिशा में कार्य कर रहा है। क्या यहां पर आप इसके कुछ उदाहरण प्रस्तुत कर सकते हैं?

सुधाकर केशवन: आईसीएफ के कर्मचारियों का हमेशा से यह मानना रहा है कि अगर फर्म, संगठनों को स्थिरता पर सलाह दे रही है तो उसे 'अपनी बात पर अमल' भी करना चाहिए। आईसीएफ ने अपने मकान मालिकों के साथ मिलकर भवनों की ऊर्जा दक्षता में सुधार किया है। सार्वजनिक परिवहन के नज़दीक कार्यालय स्थापित किए हैं तथा अन्य उपायों के साथ -साथ अपनी यात्रा दूरी को अधिकतम सीमा तक घटाने का कार्य भी किया। अपने अवशिष्ट उत्सर्जन को ध्यान में रखते हुए, आईसीएफ ने कार्बन तटस्थता हासिल करने के लिए उच्च गुणवत्ता वाले कार्बन ऑफसेट भी खरीदे हैं।

अंतस परिवार: आईसीएफ की यूएसपी (खासियत) क्या रही है?

सुधाकर केशवन: कर्मचारी आईसीएफ से इसलिए जुड़ते हैं क्योंकि इसका एक मिशन है जो उन्हें पसंद है और यह मिशन है, 'दुनिया भर में जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाना।' वे आईसीएफ सिटी फंड के अधिकार वाले क्षेत्रों में कार्य करना चाहते हैं। क्लाइंट, क्षेत्र विशेषज्ञता के कारण फर्म को काम पर रखते हैं। आईसीएफ इन क्षेत्रों में कर्मचारियों और क्लाइंट के लिए अभ्यास का एक समुदाय प्रदान करता है। आईसीएफ सभी लोगों के लिए सब कुछ नहीं है लेकिन अपने विशेष क्षेत्रों में एक बहुत ही विशिष्ट ब्रांड बनकर उभरा है।

अंतस परिवार: तीन दशकों से अधिक समय तक आईसीएफ के साथ काम करने से आपको व्यक्तिगत रूप से किस प्रकार की पहचान (ख्याति) मिली है?

सुधाकर केशवन: इससे मुझे यह समझने में मदद मिली कि अगर आप सफल होना चाहते हैं तो अपने व्यवहार तथा दूसरों के साथ बातचीत करते समय इनमें विश्वास पैदा करना महत्वपूर्ण है।

अंतस परिवार: अमेरिका में अपने शुरुआती करियर के दौरान एक अप्रवासी के रूप में आपको किन-किन चुनौतियों का सामना करना पड़ा? आपको भारत वापस आने के लिए किस बात ने प्रेरित किया?

सुधाकर केशवन: 1982 में जब मैं अमेरिका गया तो मेरा अप्रवासी बनने का कोई इरादा नहीं था। 1976 में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर (आईआईटी कानपुर) से स्नातक करने के बाद, मुझे प्रोसेस कंट्रोल सिस्टम में पीएचडी करने के लिए कॉर्नेल यूनिवर्सिटी से फेलोशिप का प्रस्ताव मिला। मेरा जीपीए अथवा सीपीआई अच्छा तो था लेकिन उतना अच्छा नहीं था जितना कि मेरे कुछ सहपाठियों का था। मेरे लिए यह स्पष्ट था कि मैं एक शिक्षक की बजाए एक बेहतर प्रबंधक बन सकता था, इसलिए मैंने फैसला किया कि अगर मुझे भारतीय प्रबंधन संस्थान (आईआईएम) अहमदाबाद से प्रस्ताव मिलता है तो मैं वहाँ जाऊँगा, और मुझे वह अवसर मिला भी। मैंने सन् 1978 में आईआईएम अहमदाबाद से स्नातक किया। इसके बाद मैंने अमेरिका से डिग्री लेने का फैसला करने से पूर्व दिल्ली और मुंबई में चार साल तक काम किया। वहाँ आवेदन करने का कारण यह था, कि मैं ऊब चुका था। मुझे अच्छा वेतन मिलता था, लेकिन 1982 के दौरान भारत में आजीविका संबंधी अवसर सीमित थे। मैंने एमआईटी में प्रौद्योगिकी और नीति कार्यक्रम हेतु मास्टर डिग्री के लिए आवेदन किया, क्योंकि मैं कार्यक्रम की अंतःविषयक प्रकृति से रोमांचित था। जब मैं एमआईटी में था

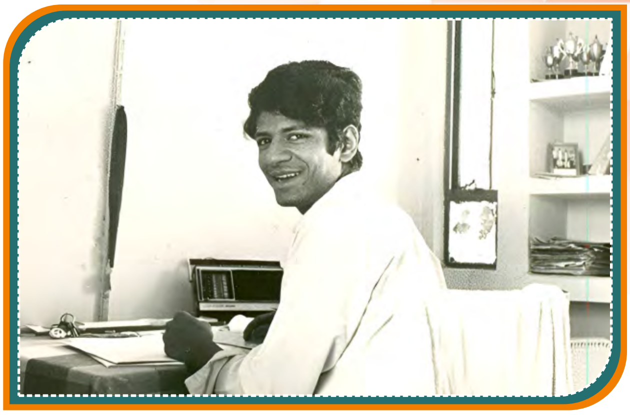

तभी आईसीएफ ने मुझे नौकरी का प्रस्ताव दिया और तब से मैं यहीं पर अपनी सेवाएं उपलब्ध करा रहा हूँ।

अंतस परिवार: अगर आप उद्योग में नहीं होते, तो आप फिर क्या करते?

सुधाकर केशवन: मैं एक वास्तुकार बनना पसंद करता।

अंतस परिवार: आप अपने अब तक के जीवन को कैसे देखते हैं संक्षेप में बताएँ?

सुधाकर केशवन: मैं यही कहूँगा कि कार्य अभी प्रगति पर है।

अंतस परिवार: आपकी सबसे पसंदीदा गतिविधि (क्रिया) क्या है?

सुधाकर केशवन: मैं क्रिकेट में टेस्ट मैच देखना पंसद करता हूँ और अगर मैच नहीं देख रहा होता तो फिर पढ़ना पसंद करता हूँ।

अंतस परिवार: कृपया हमें अपने बचपन के दिनों के बारे में कुछ बताइए।

सुधाकर केशवन: मैं और मेरा छोटा भाई दिल्ली के सेंट जेवियर्स हाई स्कूल में पढ़ते थे। यह शानदार स्कूल, जेसुइट्स द्वारा चलाया जाता है। हाई स्कूल में मैंने 'विज्ञान' लिया जबकि मेरे भाई ने मानविकी का विकल्प चुना। माता-पिता केंद्र सरकार में सेवारत थे और दिल्ली में रहते थे। मैं मध्य दिल्ली के सरकारी आवास में बड़ा हुआ। हमने जयपुर में अपनी मौसी के घर पर गर्मियों की छुट्टियाँ बिताईं, लंगड़ा आम खाया तथा राजस्थान विश्वविद्यालय के पूल में तैराकी की।

अंतस परिवार: आपके व्यक्तित्व को आकार देने में आपके माता-पिता, खासकर आपकी माता जी की क्या भूमिका रही?

सुधाकर केशवन: मेरी माँ ने हमेशा यह सुनिश्चित किया कि हमें यह बोध रहे कि वह, हम सभी में सबसे ज्यादा शिक्षित हैं

ताकि हमें विनम्र बनाए रखा जा सके। वह अनुशासनप्रिय थीं, हमारे ग्रेड अच्छे होने पर वो स्कूल और कॉलेज के मामलों मे हस्तक्षेप नहीं किया करती थीं। हमेशा हमें वही पढ़ने को कहती थीं जिसमें हमारी रुचि हो। मेरे पिता ने कला, साहित्य और क्रिकेट में हमारी रुचि जगाई। उन्होंने दो संस्थान स्थापित किए और हमेशा भावी पीढ़ियों की मदद करने के लिए उत्सुक रहते थे। हमारे पास दुनिया की सबसे अच्छी चीज़ें थीं जैसे उत्तर भारतीय की दक्षिण भारतीय से शादी, विज्ञान एवं कला तथा समुदाय के प्रति प्रतिबद्धता।

अंतस परिवारः आईआईटी कानपुर में आपकी सबसे प्यारी यादें क्या हैं?

सुधाकर केशवनः लगातार होने वाले बुल सेशन।

अंतस परिवारः यदि आईआईटी कानपुर में आपको अपने पुराने साथियों से मिलने का अवसर मिले तो आप उन्हें क्या संदेश देना चाहेंगे?

सुधाकर केशवनः उनके लिए मेरा संदेश है कि यह समय आपके जीवन के सबसे बेहतरीन वर्षों में से हैं-इनका आनंद लें। आईआईटी कानपुर स्थित एयरफील्ड से पायलट का लाइसेंस प्राप्त करें।

अंतस परिवारः आईआईटी कानपुर में रहते हुए आपने किन पाठ्येत्तर गतिविधियों में भाग लिया?

सुधाकर केशवनः मैंने सभी इंटर आईआईटी में 100 मीटर, 200 मीटर तथा ट्रिपल जंप में भाग लिया। अपने अंतिम वर्ष में टीम की कप्तानी भी की। सांस्कृतिक महोत्सवों के लिए आईआईटी कानपुर की भागीदारी के लिए नाटकों में अभिनय भी किया।

अंतस परिवारः आईआईटी कानपुर की छवि को बेहतर बनाने में पूर्व छात्र क्या भूमिका निभा सकते हैं?

सुधाकर केशवनः मैं जिन पूर्व छात्रों से मिला हूँ उनमें से अधिकांश के पास आईआईटी कानपुर की बहुत अच्छी यादें हैं। मुझे यकीन है कि वे संस्थान के बारे में अच्छी बातें करते हैं। यदि आईआईटी कानपुर के पास उन्हें अपने साथ जोड़ने का कोई तरीका है तो मुझे यकीन है कि वे इस कार्य के लिए अवश्य आगे आएंगे।

अंतस परिवारः आप आईआईटी कानपुर के उन युवा छात्रों को क्या संदेश देना चाहेंगे जो उच्च शिक्षा प्राप्त करने अथवा अपना करियर प्रारंभ करने के लिए अमेरिका जाना चाहते हैं?

सुधाकर केशवनः आप जो भी करें अवश्य सुनिश्चित करें कि आप इसे मानव कल्याण के लिए कर रहे हैं। आप वही कार्य करें जिसमें आपकी रुचि हो। 21वीं सदी एशिया की सदी है इसलिए अमेरिका के बजाय भारत में अवसर होने की संभावना अधिक है।

अंतस परिवारः आपकी भविष्य की क्या योजनाएँ हैं?

सुधाकर केशवनः स्वस्थ रहने के लिए!

अंतस परिवारः आईआईटी कानपुर समुदाय को आप क्या संदेश देना चाहेंगे?

सुधाकर केशवनः यह एक अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त संस्थान है। यह संस्थान भारत तथा दुनिया के भविष्य को नई दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। हम सभी को इसे और बेहतर बनाने में अपना योगदान देना चाहिए।

अंतस परिवारः धन्यवाद..

यः सर्वत्रानभिस्त्रेहस्तत्तत्प्राप्य शुभाशुभम्।
नाभिनन्दति न द्वेष्टि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता।।
(श्रीमद्भगवद्गीताः 2:57)

भावार्थ

इस भौतिक जगत् में जो व्यक्ति न तो शुभ की प्राप्ति से हर्षित होता है और न अशुभ के प्राप्त होने पर उससे घृणा करता है, वह पूर्ण ज्ञान में स्थिर होता है।

यदा संहरते चायं कूर्मोऽङ्गानीव सर्वशः।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता।।
(श्रीमद्भगवद्गीताः 2:58)

भावार्थ

जिस प्रकार कछुवा अपने अंगों को संकुचित करके खोल के भीतर कर लेता है, उसी तरह जो मनुष्य अपनी इन्द्रियों को इन्द्रियविषयों से खींच लेता है, वह पूर्ण चेतना में दृढ़तापूर्वक स्थिर होता है।

साक्षात्कार

डॉ. ज्योतिर्मयी दाश

डॉ. ज्योतिर्मयी दाश, कोलकाता के जादवपुर स्थित इंडियन एसोसिएशन फॉर द कल्टीवेशन ऑफ साइंस, के ऑर्गेनिक केमिस्ट्री विभाग में संप्रति प्रोफेसर के रूप मे अपनी सेवाएं दे रहीं हैं। उन्हें 2020 के प्रतिष्ठित शांति स्वरूप भटनागर पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है। अंतस परिवार के साथ इस साक्षात्कार में उन्होंने रसायन विज्ञान के प्रति अपने प्रेम, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग एवं गणित (एसटीईएम) में महिलाओं की उपस्थिति और अपने शोध सलाहकारों; लब्धप्रतिष्ठित डॉ. फैज अहमद खान, प्रसिद्ध जर्मन रसायनज्ञ प्रोफेसर डॉ. हंस-अनरिच रीसिग, प्रसिद्ध फ्रांसीसी रसायनज्ञ डॉ. जैनी कॉसी और ख्याति प्राप्त सर बालासुब्रमण्यम ने किस प्रकार से उनके शोध कार्यों को प्रभावित किया, के बारे में विस्तार से वार्ता की। प्रस्तुत है डॉ. दाश के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश!

अंतस परिवारः रसायन विज्ञान में आपकी रुचि कैसे विकसित हुई?

डॉ. ज्योतिर्मयी दाशः मुझे बहुत कम उम्र से ही विज्ञान के प्रति लगाव हो गया था। जब मैं हायर सेकेंडरी में थी तो मुझे रसायन विज्ञान बहुत दिलचस्प लगने लगा था क्योंकि रसायन विज्ञान हमारे दैनिक जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस प्रकार मैंने अपनी बीएससी के दौरान रसायन विज्ञान को अपने प्रमुख विषय के रूप में चुना। इसके बाद मेरी रुचि ऑर्गेनिक केमिस्ट्री की तरफ और बढ़ गई तथा मैंने ओडिशा के रेवेनशॉ कॉलेज से ऑर्गेनिक केमिस्ट्री (स्पेशलाइजेशन के साथ) में एमएससी की पढ़ाई की। मेरे परिवार, स्कूल और कॉलेज के प्रोफेसरों ने उच्च अध्ययन के लिए मेरे अंदर विज्ञान के प्रति रुचि जगाई। प्रकृति के चमत्कारों से हमेशा मंत्रमुग्ध रहने तथा नए अणुओं के निर्माण ने आईआईटी कानपुर में ऑर्गेनिक केमिस्ट्री से डॉक्टरेट की पढ़ाई करने के लिए मेरी रुचि को जागृत किया। यहाँ पर मुझे एहसास हुआ कि रसायन विज्ञान, प्रमुख रचनात्मक विज्ञान है जिसे विज्ञान और इंजीनियरिंग के दूसरे विषयों के इंटरफेस पर भी खोजा जा सकता है।

अंतस परिवारः आप शांति स्वरूप भटनागर पुरस्कार विजेता महिलाओं में से एक हैं । यह पुरस्कार विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग एवं गणित (एसटीईएम) विशेष रूप से भारत में महिलाओं की वृहद मौजूदगी के बारे में बताता है। आपको क्या लगता है कि एसटीईएम के क्षेत्र में अपने सपनों को साकार करने के लिए लड़कियों/महिलाओं को किस प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है? आपको क्या लगता है कि इससे किस प्रकार के बदलाव हो सकते हैं?

डॉ. ज्योतिर्मयी दाशः एसटीईएम के क्षेत्र में महिलाओं के प्रति लैंगिक असमानता सिर्फ़ हमारे देश में ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया में पाई जाती है। भारत में विज्ञान और इंजीनियरिंग के क्षेत्र में लैंगिक अंतर अन्य पेशों की तुलना में ज़्यादा पाया जाता है। हालाँकि, स्नातक और परास्नातक में अच्छी संख्या में महिला छात्राएं विज्ञान विषय पढ़ती हैं परन्तु मास्टर्स से पीएचडी के बीच गिरावट शुरू हो जाती है और फिर पीएचडी से स्वतंत्र शोध की तरफ बढ़ते समय इसमें तेज़ी से गिरावट दिखाई देती है। नतीजतन, केवल मुट्ठी भर महिलाएँ ही पुरस्कार और सम्मान के लिए नामांकित होती हैं। एसटीईएम में महिलाओं की कम भागीदारी कई कारणों से है। एक महत्वपूर्ण कारण सामाजिक और सांस्कृतिक बाधाएँ हैं। आजीविका को मैनेज करने और परिवार को पालने की दोहरी ज़िम्मेदारी, महिलाओं के लिए इसे और कठिन बना देती है। ऐसा व्यवसाय जहाँ काम और परिवार का संतुलन आसानी से बनाए रखा जा सके, संभव प्रतीत होता है। हालाँकि शैक्षणिक समुदाय में, लंबी कार्य अवधि और दृढ़ता की लगातार ज़रूरत होती है। इसके अलावा, इस क्षेत्र में पर्याप्त रोल मॉडल भी उपलब्ध नहीं हैं।

शैक्षणिक सफलता के लिए परिवार का समर्थन सबसे ज़्यादा ज़रूरी है। स्कूलों, कॉलेजों द्वारा युवा महिलाओं के अंदर इस बात की रुचि पैदा की जा सकती है कि विज्ञान और प्रौद्योगिकी की एक विशेष विधा कई व्यवसायों के लिए प्रासंगिक हो सकती है। युवा मस्तिष्क, विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में सफल महिलाओं के उदाहरणों से प्रेरित हो सकते हैं।

परमाणु भौतिक विज्ञानी, मैरी क्यूरी की नातिन, हेलेन लैंगविन जोलियट के शब्दों में, "हमें यह मानसिकता बदलनी होगी कि पुरुष बेहतर वैज्ञानिक हैं। महिलाएँ बहु क्रियाओं में सक्षम हैं तथा

शोध में सफलता अर्जित करने के लिए उनके पास पर्याप्त कौशल है। पिछले कुछ वर्षों में एसटीईएम के क्षेत्र में महिलाओं की संख्या में लगातार वृद्धि हुई है और वे एसटीईएम के सभी क्षेत्रों में सफल भी रही हैं जिसकी मान्यता उन्हें दिये गये पुरस्कारों एवं सम्मानों के रूप में दिखाई देती है।

अंतस परिवारः आपका शोध कार्य वास्तविक दुनिया को कैसे प्रभावित करता है?

डॉ. ज्योतिर्मयी दाशः मेरा शोध कार्य मेडिकल रसायन विज्ञान और नैनो प्रौद्योगिकी में नए प्रतिमान विकसित करने के लिए जीव विज्ञान के साथ आर्गेनिक रसायन विज्ञान को सम्मिलित कर अंतःविषयक अनुसंधान पर केन्द्रित रहा है। प्रमुख रूप से मेरे शोध के दो परिणाम रहे हैं जो इस प्रकार से हैं:-

(i) कैंसर के लिए नए चिकित्सीय उपकरण और
(ii) नई जैवाणु - प्रणालियाँ (Biomolecular sytems)

मेरा शोध कार्य मानव स्वास्थ्य से संबंधित समस्याओं का निदान करने के लिए एक बहु-विषयक वैज्ञानिक सेटिंग पर आधारित है। मेरे शोध का सबसे दिलचस्प पक्ष पहले से अप्राप्य जैविक अणुओं को लक्षित करने के लिए नई और स्थापित पद्धतियों का उपयोग करके रासायनिक पदार्थों की डिजाइनिंग और इंजीनियरिंग करना है। एक रसायनशास्त्री के दृष्टिकोण से, मैं नए जैविक लक्ष्यों को लक्षित तथा महत्वपूर्ण सेलुलर क्रियाओं को व्यवस्थित करने के लिए वांछित कार्यात्मक समूहों, संरचना या टोपोलॉजी वाले अणुओं को डिज़ाइन कर सकती हूँ। हमने जीन एक्सप्रेशन के नियमन में न्यूक्लिक एसिड गौण संरचनाओं की भूमिका को समझने के लिए छोटे अणु विकसित किए हैं। हमने लघु अणुओं द्वारा जी-क्वाड्रुप्लेक्स और आई-मोटिफ्स (G-quadruplexes and i-motifs) जैसी डीएनए गौण संरचनाओं को लक्षित करने के लिए नए उपकरणों की खोज की है। ये अणु शक्तिशाली कैंसर रोधी क्रियाओं को दर्शाते हैं। मेरे शोध कार्यक्रम ने कई दवाओं-जैसे रोचक जैवाणु उपकरणों और बायोमिमेटिक (biomimetic) प्रणालियों में योगदान दिया है।

अंतस परिवारः आपने पीएचडी के बाद उद्योग के बजाय शिक्षा क्षेत्र को क्यों चुना?

डॉ. ज्योतिर्मयी दाशः ज्ञान की कभी न खत्म होने वाली इच्छा ने मुझे हमेशा नई चीजों की खोज करने के लिए प्रेरित किया है। हालाँकि उद्योग भी मानव जाति की सेवा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है लेकिन मैंने शिक्षा को इसलिए चुना क्योंकि मेरा मानना है कि मानवता के दीर्घकालिक कल्याण के लिए बुनियादी शोध महत्वपूर्ण होता है जिसे शिक्षा के माध्यम से अच्छी तरह से आगे बढ़ाया जा सकता है। इसके अलावा मैं युवा और नवोदित वैज्ञानिकों तथा शोध छात्रों को पढ़ाने एवं प्रशिक्षित करने में अपना योगदान देना चाहती थी। शिक्षा को चुनने का एक और महत्वपूर्ण कारण मेरा प्रख्यात वैज्ञानिकों से जुड़ना भी था जो नवोदित वैज्ञानिकों तथा शोध छात्रों को उनकी शैक्षणिक यात्रा के दौरान प्रेरित कर सके। साथ ही साथ उन्हें मार्गदर्शन और सलाह देने का कार्य भी कर सके।

अंतस परिवारः फैज़ अहमद खान, हंस रीसिग, शंकर बालासुब्रमण्यम जैसे रसायन वैज्ञानिकों ने आपके जीवन को कैसे प्रेरित किया?

डॉ. ज्योतिर्मयी दाशः मैंने देश के एक प्रख्यात ऑर्गेनिक रसायन विज्ञानी प्रोफेसर फैज़ अहमद खान की देखरेख में ऑर्गेनिक संश्लेषण के क्षेत्र में अपनी डॉक्टरेट की डिग्री पूरी की। एक शोधकर्ता के रूप में मेरी यात्रा आईआईटी कानपुर से शुरू हुई जहाँ मैंने कई तरह की ऑर्गेनिक केमिकल ट्रांसफ़ॉर्मेशन में विशेषज्ञता हासिल की। मैंने शोध में कड़ी मेहनत एवं समर्पण की महत्ता को भी सीखा। इसके बाद, मुझे एफ. यू. बर्लिन (जर्मनी) स्थित प्रोफेसर एच. यू. रीसिग के साथ पोस्ट डॉक्टरेट शोधकर्ता के रूप में कार्य करने का अवसर मिला जहाँ मुझे प्रतिष्ठित अलेक्जेंडर वॉन हम्बोल्ट फेलोशिप से सम्मानित किया गया। प्रोफेसर एच. यू. रीसिग एक महान एवं उदार मेंटर रहे हैं। मैंने जैविक रूप से सक्रिय हेटरोसाइक्लिक यौगिकों को संश्लेषित करने के लिए संक्रमण धातु उत्प्रेरित परिवर्तनों पर शोध कार्य किया है।

तत्पश्चात, मैं एक प्रसिद्ध वैज्ञानिक, प्रोफेसर जेनिन कॉसी के समूह में शामिल हुई और पोस्टडॉक्टरल शोधकर्ता के रूप में शोध करने के लिए ईएसपीसीआई पेरिस चली गई। शोध के प्रति उनके समर्पण ने मुझे उच्च अध्ययन जारी रखने के लिए प्रेरित किया। वहाँ मैंने प्राकृतिक उत्पादों के बहु-स्तरीय संश्लेषण पर शोध कार्य किया। इस दौरान मैं जीव विज्ञान के प्रति सिंथेटिक ऑर्गेनिक केमिस्ट्री में अपनी विशेषज्ञता का पता लगाने के लिए उत्सुक थी। इसके बाद मुझे लब्धप्रतिष्ठित मैरी क्यूरी फेलोशिप से सम्मानित किया गया जिसके माध्यम से मुझे कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय स्थित प्रोफेसर सर शंकर बालासुब्रमण्यम के साथ अनुसंधान करने का अवसर प्राप्त हुआ जो न्यूक्लिक एसिड के रासायनिक जैविक विज्ञान के क्षेत्र में एक अग्रणी विशेषज्ञ हैं जिन्होंने मानव जीनोम के अनुक्रमण के लिए अगली पीढ़ी की अनुक्रमण पद्धति विकसित की। इस दौरान न्यूक्लिक एसिड अनुसंधान में मेरी गहरी दिलचस्पी उत्पन्न हुई। प्रोफेसर

शंकर बालासुब्रमण्यम मेरे शोध करियर के दौरान अत्यन्त मददगार मेंटर साबित हुए।

अपना स्वतंत्र करियर प्रारंभ करने के पश्चात, मुझे यूएसए स्थित यूनिवर्सिटी ऑफ ब्रिस्टल के प्रोफेसर स्टीफन मान के समूह से जुड़ने का अवसर प्राप्त हुआ जहाँ मैंने स्व-संयोजन और नैनोमैटेरियल के क्षेत्र में शोध कार्य किया।

ऑर्गेनिक संश्लेषण, रासायनिक जीव विज्ञान और नैनो प्रौद्योगिकी में विविध प्रकार की विशेषज्ञता के साथ, मैं रसायन विज्ञान और जीव विज्ञान में अंतःविषयक अनुसंधान का पता लगाने के लिए प्रेरित हुई। मैं बहुत भाग्यशाली थी कि मुझे अपने शोध के दौरान उत्कृष्ट मार्गदर्शक मिले जिन्होंने मेरे अंदर अभिरुचि और वैज्ञानिक नैतिकता का संचार करने का कार्य किया ।

अंतस परिवारः शोध के प्रति अमेरिका/यूरोप का दृष्टिकोण भारत से किस प्रकार भिन्न है? भारतीय शिक्षण संस्थान अपने शोध मानकों को बढ़ाने के लिए क्या कर सकते हैं?

डॉ. ज्योतिर्मयी दाशः अमेरिका/यूरोप में राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय वित्तपोषित तंत्र के साथ उन्नत वैज्ञानिक तकनीकों और अत्याधुनिक उपकरणों का उपयोग करके बहु-सांस्कृतिक अनुसंधान वातावरण में शोध की अपार संभावनाएं एवं अवसर उपलब्ध हैं। कोई भी शोधार्थी नवोन्मेषी तकनीकों को सीख सकता है और भिन्न-भिन्न परिवेश में शोध कार्य कर सकता है। इस तंत्र के माध्यम से प्रतिकारकों, रसायनों और प्रयोगशाला संबंधी अन्य वांछित उपकरण की खरीद भारत की तुलना में आसानी से एवं तेजी से की जा सकती है। शोध प्रस्ताव उच्च मानकों वाले होते हैं और शोधार्थियों को दुनिया के शीर्ष विश्वविद्यालयों के अंतर्गत विभिन्न विधाओं/विषयों में विश्व स्तरीय लब्ध प्रतिष्ठित विश्व विशेषज्ञों के साथ शोध कार्य करने का अवसर मिलता है। हाल के दिनों में भारत में भी उच्च शिक्षा का मानक बढ़ा है और अनुसंधान तथा बुनियादी ढांचे की गुणवत्ता में वृद्धि हुई है। हमारे देश में भी उच्च गुणवत्ता वाले शोध संभव हैं। अमेरिका/यूरोप से अनुभव प्राप्त करने के पश्चात कई वैज्ञानिक भारत वापस आ चुके हैं जो शिक्षा और वैज्ञानिक अनुसंधान में शामिल हो रहे हैं। शिक्षा-उद्योग के बीच की खाई को पाट कर तथा संस्थान के भीतर और बाहर विभिन्न विषयों में सहयोगी अनुसंधान विकसित करके, भारत में वर्तमान शोध मानकों को बढ़ावा दिया जा सकता है।

अंतस परिवारः उद्योग और शिक्षा जगत अत्याधुनिक तकनीक विकसित करने में किस तरह सहयोग कर सकते हैं?

डॉ. ज्योतिर्मयी दाशः उद्योग जगत आम तौर पर समाज को तत्काल लाभ पहुंचाने वाली व्यावहारिक शोध परियोजनाओं को आगे बढ़ाता है जबकि अकादमिक शोध से नवोन्मेषी खोजों का जन्म होता है। शिक्षा जगत और उद्योग जगत के बीच सहयोग केवल देने और लेने की नीति तक ही सीमित नहीं होना चाहिए बल्कि दोनों क्षेत्रों की परस्पर भागीदारी होनी चाहिए जिससे व्यावसायीकरण के लिए अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी हस्तांतरित हो सके। नवोन्मेषी उद्यमिता को समर्थन देने के लिए फंड का प्रावधान होना चाहिए। शिक्षा जगत और उद्योग जगत के बीच सहयोग का दायरा कई विषयों तक बढ़ाया जाना चाहिए जिससे लोगों के जीवन में बदलाव आए और हमारे देश की अर्थव्यवस्था मजबूत हो।

अंतस परिवारः आईआईटी कानपुर की छवि को मजबूत करने में पूर्व छात्रों की क्या भूमिका रही है?

डॉ. ज्योतिर्मयी दाशः पूर्व छात्रों को पूर्व छात्र सम्मेलनों/कार्यक्रमों में नियमित रूप से भाग लेना चाहिए। पूर्व छात्र, छात्रों और अन्य पूर्व छात्रों के लिए अपनी विषय विशेषज्ञता के कारण प्रेरणा के स्रोत तथा मेंटर बन सकते हैं। पूर्व छात्र संघ, अपने मातृ संस्थान के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिए संस्थान की विकासात्मक गतिविधियों में योगदान दे सकते हैं।

अंतस परिवारः आप उन लड़कियों को क्या संदेश देना चाहेंगी जो एसटीईएम में अपना करियर बनाना चाहती हैं?

डॉ. ज्योतिर्मयी दाशः आज महिलाएँ अपने प्रयासों और कड़ी मेहनत के कारण देश को गौरवान्वित कर रही हैं और वे समस्त क्षेत्रों में असाधारण प्रदर्शन करने की क्षमता रखती हैं। एसटीईएम का क्षेत्र बहुत वृहद है और इसमें महिलाओं के लिए अपार संभावनाएं है। मैं युवा महिला छात्राओं को एसटीईएम में अपना करियर बनाने के लिए प्रोत्साहित करती रहती हूँ क्योंकि जब हम सभी एक साथ मिलकर एसटीईएम में भागीदारी करेंगे तथा अपना श्रेष्ठ प्रयास करेंगे तो निश्चित रूप से समाज तथा देश अपनी पूरी क्षमता के साथ प्रगति के पथ पर तेजी से आगे बढ़ेगा। एसटीईएम के अंदर महिलाओं को प्राथमिकता देने से, वैज्ञानिक अनुसंधान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में, विशिष्ट परिदृश्य तथा रचनात्मक विचार उत्पन्न हो सकते हैं।

अंतस परिवारः धन्यवाद...

गाथा महोत्सव-2024

प्रसिद्ध ऑडियो प्लेटफॉर्म 'गाथा' के सफल 5 वर्ष पूरे होने पर दिनांक 21 जुलाई 2024 को भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर के आउटरीच सभागार में गाथा, राजभाषा प्रकोष्ठ, शिवानी केन्द्र एवं हिंदी साहित्य सभा के संयुक्त तत्वाधान में 'गाथा महोत्सव-2024 युवा एवं साहित्य' का आयोजन किया गया। आयोजन का शुभारंभ इस संस्थान के उप निदेशक प्रोफेसर ब्रज भूषण, अधिष्ठाता शैक्षणिक कार्य प्रोफेसर शलभ, अधिष्ठाता अंतर्राष्ट्रीय संबंध प्रोफेसर बुशरा अतीक, सिडबी इनोवेशन एवं इन्क्यूबेशन सेंटर (SIIC) के प्रभारी प्रोफेसर डॉ. अमिताभ बंदोपाध्याय, राजभाषा प्रकोष्ठ के प्रभारी प्रोफेसर डॉ. अर्क वर्मा, गाथा की सह संस्थापक और निदेशक पूजा श्रीवास्तव तथा डॉ. भावना तिवारी द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया। इस महोत्सव के शुभांरभ के अवसर पर ज्योति बधिर विद्यालय कानपुर के छात्रों ने गणेश वंदना और फिर नृत्य नाटिका प्रस्तुत करके सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया।

- कार्यक्रम के अगले क्रम में, उत्तर प्रदेश के पर्यटन स्थलों पर चर्चा करने के लिए प्रथम सत्र का संचालन डॉ. प्रदीप दीक्षित ने किया जिसमें सुप्रसिद्ध लेखक और ट्रैवल ब्लॉगर संजय शेफर्ड के साथ दिल्ली विश्वविद्यालय में सेवारत डॉ. एम के पाण्डेय ने उत्तर प्रदेश में पर्यटन को लेकर रुचि और आगामी संभावनाओं पर विस्तार पूर्वक चर्चा की।

- कार्यक्रम के दूसरे सत्र में, हिंदी काव्य में प्रसिद्ध एवं वरिष्ठ नवगीतकार रामसनेही लाल शर्मा, वीरेंद्र आस्तिक राजा अवस्थी ने गीत और नवगीत की भिन्नताओं पर और नवगीत की बारीकियों पर विस्तारपूर्वक चर्चा की। इस सत्र का संचालन जाने-माने साहित्यकार और समालोचक डॉ. राकेश शुक्ला ने किया।

- कार्यक्रम के तीसरे सत्र में, जाने-माने युवा साहित्यकार भगवान अनमोल और आकांक्षा पारे ने नए रचनाकारों

और युवाओं के लिए साहित्य में उपलब्ध संभावनाओं पर वार्ता की। इस सत्र का संचालन कहकशां के संस्थापक आनंद कक्कड़ ने किया।

- कार्यक्रम के चौथे सत्र में, युवा प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करने के लिए ओपन माइक कार्यक्रम रखा गया था जिसका संचालन पल्लवी गर्ग ने किया।

- कार्यक्रम के पांचवे सत्र में, जाने माने श्री अभिनेता राजेंद्र गुप्ता से सुप्रसिद्ध कवयित्री डॉ. भावना तिवारी ने चर्चा की। श्री राजेंद्र गुप्ता जी ने अपने जीवन के अनछुए पहलुओं पर बात की तथा कहानी और कविताओं का भी पाठ किया।

- कार्यक्रम का छठा सत्र जाने माने संगीतकार मदन मोहन को समर्पित रहा जिसमें आकाशवाणी की आरजे अर्चना और सारेगामापा के विजेता गोपाल शर्मा ने अपनी संगीतमय प्रस्तुति से सभी को ओत-प्रोत कर दिया।

- कार्यक्रम के सातवें सत्र में चर्चित वेब सीरीज 'पंचायत' के जाने माने किरदार 'विनोद' को निभाने वाले अभिनेता श्री अशोक पाठक ने अपनी जीवन यात्रा और संघर्षों पर वार्ता की। उनके छोटे-छोटे व्यंग्यों पर उपस्थित दर्शक गण लोट-पोट होते रहे।

- कार्यक्रम का आठवां एवं अंतिम सत्र कवि सम्मेलन पर आधारित था जिसमें देश के जाने माने कवि डॉ. विष्णु सक्सेना, अजय अंजाम, राहुल शर्मा, योगेश शुक्ला, आलोक बेजान और हेमंत पाण्डेय ने अपनी कविताओं से समां बांधा।

तत्पश्चात, प्रभारी प्रोफेसर राजभाषा प्रकोष्ठ डॉ. अर्क वर्मा द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ, गाथा महोत्सव-2024 का समापन हुआ।

कानपुर हैरिटेज: भ्रमण एवं सराहना

इतना तो हम जानते ही हैं कि कानपुर ऐतिहासिक महत्व का शहर है और यह औद्योगीकरण तथा स्वतंत्रता संग्राम संघर्ष की अनेक विरासतों को अपने में संजोए हुए हैं। हम परिसरवासी कानपुर में रहते हुए भी कानपुर की विरासत से अनभिज्ञ रह जाते हैं। अनेक कारणों से हम लोग चाह कर भी अपने आस-पास नही देख पाते। आईआईटी कानपुर ने 'एप्रोच सेल' के माध्यम से ऐसे ही अनछुए पहलुओं को छूने की दिशा में प्रयास प्रारंभ किया है। हमारे संस्थान के छात्रों एवं परिसरवासियों के लिए कानपुर शहर की कुछ ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, एवं कला के महत्व की धरोहरों को चिन्हित करके उन स्थानों के भ्रमण का कार्यक्रम 'एप्रोच सेल' ने शुरू किया है। कानपुर की एक स्वयंसेवक संस्था 'कानपुर पंचायत' इसमें सहयोग दे रही है।

भ्रमण के लिए तैयार बस

चौक कानपुर कोतवाली का भ्रमण

आवश्यकता

अक्सर हम आपस में, कानपुर में देखने-घूमने लायक जगहों की बात करते हैं। सवाल के जवाब में हम अपनी रुचि के हिसाब से कुछ स्थानों का नाम गिना देते हैं जैसे कि बिठूर, जेके परिसर स्थित मंदिर, चिड़ियाघर, गंगा बैराज, माल रोड और कुछ शॉपिंग मॉल या शायद अन्य जगह और बस। क्या कानपुर वाकई इतना सा है? और अगर इतना भी है तो उसके पीछे का इतिहास शायद हमें नहीं मालूम है, मालूम भी है तो वह आधा-अधूरा है।

सम्भवतः कानपुर की ऐतिहासिक भूमिका को इसके भवन निर्माण और स्थापत्य की दृष्टि से देखने से बेहतर ढंग से समझा जा सकता है। कानपुर के इतिहास में बहुत गहराई है।

संस्थान के विभिन्न वर्गों से बातचीत के आधार पर यह अनुभव किया गया कि परिसरवासियों में कानपुर शहर के बारे में जानने की जिज्ञासा और उत्सुकता है। इस उत्सुकता के अनेक कारण हैं जैसे कि कानपुर की औद्योगिक एवं सांस्कृतिक पहचान। ब्रिटिश काल में उद्योगों की स्थापना के साथ-साथ कानपुर में समाज के विभिन्न वर्गों की सांस्कृतिक छाप भी स्थापित हुई। ब्रिटिश काल में औद्योगिक इकाइयों की स्थापना के साथ ही भवन निर्माण की आधुनिक कलाओं का उपयोग भी कानपुर में हुआ। हम में से अनेक यह जिज्ञासा रखते हैं कि ब्रिटिश काल में और उसके बाद कानपुर में जो ऐतिहासिक घटनाएं होती थी वे किस प्रकार के माहौल में संपादित होती थीं। उस समय का भवन निर्माण, बाजार, सांस्कृतिक केंद्र तथा अन्य सामाजिक संस्थाएं किस प्रकार से कार्य करती थीं। यह भी उत्सुकता का विषय है कि उस समय की संस्थाएं वर्तमान समय में किस स्थिति में हैं तथा हम उनसे क्या सीख सकते हैं और भविष्य में हम इस संबंध में क्या करें कि हमारी सांस्कृतिक विरासत का संवर्धन एवं पोषण हो सके जिससे हम अपने इतिहास पर गौरवान्वित महसूस करें। समाज के अन्य व्यक्तियों को भी अपने गौरवपूर्ण इतिहास के बारे में गर्व से बताएं तथा सीख ले सकें, इस प्रयोजन के लिए एप्रोच सेल ने प्रोफसर समीर खांडेकर के दिशानिर्देश में कानपुर हैरिटेज भ्रमण का शुभारंभ किया ।

भ्रमण के स्रोत एवं सहयोग

कानपुर पंचायत एक स्वयं सेवी संस्था है जो विरासत के संवर्धन,

कानपुर पंचायत
साहित्य, इतिहास, पर्यटन, संस्कृति एवं संस्कार तथा विकास हेतु समर्पित संगठन
संयोजक/सचिव : धर्म प्रकाश गुप्त मो. 9336120164

संरक्षण एवं विस्तार के क्षेत्र में सामाजिक कार्य कर रही है। कानपुर पंचायत के श्री धर्मप्रकाश गुप्त जी एवं एप्रोच सेल के सदस्य श्री सीएस गोस्वामी इस भ्रमण के साथ रहते हैं और भ्रमण करने वाली टीम को स्थानीय इमारतों एवं उनके ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से अवगत करवाते हैं। श्री गुप्त पिछले 10 वर्षों से भी अधिक समय से कानपुर की पारंपरिक विरासत एवं

Approach
Appreciation and Promotion of Art, Culture and Heritage
Indian Institute of Technology, Kanpur

Kanpur City Heritage Tour

ऐतिहासिक धरोहरों के संरक्षण एवं संवर्धन के क्षेत्र में सराहनीय कार्य कर रहे हैं। एप्रोच सेल के आग्रह पर उन्होंने कानपुर हेरिटेज भ्रमण में सहायता करने के लिए सहमति प्रदान की तथा इस भ्रमण में अपना भरपूर सहयोग दे रहे हैं।

पंजीकरण विधिः

आगामी भ्रमण की सूचना एप्रोच सेल ई-मेल द्वारा (to all mail list@iitk.ac.in) पर भेजी जाएगी, तत्पश्चात पंजीकरण प्रक्रिया प्रारम्भ होगी। पंजीकरण एप्रोच सेल की वेबसाइट (https://www.iitk.ac.in/approach/index.php) पर जाकर किया जा सकता है। पंजीकरण करने के लिए मामूली सी फीस रखी गई है, जो बस के किराए तथा हल्के जलपान के लिए रखी गई है, इसके अलावा और कोई अन्य शुल्क नहीं रखा गया है। फीस जमा करने के बाद पंजीकरण हो जाता है तथा पंजीकृत व्यक्ति को ईमेल के माध्यम से कार्यक्रम की सूचना दी जाती है। वर्तमान में प्रतिभागियों की संख्या को 40 तक ही सीमित रखा गया है। 40 प्रतिभागियों का पंजीकरण होने के पश्चात ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन का लिंक स्वयं बंद हो जाता है। ऑनलाइन लिंक खुलने की जानकारी मेल लिस्ट पर सभी को भेजी जाती है तथा इच्छुक प्रतिभागी 'पहले आओ पहले पाओ' के आधार पर रजिस्ट्रेशन करके इस सुविधा का लाभ उठा सकते हैं। यदि कोई प्रतिभागी किसी कारणवश भ्रमण पर जाने में असमर्थ है तो वह अगले टूर को चुन सकते हैं, या फीस वापस ले सकते हैं, दोनों ही विकल्प उपलब्ध हैं।

प्रयास

जैसा कि पहले बता चुके हैं कि कानपुर की विरासत को जीवंत बनाए रखने के लिए अनेक व्यक्तियों तथा संस्थाओं द्वारा प्रयास किये जा रहे हैं ताकि हमारी विरासत, आने वाली पीढ़ियों तक अपना उद्देश्यपूर्ण अर्थ स्थानांतरित कर सके। कानपुर पंचायत एक ऐसी ही संस्था है जो कानपुर की विरासत एवं इसके इतिहास को समाज के विभिन्न वर्गों तक पहुंचाने का सार्थक प्रयास अनेक वर्षों से करती चली आ रही है। एप्रोच टीम ने कानपुर पंचायत से संपर्क करके कानपुर की विरासत एवं वास्तुशिल्प से निर्मित भवनों के भ्रमण के लिए एक कार्य योजना बनाई जिसमें इच्छुक परिसरवासी कानपुर शहर के प्रमुख स्थानों

तिलक हॉल में प्रवेश करता दल

का भ्रमण कर सकें। प्रोफेसर शतरूपा राय के निर्देशन में कला, संस्कृति व स्थापत्य की नजर से खास जगहों की निशानदेही की गई। प्रयोग के तौर पर संस्थान के लगभग 40 परिसरवासियों को कानपुर शहर की कुछ प्रमुख ऐतिहासिक महत्व की इमारत तथा उसके इतिहास से परिचित कराया गया। यह कार्यक्रम दिनांक 5 नवम्बर एवं 19 नवम्बर 2023, दिन रविवार को सुबह 07:00 बजे से 11:00 बजे के बीच रखा गया था।

सुबह का समय इसलिए रखा गया है कि उस समय तक बाजार नहीं खुलते हैं तथा शहर की संकरी गलियों में भीड़-भाड़ नहीं होती तथा शहर के उस इलाके को तसल्ली और नजदीक से समझा जा सकता है। कार्यक्रम समापन के उपरांत प्रतिभागियों को सतत शिक्षा केन्द्र आईआईटी कानपुर द्वारा प्रमाण पत्र भी प्रदान किया जाता है।

इस कार्यक्रम को प्रारंभ करने का उद्देश्य परिसरवासियों को केवल कानपुर शहर की स्थापत्य कला भवन निर्माण शैली एवं वास्तु शैली से परिचित करवाना ही नहीं है वरन् कानपुर क्षेत्र में पर्यटन की संभावनाओं को देखना है जिसमें रोजगार तथा शोध के अवसर भी हो सकते हैं।

चौक कानपुर कोतवाली का भ्रमण

प्रयोग के आधार पर प्रारंभ किए गए कार्यक्रम पर परिसरवासियों के महत्वपूर्ण विचारों से अनुमान लगता है कि यह प्रयास सार्थक रहा और विरासत तथा कला के प्रति लोगों की उत्सुकता के

अनुरूप ही है। प्रतिभागियों ने इस बात की स्वीकारोक्ति भी प्रकट की है कि हमारी रुचि और अधिक स्थानों पर जाकर कानपुर की कला, विरासत, स्थापत्य शैली एवं प्राचीन इमारतें और उनकी कारीगरी को देखने में भी है।

पुराने कानपुर शहर की गलियों व निर्माण कार्य को देखते हुए कानपुर परिसरवासियों की टीम को देखकर कानपुर शहर के लोग भी बहुत उत्साहित थे। स्थानीय लोगों को ऐसा लगा कि यह पर्यटन दल है, इसलिए लोगों ने बार-बार बीच में रोक कर यह जानना चाहा कि यह पर्टयन टीम कहां से और यहां पर किस उद्देश्य से आई है। जब हमने स्थानीय लोगों को अपने आगमन का प्रयोजन बताया तो वह लोग उत्साहित होकर स्थानीय जानकारी देने को उत्सुक हुए और कहा कि कानपुर शहर में पर्यटन की बहुत संभावनाएं हैं एवं साथ ही साथ कानपुर की प्राचीन धरोहर को देखने का इस तरीके का प्रयास, कानपुर के लिए बहुत लाभप्रद होगा जिसमें पर्यटन की बढ़ती हुई संभावनाएं भी देखी जा सकती हैं। इस तरह के अनछुए पहलुओं को देखने का यह एक नवीन प्रयोग है तथा इस प्रयोग की सार्थकता, कार्यक्रम की सीमा को विस्तार करके किया जा सकता है।

तिलक हाल की इमारत

इमारतों की सजावटी का नमूना

गया प्रसाद लाईब्रेरी

जेके ग्रुप की इमारत

शुरूआत में कानपुर कोतवाली का ऐतिहासिक भवन देखने के पश्चात टीम एकदम हतप्रभ रह गई कि इतनी पहले की बनी हुई इमारत मजबूत और स्थापत्य कला पूर्ण शैली से निर्मित की गई है तथा आज भी वह इस बुलंदी के साथ खड़ी हुई अपने इतिहास की कारीगरी को बयां करती हुई नजर आ रही है।

कानपुर कोतवाली के निकट वाली गली अन्दर जाकर भारतीय स्वतंत्रता संग्राम आंदोलन में प्रमुखता से भूमिका निभाने वाले बाल गंगाधर तिलक के नाम पर बने हुए 'तिलक भवन' की कारीगरी देखने लायक है, टीम ने उस समय की बनी हुई इमारत को देखा और निहारते ही रह गए जिसमें भारतीय स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की उपस्थिति में, उस समय के माहौल की कल्पना जागृत हो उठी। महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू, बाल गंगाधर तिलक और न जाने कितने ही स्वतंत्रता सेनानी यहां पर मीटिंग करके स्वतंत्रता संग्राम की रणनीति बनाते रहे होंगे। तिलक हाल की दीवारों पर लिखे हुए स्लोगन आज भी अंकित है जो उत्सुकता का केन्द्र रहे और परिसरवासियों की टीम ने नजदीक से जाकर उसके तमाम फोटोग्राफ्स अपने मोबाइल फोन और कैमरे की सहायता से कैद किये और उसके बारे में बहुत देर तक बातें करते रहे कि किस तरह से स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों ने नारे दिए और उन नारों को दीवारों पर भी कलापूर्ण ढंग से लिखवाया और उन नारों से ही प्रेरणा लेते हुए हजारों स्वतंत्रता संग्राम सेनानी उस उद्देश्य के लिए एकजुट होकर संघर्ष करते हुए भारत की स्वतंत्रता में अपना योगदान देते रहे। भवन की दीवार पर आज भी "स्वतंत्रता मेरा परम सिद्ध अधिकार है" का स्लोगन सीमेंट की कारीगरी के साथ में लिखा हुआ है और आज भी ज्यों का त्यों बरकरार एवं संरक्षित है, और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम संघर्ष की यादों को तुरंत ही मन में तरोताजा करता है, एवं उस समय की कला के विकास को भी दर्शाता है।

कानपुर के औद्योगीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले जेके ग्रुप की ऐतिहासिक इमारत जो कमला टावर के नाम से प्रसिद्ध है, उसकी खूबसूरती देखते ही बनती है, जिसमें उस समय की एक लिफ्ट भी लगी हुई है जो संभवतः कानपुर की पहली लिफ्ट मानी जाती है। सीमेंट के साथ चुनवाई हुई ईंटों के द्वारा बनी हुई यह लिफ्ट की इमारत भी देखने योग्य है, जो बिना मरम्मत के आज भी लगभग 100 वर्ष के उपरांत जस की तस सीना ताने खड़ी हुई है, और अपनी मजबूती को बयां कर रही है। कमला टावर की मजबूत इमारत एवं कारीगरी देखते ही बनती है तथा मन उसे देखते ही रहने का मन करता है। इसके ठीक सामने जेके समूह का आवास है जिसमें उस

समय की अर्थव्यवस्था में बैंकपति की भूमिका में अनेक स्थानीय व्यापारियों को बैंकर्स के रूप में समझा जाता था तथा वह गली, बैंकर्स गली के नाम से तथा मोहल्ला बैंकर्स मोहल्ले के नाम से जाना जाता है जिसमें बड़े-बड़े उद्योगपति बैंकर्स का दायित्व निभाते थे।

कानपुर शहर की इस पुरानी गली में स्थापत्य कला की दृष्टि से बने हुए अनेक भवन भी विद्यमान है जिनकी खूबसूरती व नक्काशी देखने योग्य है और दशकों गुजर जाने के पश्चात भी वे इमारतें आज भी मजबूती के साथ खड़ी हुई हैं।

इमारत का निर्माण छोटी ईंटों से किया गया है, इन छोटी ईंटों से बनी इमारतें देखने में बहुत खूबसूरत लगती है और मजबूत भी होती हैं। दीवारों की मोटाई अपेक्षाकृत वर्तमान की चार इंच मोटी दीवार के मुकाबले कई गुना होती है। दीवार की मोटाई 2 फुट या उससे अधिक भी देखी गई है। छोटी ईंटों को चूने-मिट्टी के साथ मिलाकर दीवार बनाई जाती थी और अधिक मोटाई के कारण सर्दी और गर्मी का प्रभाव कमरे के अंदर कम होता है। दरवाजे और बैठक मेहराबनुमा आकार के हैं जो बिना लिंटर के ईंटों को आपस में जोड़कर बनाई जाती थी और कारीगरी का एक बेजोड़ नमूना था। यह उस समय के निर्माण में बहुत ही भरोसेमंद था। दरवाजे खिड़कियों और दलान में नक्काशी साफ दिखाई देती है। दरवाजे की चौखटें मजबूत इमारती लकड़ी की बनी हुई है जिसके ऊपर मीनाकारी भी कई जगह पर देखी गई। घर के दरवाजों के बाहर और दीवारों के आसपास सजावट के लिए अनेक प्रकार के नमूने प्रचलन में थे जिनके अंश अभी भी इन पुराने भवनों पर देखे जा सकते हैं कि लोग अपने घरों की सजावट बहुत ही अच्छे ढंग से किया करते थे।

प्रतिभागियों की प्रतिक्रिया

सीमित संसाधन क्षमता के कारण यह कार्यक्रम अभी प्रयोग के तौर पर चलाया जा रहा है । एप्रोच सेल की वेबसाइट पर ऑनलाइन लिंक खुलते ही तुरंत भर गया तथा हम अधिक प्रतिभागियों को सम्मिलित नहीं कर सके क्योंकि सीमा निश्चित थी, लोगों की शिकायत रही।

हेरिटेज टूर करने पर छात्र तो उत्साहित थे ही, साथ ही संस्थान के परिसरवासी भी पुराने कानपुर को देखकर हतप्रभ रह गए और वह अवाक् रूप से कह उठे कि 'अरे हमें कानपुर में रहते हुए अनेकों साल हो गए और इन जगहों के बारे में हमें पता ही नहीं था कि कानपुर में इतनी अद्भुत इमारतें भी विद्यमान हैं। यह पहल, पहले क्यों नहीं की गई, हम तो इससे अछूते ही रह जाते। यह तो बहुत ही महत्वपूर्ण विरासत है जिसे सभी को देखना चाहिए, साथ ही इस प्रयास को कानपुर के अन्य क्षेत्र तक भी विस्तारित करें ताकि कानपुर की विरासत के बारे में और अधिक जाना जा सके।'

इस सामाजिक पहल में सहयोग एवं कार्यक्रम के सफल संचालन के लिए आईआईटी कानपुर प्रशासन का विशेष आभार है।

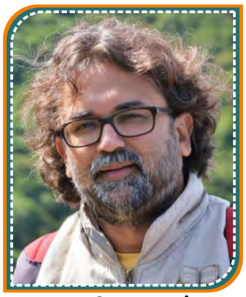

डॉ. समीर खांडेकर

डॉ. शतरूपा राय

डॉ. ललित सारस्वत

डॉ. सीएस गोस्वामी

श्री मनीष खरवार

श्री घनश्याम प्रशांत वैंडेश्कर

एप्रोच सेल समिति सदस्य

https://www.iitk.ac.in@approach@index.php

मच्चित्ता मद्गतप्राणा बोधयन्तः परस्परम्।
कथयन्तश्च मां नित्यं तुष्यन्ति च रमन्ति च।।
(श्रीमद्भगवद्गीताः 10:09)

भावार्थ

मेरे शुद्धभक्तों के विचार मुझमें वास करते हैं, उनके जीवन मेरी सेवा में अर्पित रहते हैं और वे एक दूसरे को ज्ञान प्रदान करते तथा मेरे विषय में बातें करते हुए परम सन्तोष तथा आनन्द का अनुभव करते हैं।

साहित्य-यात्रा

मैं और बच्चे

एक अजीब सा रिश्ता रहा है मेरा बच्चों के साथ। एक तरफ बच्चे और उनका व्यवहार मुझे चकित करता है और दूसरी तरफ प्रेरित भी करता है। यहाँ पर बच्चों से तात्पर्य है; दस साल या उससे नीचे की जनसंख्या। ये वो लोग हैं जो एक तरफ आश्रित जनसंख्या में रखे जातें हैं और दूसरी तरफ वो अपनी मर्जी के मालिक होते हैं और बड़े-बड़ों को अपनी उँगलियों पर नचाते हैं। वास्तव में बच्चों को लेकर मैं बहुत ज्यादा भावुक नहीं हूँ पर छोटे बच्चों को लेकर मेरे मन में प्रेम और जिज्ञासा का एक अद्‌भुत मिश्रण है। बच्चों के बड़ों के साथ रिश्ते और उनका व्यवहार मुझे प्रायः ही चकित करता रहता है। उनका रिश्ता उनके माँ बाप से हो या फिर उनके दादा–दादी, नाना–नानी से, या फिर उनके खुद के दोस्तों से। यहाँ तक कि अनजानों के साथ भी वो एक पल में रिश्ता बना लेते हैं। कभी किसी दुकान पर बच्चे को अपनी माँ के साथ किसी चीज़ को खरीदने के लिए ज़िद करते देखा है? उनके तर्क सुन के तो बस हँसी ही आ जाती है, जबकि इस बच्चे से तो पहले मिले भी नही। एक प्यारा सा बच्चा जब बस में खड़े–खड़े आप पर मुस्कुरा भर दे, तो लगता है जैसे गर्म लू पुरवाई में बदल गयी।

माँ और बच्चे की भावनाओं का व्याख्यान तो बहुत से कवि और लेखक सदियों से बखूबी करते आ रहे हैं। इतिवृत साक्षी है कि ये भावना समय के साथ केवल दृढ़ ही हुई है। फेरबदल की उम्मीदें कम हैं। मैंने इस भावना का अनुभव तब किया जब मेरा खुद का बच्चा होने को था, और यकीन मानिए मैंने महसूस किया कि मेरे अंदर शरीर के साथ–साथ मानसिक बदलाव भी हो रहे हैं। मुझे छत के किनारे पर जाने से डर लगने लगा था, अगर गिर गयी तो, और कार की आगे की सीट पर बैठे हुए सामने से आती हुई गाड़ियों को देख कर लगता था कि वो मुझसे टकरा ही जाएँगी। ये तो तब की बात है जब बच्चा आया भी नहीं था। मुझे पता भी नहीं था कि वो है कौन? एक अलग सा ही रिश्ता बन गया था जिसको न जानते हुए भी, बस उसको अपनी जान की परवाह न करते हुए, सिर्फ संजों के रखने का मन करता था। खुद पर गुस्सा भी आने लगा था, कि मैं इतनी डरपोक कैसे हो गयी। ये तो बाद में पता चला कि प्रकृति मुझे तैयार कर रही है माँ बनने के लिए। मेरी संवेदनशीलता कई गुना बढ़ चुकी थी जिसका मुझे भी अंदाजा नहीं था, और भावनाओं का रोलर कोस्टर शुरू हुआ बच्चा आने के बाद। एक तरफ तो थकान और दूसरी तरफ यदि कोई सिर्फ मेरी सहायता करने की भावना से उसे गोद में भी लेता था तो मेरा मन ईर्ष्या से भर उठता था। पर, क्योंकि मैं अपने आपको पढ़ी लिखी और परिपक्व समझती हूँ तो मैंने अपनी भावनाओं को काबू में किया और आगे की जिंदगी अपने बच्चे के साथ बढ़ानी शुरू की। कभी वो मेरा दिल बहलाता था और कभी उसकी प्यारी–प्यारी बातें भी क्रुद्ध कर देती थीं क्योंकि उस समय मैं कोई और काम कर रही होती थी। जैसे–जैसे वो बढ़ रहा था मेरी जिज्ञासाएं भी उसको लेकर बढ़ती जा रही थीं। अनेक प्रकार के प्रश्न आ रहे थे; जैसे कि बच्चे से किस भाषा में बात किया जाए जिससे कि उसको समझ में आए। मेरे कुछ बोलने पर वो कैसे समझता होगा क्योंकि जिन शब्दों का प्रयोग मैं करती हूँ वो तो उसके शब्दकोश में हैं ही नहीं। पर, क्योंकि मैं अपने आपको पढ़ी–लिखी और परिपक्व समझती हूँ तो कुछ किताबों की मान कर मैंने उसके छोटे–छोटे प्रयासों को सराहना शुरू किया। जैसे अगर वो अपनी पानी की बोतल का ढक्कन स्वयं खोल ले तो मैं उसको प्रोत्साहित करने के लिए बोलती थी "अरे वाह!! तालियां....! ", और एक बार उसका डायपर जो बहुत समय से बदला नहीं गया था और स्पष्ट कारणों से भारी हो चुका गया था, मेरे उसको उठाते ही मुँह से निकल गया "बाप रे बाप"। कुछ ही दिनों में मेरी जिज्ञासा शांत हो गयी कि बच्चो में भाषा का विकास कैसे होता है, जब मैंने उसे अपने पिता के साथ बोलते सुना। वो बोतल का ढक्कन खोल के दिखा रहा था और बोल रहा था पापा "अरे वाह! तालियां", और एक दिन वह अपने ही डायपर को खोलने का इशारा कर रहा था और कह रहा था, पापा इसे खोल दो ये 'बाप रे बाप' हो गया है।

मेरे लिए ये घटनायें एक महान सीख का स्त्रोत बनी। मुझे समझ में आ चुका था कि अपने शब्दों का प्रयोग मुझे अपने ही घर में बहुत सोच–समझकर करना होगा जैसे–जैसे वह बढ़ रहा था मुझे बहुत सी और चीजें समझ आ रही थीं। हमेशा लोगों से सुना था, बच्चे बड़े शैतान होते हैं पर किसी ने ये नहीं बताया कि एक 4 साल का बच्चा भी सम्मान की अपेक्षा रखता है। लोगों से सुना

था कि बच्चे बड़े जिज्ञासु होते हैं पर किसी ने नहीं बताया कि वो केवल प्रश्न ही करते हैं, जरूरी नहीं है कि वो उन प्रश्नों का उत्तर ढूंढ ही रहे हों।

वह- माँ ये लाल गाड़ी किसकी है?

मैं- ये!!, ये तो उस घर के अंदर खड़ी है ना (मान लिया कि बाकी वह खुद समझ जाएगा कि गाड़ी उन घर के लोगों की है)

''अच्छा" फिर थोड़ी देर में

वह- माँ ये गाड़ी किसकी है?'', मैं थोड़ा चिढ़ कर ''अरे बेटा ये किसी का घर है ना उन्ही की होगी"

वह- अच्छा .... माँ ये गाड़ी किसकी है?

मैं थोड़ा सोचने के बाद- ये जो घर देख रहे हो जिसमें ये गाड़ी खड़ी है, उस घर में एक अंकल रहते हैं ये गाड़ी उनकी है।

वह- अच्छा वो अंकल से क्या तुम बोल सकती हो कि मुझे वो गाड़ी दे दें।

मैं- अच्छा ठीक है कल कोशिश करुँगी।

बच्चे मन के साफ़ होते है और और बड़े ही निश्छल भाव से गपशप भी करते हैं। "माँ ये दीदी कितना झूठ बोलती है, मेरे दोस्त की दीदी को बोला कि वो यहाँ पर खाना बनाती हैं पर वो तो यहाँ सफाई का काम करती हैं ना।''

बच्चे शारीरिक चोट और मानसिक चोट के मध्य अंतर नहीं कर पाते। एक और वाक्या सुनिए, जैसे एक दिन दुकान पर

वह- माँ चॉकलेट खरीद दो।

मैं- पैसे नहीं है

वह- तो मेरा क्रेडिट कार्ड ले लो।

मैं- तुम्हारे पास क्रेडिट कार्ड कहाँ से आया?

वह- पापा ने ही तो दिया था पिछले हफ्ते, उसकी वैलिडिटी खतम हो गयी थी ना।

मैं- पर अगर ये वैलिड नहीं है तो फिर चलेगा कैसे?

वह- हाँ, हाँ मुझे पता है तुम चॉकलेट दिलाना नहीं चाहती इसलिए बहाने बना रही हो।

मेरे बोलते ही कि बेटा जिद मत करो, क्या बड़े-बड़े आंसू यूँ बह निकले जैसे किसी ने एक चमाट ही लगा दी हो। अच्छा ठीक है ड्रामा मत करो, मैं दिला देती हूँ।

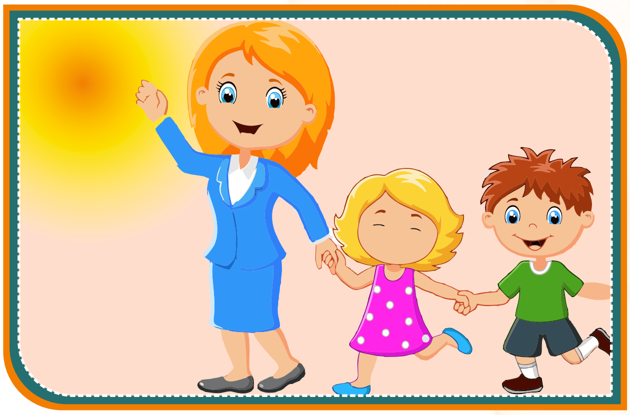

रुकिए, रुकिए जल्दी ही निष्कर्ष मत निकालिएगा, ये मानसिक चोट पहली बार की हो सकती है, पर, दूसरी बार और आगे कई बार मेरे बेटे ने ये बड़े–बड़े आंसू दिखा कर ना जाने कितनी बार और चॉकलेट खायी। आप भी आश्चर्य चकित हो जाएंगे कि वाह! इन्होने तो मनोविज्ञान पढ़ा भी नहीं, पर विश्लेषण तो अव्वल दर्ज़े का है। मुझे मेरे बेटे के प्रतिरूप समझने में देर लगी पर उसने मुझे पहले ही समझ लिया। जब तक मैं समझती शायद उसने मेरे दूसरे प्रतिरूप समझने शुरू कर दिए होंगे।

आज मेरे बेटे के साथ मुझे दस साल का व्यावहारिक अनुभव हो चुका है । इसके बाद मुझे लगा कि मैं और कई बच्चों को समझ सकती हूँ और मेरी यही समझ मुझे शायद और बच्चों को पढ़ने और पढ़ाने में सहायता करे। इस भावना के साथ, मैंने अपने पड़ोस के ही एक स्कूल में स्वैच्छिक रूप से काम करना शुरू कर दिया। सोचा कि बच्चों को कुछ सिखा पाऊं या नहीं, पर मैं जरूर कुछ ना कुछ सीख कर निकलूंगी और सच मानिए, यहाँ पर मैं गलत नहीं थी। मैंने थोड़ा बहुत नहीं, बहुत कुछ सीखा। यह सीखा कि वयस्कों की भांति ही बच्चों के भी अलग–अलग व्यक्तित्व होते हैं। छोटे बच्चों को अक्सर हम अपने मनोरंजन के खिलौने की तरह व्यवहार करते हैं और उनसे सम्मान की उम्मीद रखते हैं, पर उनके अनुसार सम्मान एक लेन-देन की भांति है। एक हाथ लें और दूसरे हाथ दें, फिर चाहे वह बच्चा हो या बड़ा। अनेक स्थितियों में तो हमें सम्मान कमाना भी पड़ता है। बच्चे जिसे प्यार करते हैं उसकी हर अच्छी-बुरी आदत की नक़ल करते हैं, इसलिए माँ बाप और स्कूल के अध्यापक/अध्यापिकाओं की जिम्मेवारी सर्वोपरि है। आपका पढ़ाया चाहे याद रहे, या ना रहे, पर आपका व्यवहार और आपकी आदतें सालों-साल बच्चों के व्यक्तित्व का हिस्सा बनेंगी।

–डॉ. आकांक्षा द्विवेदी
सी–3 आई हब
भा.प्रौ.सं. कानपुर

सरल भाषा-सफल प्रौद्योगिकी
(जीवन, भाषा और प्रौद्योगिकी)

शायद एक समय रहा होगा, जब मानव जीवन में भाषा का प्रादुर्भाव हुआ होगा और जीवन को एक सामाजिक संबंधों में अपनी पैठ बनाने का मौका मिला होगा, परन्तु अब ये उस स्तर तक पहुंचा लगता है जब कुछ एक भाषाओं के वर्चस्व ने शायद मानवता के विकास के प्रभाव को संकुचित करना प्रारंभ कर दिया है। चलिए, इसे थोड़ा समझने की कोशिश करते हैं।

जब मनुष्य ने अपनी आधारभूत आवश्यकताओं से आगे बढ़कर भी चीजों को अपने जीवन में सम्मिलित करना प्रारम्भ किया होगा, वो उसका आधुनिक समाज की तरफ पहला कदम रहा होगा। उस समय उसकी सम-सामयिक आवश्यकताओं को पूरा करने को उसने चीजों को सरलतम बनाने का प्रयास किया होगा और इसी श्रेणी में उसने कई आविष्कार किये होगें जो प्रौद्यौगिकी की पहली सीढ़ी हो शायद- जैसे कि पत्थरों से बनी नुकीली चीज को जानवरों के शिकार के लिए प्रयोग में लाना, या फिर वनों में लगने वाली आग को दो पत्थर के टुकड़ों से पैदा करना, या स्थायी छप्परों का निर्माण, या फिर एक नियत क्षेत्र में नियत फसल को उगाकर एक नई भोजन प्रणाली को विकसित करना..

ये सारे प्रौद्योगिकीय विकास मानव जीवन में बहुत ही महत्वपूर्ण माने जाते हैं, और इनको सीखा जाना, अगली पीढ़ी तक पहुँचाना और आगे विकसित करना-क्या किसी भाषाई प्रवृत्ति का दास रहा? मुझे लगता है नहीं। फिर अचानक, से ऐसा कैसे हो गया कि प्रौद्योगिकी को सीखने के लिए, जानने के लिए प्रयोग करने लिए और आगे विकसित करने के लिए एक विशेष भाषा का ज्ञान प्रौद्योगिकी के अपने ज्ञान से भी ज्यादा आवश्यक हो गया है?

हाँ! आप सही सोच रहे हैं, मैं खासकर अंग्रेजी भाषा की प्राथमिकता-प्रौद्योगिकी को सीखने, जानने और आगे बढ़ाने को लेकर होने वाले शैक्षिक अलाप की बात कर रहा हूँ।

क्या जब प्रौद्योगिकी का प्रारम्भिक विकास हुआ तो यह भाषा या यूँ कहें कि किसी भी भाषा का होना उतना आवश्यक था जितना की जरूरत का होना, जरूरत को पहचानना और जरूरत को पूरा करने का प्रयत्न करना है, तो उत्तर होगा-नहीं, तो अब क्यों?

इस बात को लेकर एक अच्छा तर्क हो सकता है कि एक भाषा और उसमें अंकित किये गये साक्ष्य, तरीके, प्रकार, प्रौद्योगिकी के

विकास को सहज और संपन्न बना सकती हैं और इसलिए भाषा का होना आवश्यक है, और यह तर्क सही भी प्रतीत होता है। तो जबकि, यह कि भाषा केवल प्रौद्योगिकी को सहज और सरल तरीके से ज्यादा गति से आगे बढ़ाने का साधन मात्र है तो ऐसा क्यों ना किया जाये कि प्रयोग होने वाली भाषा भी स्वयं में सहज और सरल हो, और जब बात सहजता और सरलता की हो तो मातृभाषा से सहज क्या ही हो सकता है!

अतः सफल प्रौद्योगिकी हेतु सरल भाषा का होना ज्यादा प्रभावशाली लगता है, और जैसा कि इस सरलता के पैमाने पर मातृभाषा ही अग्रणी बैठती है, अतः यह कहना अतिश्योक्ति न होगा कि मातृभाषा में सीखी गई प्रौद्योगिकी, सफलता की कुंजी साबित हो सकती है। इस बात पर कुछ तर्क हो सकते हैं कि क्या जो नियम प्रयोग कहीं और विकसित हुए हों, उन्हें किसी और स्थान की मातृभाषा में सिखाना आसान होगा? तो एक तर्क यह भी हो सकता है कि क्या एक विशेष स्थान के लिए विकसित प्रौद्योगिकी को किसी और स्थान पर थोपना सही है? और क्या ऐसा करने से अधिकतर हानि होने की आशंका नहीं रहती-तो उत्तर होगा हाँ! फिर भी हम ऐसा करते आ रहे हैं- पश्चिमी देशों की विकसित प्रौद्योगिकी पूर्वी देशों में किसी तरह "फिट" करने की कवायद तो हमेशा से होती रही है, और केवल इस नाम पर कि कहीं से शुरू करना है..।

बैठे नहीं रह सकते.. थोड़ी हानि और कुछ लाभ वास्तविकता है तो क्यों ना मातृभाषा में प्रौद्योगिकी सिखाने पर बल दिया जाए शुरू में कुछ हानि.. जैसे कि विकास की गति थोड़ी धीमी हो सकती है.. परन्तु, बाद में अच्छे परिणाम मिल जाने की पूरी सम्भावना।

अतएव... इस जीवन भाषा और प्रौद्योगिकी के चक्र में-भाषा पर निर्णय-प्रौद्योगिकी को सहजता से सिखाने के अनुसार होना चाहिए। आप भी इस पर सोचे.. विचार कुछ भी हो-एक शुरूआत तो हो।

–डॉ. संतोष कुमार मिश्र 'केशवेन्दु'
बी.एस.बी.ई.
भा.प्रौ.सं. कानपुर

जल बचाएं जीवन बचाएं

"रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरे, मोती मानुष चून।"

अगली पीढ़ी को पानी और शुद्ध हवा की अमूल्य संपत्ति देकर उनका जीवन बचाएं।

पृथ्वी माँ और पर्यावरण को बचाने के लिए हम अपनी दैनिक जीवनशैली के द्वारा पर्यावरण के प्रति एक अभूतपूर्व योगदान दे सकते है।

1. खुले वातावरण में सोना- इससे हम प्रकृति के अधिक करीब रह पाने में सफल होगें, तथा एसी द्वारा विद्युत खपत कम करके ग्रीन हाउस गैसों के प्रभाव को कम कर पाने में भी मदद कर पायेंगे।

2. रिंकल्स अच्छे होते है- हम कार्यालय या घर में कभी-कभी बिना प्रेस के कपड़े पहन कर उपकरण द्वारा प्रयुक्त होने वाली बिजली खपत कम करने में मदद कर सकते हैं।

3. पैदल चलें और शरीर को स्वस्थ रखे- पैदल चलकर हम अपने पर्यावरण को शुद्ध तथा शरीर को स्वस्थ्य रखने में मदद कर सकते हैं।

4. आरओ उपकरण से निकलने वाले अनुप्रयुक्त जल का संचयन- जल संशोधन के दौरान निकलने वाले जल को पेडों तथा वाशरूम में उपयोग कर पानी की बचत करने में मदद कर सकते हैं।

5. बेसिन से निकलने वाले जल का संचयन- बेसिन की पाइप को फ्लश वाटर टैंक से जोड़ कर फ्लश में प्रयुक्त होने वाले पानी की जगह प्रयोग कर सकते हैं।

6. लीकेज के द्वारा पानी के बर्बादी को रोककर लीकेज को हम समय-समय पर ठीक करते रहें, जिससे कि पानी के व्यर्थ बहाव को रोका जा सके।

7. जितनी प्यास उतना पानी- कार्यालय तथा घर में पीने का पानी आवश्यकतानुसार ही लेना चाहिए। जिससे कि पानी को व्यर्थ न फेंका जाए तथा शेष बचे हुए पानी को पौधों में प्रयोग करना चाहिए।

8. धुलाई के समय अनावश्यक पानी को बर्बादी को रोकना- घरों में सीधे नल के द्वारा बर्तनों की धुलाई करते समय अनावश्यक पानी बहता रहता है, इसलिए बाल्टी/ टब में पानी भर कर उस पानी से बर्तन धोएं, पानी भी बचेगा और बर्तन भी चमकेगा।

9. वर्षा जल संचयन द्वारा बारिश के पानी को इकट्ठा कर उस जल का उपयोग कई प्रकार के कामों में किया जा सकता है।

–क्षमा जायसवाल
अधीक्षक, डोसा कार्यालय
भा.प्रौ.सं. कानपुर

पेड़ और पत्ते

आकार, प्रकार और विन्यास, नहीं होते हैं ये अनायास।
जैसा होता है उनका पेड़, जो जो सहता है उनका पेड़।
उसी के मुवाफिक बन जाते हैं, वैसे ही रंग में रंग जाते हैं।
पत्ते होते तो हैं अलग थलग से, पर पेड़ों की चुगली कर जाते हैं।।

पढ़ लेते हैं बहार का मौसम, चुग लेते हैं अंदर का कुछ-सब।
बना देते हैं पेड़ का खाना, और देखते रहते हैं पंछियो का आना जाना।
बहुत कुछ रहता है समान, पर कुछ कुछ अलग कर जाते हैं।
पत्ते होते तो हैं अलग थलग से, पर पेड़ों की चुगली कर जाते हैं।।

अगर दिखना है स्वस्थ, और लुभाना हर अक्स।
अगर बनाना है नाम, और भुलाना हर जख्म।
अगर रहना हर मौसम में जैसे बासंती सख्स।
तो पत्तों की शिकायत छोड़ो, करो पेड़ों पे प्रयत्न।
फिर देखो पत्ते कैसे बढ़ पाते हैं, और पेड़ों को भी स्वस्थ कर जाते हैं।
सच्चाई तो यह है कि संस्थान और विद्यार्थी भी कुछ ऐसा ही दृश्य दिखाते हैं।।

–डॉ. संतोष कुमार मिश्र 'केशवेन्दु'
बी.एस.बी.ई.
भा.प्रौ.सं. कानपुर

मोड़

एक दिन चला था मैं सफर पर, मेहमानों की तरह;
साथ लिए था अपना साया, अरमानों की तरह;
अचानक एक मोड़ पर, घटना एक घटी;
और बिछड़ गया अपना ही साया, किन्ही बेगानो की तरह;
एक दिन चला था मैं सफर पर.........

मंजिल पाने के लिए, जाना था सीधे रास्ते पर;
जीवन की अंधेरी रात, और तूफानों ने दिया उसे मुझसे अलग कर;
मुड़कर गलत रास्ते, विचल गया था वो मनमानो की तरह;
एक दिन चला था मैं सफर पर.........

चल ना सका बिछड़कर एक कदम भी, मैं आगे उस मोड़ से;
लाने गया फिर उसको वापिस, मैं दूसरे छोर से;
जानता हूँ खुश नहीं है, वो भी इन राहों से;
मैं भी पीछा करता रहा, डरा नही बाधाओं से;
जाने कौन बला है जो, उसे आगे कर देती है इन फिजाओं से;
कदमों की आहट सुनता रहता था उसकी, पर कभी पकड़ ना पाया था;
आज थक हार कर मैं, फिर उसी मोड़ पर आया था;
पर ज़िद है मेरी, नही चलूंगा तेरे वापिस आने तक;
और खड़ा रहूंगा यहीं, स्थिर आसमानों की तरह;
एक दिन में चला था सफर पर.........

—डॉ. सुनील सिंहमार
नेशनल पोस्ट डॉक्टोरल फेलो
भा.प्रौ.सं. कानपुर

साहस-विद्यार्थी का धन

काँटों से भरी हो ये डगर,
साथ मेरे सदा रहता है तू मगर।
जीते रण कितने झुका कर कितनों का दुस्साहस,
सदैव साथ रहा ये मेरा यह साहस।।

समय बदलने पर प्रीति नहीं बदलती,
विपरीत चलती हवाएँ नहीं इसे निगलती।
साहस का भी ऐसा ही कुछ समा है,
इसके बल पर ही जगत कर्म में रमा है।।

अनुभूति कर न पाता इसकी, कोई भी बलवान है,
नौका को सागर पार कराने वाला, वही तो मेरा साहस महान है।

टूट जाता कभी पर झुक नहीं सकता,
ऊँचे पर्वतों के समक्ष ये रुक नहीं सकता।
यह वही है जहाँ सावित्री सत्यवान को लाई थीं,
साहस की सीख उसने ही हमें सिखाई थी।।

—अवनीश त्रिवेदी
सुरक्षा अनुभाग
भा.प्रौ.सं. कानपुर

जीवन भाषा एवं प्रौद्योगिकी
एक समसामयिक दृष्टिकोण

भारत की भूमि, विविधता का मान,
हर भाषा में रची, अपनी एक पहचान।
हिंदी, तमिल, बंगाली, गुजराती,
हर भाषा में बसी, जीवन की एक गाथा प्यारी।

विज्ञान में प्रगति, रमन का योगदान,
रमन प्रभाव से, चमके विज्ञान का मान।
होमी भाभा की दृष्टि, परमाणु को छुए,
परमाणु ऊर्जा से, भारत को नव उजाले दे।

विक्रम साराभाई ने, अंतरिक्ष में उड़ान भरी,
इसरो की सैटेलाइट, विश्व में जगह बनी।
डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम, मिसाइल मैन कहलाए,
रक्षा के क्षेत्र में, नई तकनीक लाए।

सत्येन्द्र नाथ बोस ने, क्वांटम का रहस्य सुलझाया,
बोस-आइंस्टीन सांख्यिकी ने, विज्ञान को नया दृष्टिकोण दिया।
जगदीश चंद्र बोस ने, बेतार का संदेश भेजा,
वनस्पति विज्ञान में, नई ऊर्जा का संचार किया।

मेघनाद साहा ने, आयनीकरण की परिकल्पना दी,
खगोल भौतिकी में, भारत की पहचान बढ़ी।
शांति स्वरूप भटनागर ने, रसायन विज्ञान संवारा,
वैज्ञानिक अनुसंधान का, भारत में सवेरा लाया।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, जब साथ आए,
भविष्य की चुनौतियों को, आसानी से हल कर पाए।
भारत की युवा पीढ़ी, नवाचार की धारा,
प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में, बना रही है नजारा।

साइबर सुरक्षा का ध्यान, जब हर कदम पर हो,
भारत का हर नागरिक, सुरक्षित और निर्भय हो।
जीवन, भाषा, और प्रौद्योगिकी का मेल,
समसामयिक दृष्टिकोण में, है अनोखा खेल।

समय की रफ्तार में, जब संग संग चले,
जीवन का ये संगम, सदा आगे बढ़े।
भाषा के शब्द, जब तकनीक से मिलें,
जीवन के सपने, नए रंगों में खिलें।

–अवनीश सिंह (कंप्यूटर साइंस एंड टेक्नोलॉजी)
पोस्ट डॉक फेलो
भा.प्रौ.सं. कानपुर

जीवन है, पर क्या है जीवन?

जीवन है, पर क्या है जीवन?
क्या पल पल का मधुगान है यह या मौन का इक कल्पित विस्तार?
क्या मन की वीणा पर छेड़ा इक तान है या सत का श्रृंगार
अंतस्थल की गहराई में सदियों से उठता एक प्रश्न

जीवन है, पर क्या है जीवन?

क्या अमृत की नदियां है जो मिलती हैं मृत्यु के सागर में?
या किसी योजना से निर्मित मधुशाला मन की गागर में?
चाहा जिसने उत्तर इसका हो चला व्यर्थ उसका जीवन

जीवन है, पर क्या है जीवन?

खिलते हैं कितने फूल मगर मुरझाना तन का है निश्चित
जो आज पात्र है जीवन का कल राख में होगा परिवर्तित
ऐसा जीवन का मधुबन है, ऐसा है तन मन का यह धन
जीवन है, पर क्या है जीवन?

दृग पाते हैं सब क्षण भंगुर इस विश्व की नाटकशाला में
सासों की हाला सीमित है जीवन की इस मधुशाला में
है यह आंगन जिसपर आशाएं करती हैं हर पल नर्तन
जीवन है, पर क्या है जीवन?

–अक्षत शर्मा
विद्युत अभियांत्रिकी विभाग
(बीटेक) भा.प्रौ.सं. कानपुर

अखबार

उठाता हूँ कलम अनेकों बार
सोचता हूँ क्या लिखूं?
बातें तो बहुत हैं
लेकिन पंक्तिबद्ध सजा नहीं पाता हूँ मैं।

आज फिर अख़बार पढ़कर
मन दुखी हुआ।
सामने वही ख़बरें
जैसे सालों पुरानी।
मारपीट, अत्याचार
आगजनी, धरना, बलात्कार।
फिर किसी माँ ने बच्चों के साथ
जहर खा लिया था।
भाई ने भाई,
चाचा ने भतीजा
और न जाने किसने
किसको मार दिया था।

वही सरकार से नाखुश लोग
जाम लगा रहे थे।
कुछ शीशे तोड़ रहे थे
कुछ वाहन जला रहे थे।
कहीं हिंसा भड़की हुई थी
कहीं चुनाव प्रचार हो रहा था
कहीं बाढ़, तो कहीं सूखे से
हाहाकार हो रहा था।
कहीं अधिकारों, तो कहीं आरक्षण
की लड़ाई आग पकड़ रही थी
फिर किसी किसान की लाश
पेड़ से लटक रही थी।

खेलपृष्ठ हमेशा की तरह
थोड़ा रोचक लगता है।
बड़े शब्दों में जीत
कहीं कोने में हार लिखता है।
धुल गया गेंदबाज
जीत गया मुक्केबाज।
स्वर्ण रजत कांस्य
जीत हार और हास्य।
प्रतिद्वंदिता उत्साह परिश्रम
इतिहास से अब तक का क्रम।
आदर्श बन जाते हैं खिलाडी कुछ
जाने कहाँ खो जाते हैं कुछ।

देश विदेश की खबरों में भी
कुछ खास बदला नहीं है।
आतंकवाद के खिलाफ
वही वादे चल रहे हैं।
आतंकवाद वहीं है
बस जंग के मैदान बदल रहे हैं।
धुआं रोक वातावरण को बचाने का
भुखमरी मिटने का
जंगली जीव और वनो को बचाने का
अंतर्राष्ट्रीय रिश्ते बढ़ने का
वही ढोल सुनाई देता है
कुछ होता न दिखाई देता है।

विज्ञापनों से पटा पड़ा है अख़बार
विज्ञापन ही है आधा अख़बार।
कुछ अच्छा भी पढ़ने को मिल जाता है
पर ढूंढने में समय लग जाता है।
सड़कें सुधर गयी हैं शायद
सफाई भी काफी होने लगी है।
चाँद पर जा चुका है देश
रेल समय पर चलने लगी हैं।
और सुना है शेयर बाजार
लगातार ऊपर जा रहा है।
पर गरीबी वहीं है
गरीब और लाचार हुआ जा रहा है।

कहीं ऐसा तो नहीं कि
नकारात्मकता ही मानवता है।
शायद इसीलिए जो बिकता है
वही छपता है।
मानवता की इस हार के परिदृश्य में
मैं अच्छाई खोज रहा था।
लगा गहराते अंधियारे में
परछाई खोज रहा था।
दिन बदलते हैं बस ख़बरें नहीं
हालात कुछ ज्यादा बदले नहीं।
'अनिल' लगता है भविष्य बता सकता हूँ मैं
बिना पढ़े ख़बरें बता सकता हूँ मैं।

–मेजर अनिल कुमार (भारतीय सेना)
कंप्यूटर साइंस इंजी (एमटेक)
भा.प्रौ.सं. कानपुर

एक साधारण छात्र

हर साधारण छात्र की एक ही कहानी,
पथ पथ पर उसके है परेशानी,

खुद को ये याद दिलाने की परेशानी,
कि वो कर सकता है औरों से बेहतर,

बस गिरने के डर से रोक लगा बैठा है खुद पर,
मेहनत पे अपनी यकीन भी है उसको,

लेकिन जानता है समय चाहिए परिणाम लाने को,
समय का कर सकता है वो इंतजार,

लेकिन हालातों के सामने है वो लाचार,
क्या सही क्या गलत, अकेले ही लड़नी है उसे अपनी लड़ाई,

लेकिन सब आएंगे जब वो करने लगेगा सफलता की चढ़ाई,
तब वो साधारण छात्र, असाधारण लगेगा,

सब कहेंगे किस्मत थी इसके साथ,
लेकिन सच वो जानता होगा,

किस्मत तो दूर,
कोई दोस्त भी नहीं था उस वक्त उसके पास,

हे साधारण छात्र तुम्हें अकेले रोना होगा,
अकेले दुखी होना होगा,

दूसरों से खुद को नीचे गिराते देखना होगा,
अपमान का घूंट भी तुमको पीना होगा,

अपनी बारी का इंतजार करना होगा,

लेकिन अपनी बारी आने पर तुम किसी को गिराना नहीं, उठाना,

दुनिया की इस नकली भीड़ के बीच,
तुम खुद को एक अच्छा इंसान बनाना,

जीतने की ख्वाहिशों के बीच,
मानवता को तुम ना भुलाना,

यूँ तो मुश्किल है अभी समय,
पर तुम्हे धीरज धरना होगा,

हे साधारण छात्र तुम्हें लड़ना होगा,
खुद को मजबूत बनाना होगा,

कोई साथ हो या ना हो, घरवालों की दुआएँ जरूर साथ हैं,
तुमको उनका हिसाब करना होगा,

मां के प्रेम को तुम्हें खुद की हिम्मत बनाना होगा,
पिता के सपनों को अपनी मेहनत से पूरा करना होगा,

आगे बढ़ना होगा,
बुरे हालातों से लड़ना होगा,

लगेगा डर भी छोड़ने का करेगा मन भी,
पर उसी क्षण आगे बढ़ने का संकल्प तुम्हें करना होगा,

करता जा खुद पर भरोसा,
दूसरों की तुझे जरूरत नहीं,

अपने आप को खोजने में,
दूसरे चाहिए भी तो नहीं,

कर यकीन खुद पर,
बहुत समय अब बाकी नहीं,

एक दिन सब ठीक होगा,
वो दिन भी अब दूर नहीं।

–योगेश कटारिया
पीएचडी स्टैटिकल एण्ड मैथमैटिक विभाग
भा.प्रौ.सं. कानपुर

जिंदगी की कश्मकश

समाज़ में संघर्ष की सुनो ये जुबानी,
प्रेम और त्याग से बनी जीवन की कहानी..!!

ये आँखों के नीचे डार्क सर्किल का होना,
कोई दाग नहीं...
ये उन त्यागी नींदों के नतीज़े हैं,
जिनसे मेरी माँ की मुस्कान है..!!

ये बालों का सफेद या कम होना,
कोई रोग नहीं...
ये उन किए गए मेहनत के नतीज़े हैं,
जिनसे मेरे जिता का सम्मान है..!!

ये स्किन का टैन होना,
कोई मजबूरी नहीं...
ये वो दौड़ धूप के नतीज़े हैं,
जिनसे मेरी बहन की लाज़ है..!!

ये बातों में ठहराव होना,
कोई खामोशी नहीं...
ये उन असंख्य तजुर्बो के नतीज़े हैं..
जिनसे मेरे भाई तरक्की करते हैं..!!

ये टपरे पर चाय पीना,
कोई शर्म की बात नहीं...
ये वो सेविंग्स के नतीज़े,
जिनसे मेरा घर परिवार चलता है..!!

ये उम्र का तकाज़ा,
कोई बड़ी बात तो नहीं...
ये उन बेवक्त लड़ाइयों के नतीज़े हैं,
जो मैंने स्वयं लड़ी है..!!

इसलिए,
अनसुना करना ही सही है उन चार लोगों की बात,
बेफिक्री से चिंतन करो, जिंदगी जियो बिन्दास...!!!

–राहुल प्रकाश सिंह
पीएचडी, विद्युत अभियांत्रिकी
भा.प्रौ.सं. कानपुर

ठूंठा आम

ठूंठा आम ताकता रहता रास्ता शाम सवेरे,
अब ना आते बच्चे जो रहते थे उसको घेरे।

कभी तना सा खड़ा हुआ था दरवाज़े पर मेरे,
उसी कपाट का हिस्सा बन देखे किस्मत के फेरे..!

बाबा जैसा कभी हुआ करता था घर की जान,
जड़े जमाए, तना उठा, पत्तों की छतरी तान।

गर्मी में जब बौर लग जाती, झुकता जाता हर पल,
बाबा जैसा बोझ उठाए देता बस मीठा फल।

कड़ी धूप में जैसे बाबा खटते रहते दिन भर,
ये भी देता छांव हमें बस बिना कहे यूं निश्छल।

इसकी जड़ें जहां तक जाती, साम्राज्य इसी का होता था,
आंगन का सम्राट बना, बाबा सा रौब जमाता था!

इसके पत्तों की गोदी में गौरैया भी सोती थी,
बाबा की चिड़िया की माफ़िक वो भी इसकी पोती थी।

श्वेत बौर की चादर ओढ़े जेठ में जब लहराता,
हाथ बढ़ा और पीठ झुका बाबा सा पास बुलाता!

आओ, खेलो, गोदी बैठो, फ़ल दूंगा मैं तुमको,
तुम लोगों के लाड़ से मिलती प्राणवायु इस तरु को!

भव–सागर के मायाजाल में तरु था ऐसा खोया,
भूल गया था काल चक्र ने काटा जिसको भी बोया!

समय रेत थी गिरती जाती, हंसता तरु अब रोया,
सबको जीवन देता–देता स्वयं एक दिन सोया।

यही नियम है सत्य जान लो, जीवन है क्षण भंगुर,
राजा हो या रंक एक दिन नियति बनेगी निष्ठुर।

जब तक सांसों की माला का मनका फिरता है बराबर,
खेलो, खाओ, खुशी मनाओ, हर क्षण जियो निरंतर!

परहित करते जाने से जीवन नहीं छोटा होता है,
ठूंठा आम भले ही सूखे, यादों की महक न खोता है।

हम सबके ज़ेहन में होता है,
कविता का शीर्षक होता है..!

–ज्योति मिश्रा
पीएचडी, बी.एस.बी.ई.
भा.प्रौ.सं. कानपुर

पैसे देकर आज मैंने एक अनुभव कमाया

नौकरी चाहिए? एक फोन आया,
मैंने हामी भरी, अपना रुझान दिखाया
उधर फोन से आवाज आई, साक्षात्कार कराएंगे
मात्र 10 रुपये में नौकरी दिलाएंगे।

मैने अनुभव बेरोजगार के नाते नौकरी आती देख
मन में आनंदित हो, आगे की प्रक्रिया जानी
मधुर स्वर में एक आवाज आई, बोली
मेरे तरीके को अपनाएं और आज ही नौकरी पाएं।

मैंने कहा आपकी शरण में हूं
बस आप बताएं नौकरी कैसे ग्रहण करुं
अब एक भारी आवाज ने मोर्चा संभाला
नौकरी के जाल में मुर्गा फंसा ऐसा उन्हें भांपा।

बोला मात्र 10 रुपये का भुगतान करे और फिर
आगे की प्रक्रिया के लिए प्रस्थान करें ।

मैने बिना परिश्रम नौकरी के लालच में ऑनलाइन ओटीपी से पैसे का भुगतान किया,
उधर उसने अपने बिछाये जाल का इस्तेमाल किया,
फुर्ती से मेरे खाते से 6000 रुपये पार किया।

मैंने बोला ये क्या किया, बोला लगता है
आपने गलत बटन दबा दी, इधर
मैंने अपनी राशि गँवा दी।
फिर भी इंसानियत के नाते मैंने बोला भाई मेरा पैसा वापस कर दो,
उधर से आवाज आई अब कुछ नहीं हो सकता अपना फोन रख दो।

पैसा गया उसका थोड़ा गम है पर
अब आगे से किसी नौकरी के लिए फ़ोन का उपयोग करें
ये संभावना बहुत कम है ।

कुछ पैसों के लालच में, इंसान अपना जमीर बेच रहा है
जरुरतमंद, भोले-भाले युवाओं को नौकरी के नाम पर धोखा दे रहा है।

क्या ऐसे पैसे से अपना कुछ भला कर पाएगा
हमने तो सुन रखा है पैसा जैसे आता है वैसे ही जाएगा।
ईश्वर से प्रार्थना है आदमी को थोड़ी तो सच्चाई दो,
ऐसी बुद्धि दो, सुधि दो, जिसे धोखे से ना उसकी कमाई हो।

मेरा मन है तब से बहुत उदास
क्यों किया मैंने अति आतुरता में ऐसा प्रयास
अब से शायद ही हो कोई अंजाने पर विश्वास।
बस इतनी चाह है कि आज नहीं तो कल
उसको इस बात का एहसास हो की
गलत तरीक़े ग़लत रास्ते ही खुलते हैं और
हर ग़लत का एक दिन हिसाब होता है।

–अभिनव मिश्रा
भर्ती अनुभाग
भा.प्रौ.सं. कानपुर

विश्व आत्महत्या रोकथाम दिवस

जब लाख कोशिश बाद भी, नहीं हुआ पूरा मेरा सपना।
जिंदगी भर छोड़ गया मां बाप पर, दुःख दर्द सब अपना।।
मैं तो चैन से सो गया, पर बेचैनी मां बाप को दे गया।
विपदाओं से भागने की जल्दी में, मैं जिंदगी की क़ीमत भूल गया ।।

सोचा था..
दुनिया में मेरे न होने से, सब कुछ शांत हो जायेगा।
पर मेरी शांति के परिवेश में, दर्द की चीखें भूल गया।।
ये दुःख दर्द सब और परिजन की पीड़ा, भला क्या ही ठीक हो पाएगा।
जब तक समझ में आया मुझको, मेरा देह चिता पर लेट गया...!!!

स्व0 प्रशान्त सिंह, पीएचडी विद्यार्थी (2022) को विनम्र श्रद्धांजलि हेतु।

–सचिन मीना
एच.एस.एस पूर्व सचिव
भा.प्रौ.सं. कानपुर

मन

मन के पंखों को फैलाकर, सपनों की उड़ान भरें।
आशाओं के दीप जलाकर, हर मुश्किल को पार करें।।

मन है एक चंचल पंछी, उड़ता है अनंत आकाश में।
कभी हँसाता, कभी रूलाता, बहता जैसे मधुर राग में।।

चिंताओं के भार से मन, कभी–कभी हो जाता भारी।
प्रेम और स्नेह से फिर, मिलती उसे नई किलकारी।।

मन की गहराइयों में छुपी, अनगिनत इच्छाओं की धार।
कभी सागर की लहरों सा, कभी ठहरे जल की तरह शांत।।

मन के भाव अनोखे होते, बदलते जैसे मौसम का रंग।
खुशियों की बगिया महकाते, दुखों का भी होता संग।।

मन को साधना है जरूरी, ताकि मिले सुकून का द्वार।
ध्यान और आत्मचिंतन से होता है जीवन का उद्धार।।

मन के साथ चलना सीखें, पर उसे भी समझाएं।
संयम और धैर्य से मिलकर, जीवन को सुखमय बनाएं।।

मन के पंखों को फैलाकर, चले हम उस राह पर।
जहाँ प्रेम, शांति और खुशी हो, हर दिन एक नई बहार पर।।

–श्रीमती अभिलाषा विश्वकर्मा
अध्यापिका कैंपस स्कूल
भा.प्रौ.सं. कानपुर

वो साँवली सी लड़की

वो छोटी सी, प्यारी सी साँवली सी लड़की
गोरे होने के लिए करती अथक प्रयास
वो छोटी सी लड़की,
हर किसी की बात सच मानती
सहमी सी वो भोली लड़की,
अपनी माँ के लिए पोस्टमैन का काम करती
बहुत कम बोलने वाली
वो साँवली सी लड़की,
भूतों से डरती, परियों सी दिखती
वो जमीं पर चलने वाली
साँवली सी लड़की,
हारना जानती, जीत के लिए
मन और आत्मा पर अटूट विश्वास रखने वाली
वो न्याय प्रिय लड़की,
रोते को हँसाती, गिरते को धैर्य सिखाती
वो नर्म विचारों से भरी
प्यारी सी लड़की, मुँह पर हाथ रखकर
निराशा और हताशा को
अपने दायरों तक छुपाने का प्रयास करती
वो हिम्मत का प्रर्याय कहलाने वाली
साँवली सी लड़की,
सुना है! वो लड़की सिमट सी गयी है
शहर की तंग गलियों में,
कोई तो कह रहा था
कि वो तो वक्त के साथ-साथ
आँख मिचौली खेलती-खेलती
बदल गयी है,
क्या वास्तव में,
बदल गयी है
या कहीं भीड़ में पहचान खो सी गयी है?
खैर! अगर तुम्हे कहीं मिले
तो कहना
रास्ते की तरह खड़ा इंतजार करता
वो नटखट लड़का
उसे बहुत याद करता है,
वो बाते बनाने वाला
छोटा सा लड़का
उससे मिलना चाहता है।

–प्रकल्प शर्मा
उप कुलसचिव (विधि)
भा.प्रौ.सं. कानपुर

मेडटेक आईआईटी कानपुर: स्वदेशी नवाचार के लिए एक केंद्र

मेडिकल टेक्नोलॉजी एवं डिवाइस के क्षेत्र में भारत अत्यधिक आयात निर्भर देश है। हम 80 प्रतिशत से अधिक मेडिकल डिवाइस अमेरिका, जर्मनी, चीन आदि देशो से आयात करते हैं और कोरोना वायरस की महामारी से स्वास्थ्य सुविधाओं को सुदृढ़ करने की पहल में आयात और अधिक बढ़ गया है। बढ़ते आयात संकट के बीच मेडिकल क्षेत्र में स्वदेशी टेक्नोलॉजी एवं संयंत्रों के विकास के शोध में लगने वाला समय, नियामक दिशा निर्देशों की सही जानकारी, परीक्षण में लगने वाला समय इत्यादि अभी भी स्टार्टअप एवं इन्नोवेटर्स के लिए प्रमुख बाधक हैं।

मेडिकल क्षेत्र में स्टार्टअप, इन्नोवेटर्स, एवं लघु उद्योगों की इन समस्याओं के समाधान हेतु आईआईटी कानपुर में वर्ष 2021 में मेडटेक सेंटर (MedTech Centre) को भारत सरकार के जैव

प्रौद्योगिकी विभाग के 'जैव प्रौद्योगिकी उद्योग अनुसंधान सहायता परिषद (BIRAC)' के सहयोग से एक उत्कृष्टा केंद्र (Center of Excellence) के रूप में स्थापित किया गया। मेडिकल डिवाइस उत्पादन की गुणवत्ता प्रबंधन प्रणाली लिए ISO 13485 अंतर्राष्ट्रीय मानक प्राप्त यह डिज़ाइन एवं निर्माण का भारत में अपनी तरह का पहला परिष्कृत केंद्र है ।

विगत 3 वर्षों की इस छोटी यात्रा में प्रोफेसर जनकराजन रामकुमार के कुशल मार्गदर्शन में यह केंद्र टेक्नोलॉजी, डिज़ाइन, निर्माण एवं शोध में पारंगत टीम के समर्थन एवं सहयोग से 50 से अधिक स्टार्टअप, इन्नोवेटर, एवं उद्योगों के साथ सफलतापूर्वक काम कर चुका है। कोरोना काल की पहली लहर में वेंटीलेटर के डिज़ाइन में सहयोग हो या दूसरी लहर में ऑक्सीजन कॉन्सेंट्रेटर का उत्पादन, यह केंद्र मेडिकल टेक्नोलॉजी एवं इन्नोवेशन को उपयोग लायक उत्पाद में विकसित करने की प्रक्रिया में तेजी लाने के लिए प्रयासरत है।

अपनी मुक्त एवं नवाचार समर्थित नीति के कारण यह केंद्र इतने कम समय में संस्थान (आईआईटी कानपुर) के शोधार्थियों एवं संकाय-सदस्यों के साथ-साथ अन्य विश्वविद्यालयों, इन्क्यूबेशन सेंटर, स्टार्टअप एवं विभिन्न सरकारी विभागों के लिए अपने विचारों एवं नवाचारों को मूर्तरूप प्रदान करने का एकमात्र केंद्र बन गया है। दन्त चिकित्सा में जबड़ा खोलने का उपकरण, अंतः शिरा तरल को गर्म करने का संयन्त्र, रक्षा क्षेत्र के लिए दुर्गम परिस्थितियों में जूतों को गर्म रखने का संयंत्र तथा दिव्यांगजनों की सुगमता के लिए हस्तचलित तिपहिया साइकिल को स्वचालित बनाने का संयंत्र जैसे कई नवीन उत्पादों का शोध एवं निर्माण इस केंद्र के माध्यम से हो रहा है।

जैव प्रौद्योगिकी में भारत की सबसे प्रतिष्ठित एवं बड़ी अनुदान योजना बायोटेक्नोलॉजी इग्निशन ग्रांट (BIG) में मेडटेक केंद्र के 5 इन्नोवेटर्स चयनित हुए हैं जिन्हे 2.5 करोड़ का सहयोग अपने नवाचार को मूर्त रूप देने के लिए मिला है। इनके अतिरिक्त केंद्र के सहयोग से अपने उत्पादों का निर्माण और परीक्षण करने वाले 3 स्टार्टअप् को विगत वर्ष में 1.5 करोड़ से अधिक की इक्विटी फंडिंग भी प्राप्त हुई है।

हाल ही में, केंद्र ने मेदान्त्रिक एवं नाड़ीपल्स के उत्पादों में सहयोग देकर उन्हें नियामक अनुमोदन की अवस्था तक पहुँचाया है। नाड़ीपल्स भारत के प्राचीन विज्ञान को आधुनिकतम तकनीक के साथ समन्वित कर रहा है। इस स्टार्टअप की टीम अपने हाथ में पहनने वाले उत्पाद नाड़ी परीक्षक के लिए मेडटेक केंद्र की टीम के पास आयी थी। टीम ने मैटेरियल एवं एर्गोनॉमिक्स के साथ-साथ दबाव बिन्दुओ का अध्ययन करके नाड़ी परीक्षक को एक उत्पाद की शक्ल देने का कार्य किया है यह संयंत्र आयुर्वेदिक डॉक्टर को अधिक से अधिक मरीजों का सटीक परीक्षण करने में सहयोग करेगा।

'मेदान्त्रिक' कानपुर के पूर्व छात्रों द्वारा स्थापित स्टार्टअप है जो मेडिकल क्षेत्र में श्वसन एवं ऑक्सीजन प्रबंधन में नए तकनीक के उत्पाद बनाता है। अपने वहनीय (Portable) ऑक्सीजन शुद्धता मापक यन्त्र के लिए मेडटेक केंद्र के साथ काम किया । केंद्र की टीम ने प्रारंभिक (प्रोटोटाइप) मॉडल डिज़ाइन किया है जिसमें बैटरी एवं डी.सी. ऊर्जा का उपयोग संयंत्र को चलाने के लिए किया जा सके एवं ऑक्सीजन शुद्धता कम होने पर घंटी बजे। संयंत्र अब नियामक मंजूरी के लिए प्रतीक्षित है ।

विभिन्न पैमानों पर मेडटेक केंद्र को इतने थोड़े समय में मिलने वाली सफलता के मुख्य कारक अंतर्विषयी दृष्टिकोण, समावेशी वातावरण एवं नियामन में विषय-वस्तु विशेषज्ञ टीम का होना है । भारत की प्रगति के लिए मेडिकल संयंत्रों एवं तकनीक में हमारी आयात पर निर्भरता को कम करने में मेडटेक केंद्र जैसे परिष्कृत केंद्र बहुत महत्वपूर्ण भूमिका में है।

मेडिकल इनोवेशन के क्षेत्र में काम करने वाले किसी भी स्टार्टअप, छात्र एवं उद्योग के साथ विमर्श के लिए मेडटेक केंद्र की टीम सदैव तत्पर रहती है। आप ईमेल, कॉल एवं सीधे केंद्र में आकर भी टीम से संपर्क कर सकते हैं।

–प्रोफेसर जनकराजन रामकुमार
संकाय समन्वयक, मेडटेक
भा.प्रौ.सं. कानपुर

–डॉ0 अमनदीप सिंह ओबेरॉय
इमेजीनियरिंग प्रयोगशाला
भा.प्रौ.सं. कानपुर

तेषां सततयुक्तानां भजतां प्रीतिपूर्वकम्।
ददामि बुद्धियोगं तं येन मामुपयान्ति ते।।
(श्रीमद्‌भगवद्‌गीताः 10:10)

भावार्थ

जो प्रेमपूर्वक मेरी सेवा करने में निरन्तर लगे रहते हैं, उन्हें मैं ज्ञान प्रदान करता हूँ, जिसके द्वारा वे मुझ तक आ सकते हैं।

तेषामेवानुकम्पार्थमहमज्ञानजं तमः।
नाशयाम्यात्मभावस्थो ज्ञानदीपेन भास्वता।।
(श्रीमद्‌भगवद्‌गीताः 10:11)

भावार्थ

मैं उन पर विशेष कृपा करने हेतु उनके हृदयों में वास करते हुए ज्ञान के प्रकाशमान दीपक के द्वारा अज्ञानजन्य अंधकार को दूर करता हूँ।

मोटरस्पोर्ट्स नवाचार और प्रतिबद्धता की उत्कृष्ट यात्रा

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, कानपुर हमेशा से तकनीकी अनुसंधान और सैद्धांतिक अनुप्रयोग आधारित शिक्षा में सबसे आगे रहा है और संस्थान की सबसे सक्रिय टीम में से एक टीम आईआईटी कानपुर मोटरस्पोर्ट्स वास्तव में इस विचारधारा से प्रतिबद्धता दर्शाती आई है। इस टीम की स्थापना, 5 छात्रों की दृढ़ता से 2010 में हुई। तब से टीम ने अभियान्त्रिकी की विभिन्न शाखाओं के छात्रों को, एक टीम वातावरण प्रदान करके समूह भावना की धर्मिता का पालन किया है। टीम ने इस समूह भावना के विचार को साबित करने के दृढ़ संकल्प के बाद अपना पहला वाहन, फॉर्मूला स्टूडेंट दहन वाहन (कंबस्शन व्हीकल) बनाया और प्रमाणित कर दिखाया कि आईआईटी कानपुर की छात्र-संयोजित टीम, परियोजनाओं का निरंतर उत्पादन कर सकती है। सभी नई चुनौतियों को पार करते हुए, टीम ने अपने पहले वाहन के साथ 2013 में एफएस इटली (FS Italy) में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धा की। तब से टीम ने लगातार चुनौतियों का सामना करते हुए एकजुट होकर काम किया है और फॉर्मूला स्टूडेंट, ऑल टेरेन व्हीकल और एफी साइकिल (Effi Cycle) की श्रेणी में गुणवत्तापूर्ण वाहन तैयार किया है।

परंतु कोई भी सफल संस्थान बिना कठिनाइयों के सफल नहीं बन सकता। हमारे लिए यह चुनौतीपूर्ण कठिनाई कोविड-19 के रूप में सामने आई। निरंतर रूबरू सम्पर्क संभव न हो पाना और भी चुनौतीपूर्ण सिद्ध हो रहा था। टीम 2018 से कंबस्शन श्रेणी से इलेक्ट्रिक श्रेणी में बदलाव की ओर अग्रसर थी। यह निर्णय उभरती प्रौद्योगिकियों के साथ ताल-मेल बनाए रखने के लिए टीम की प्रतिबद्धता को दर्शाता है, इसीलिए ऐसे कठिन समय का लाभ उठाते हुए, टीम ने वैकल्पिक व्यवस्था के रूप में ऑनलाइन बैठक करके, इस सोच को हकीकत में बदलने के लिए, इस चुनौतीपूर्ण वक्त एवं कोविड पश्चात की अवधि का उपयोग किया।

वर्षों के अथक परिश्रम का फल मिला और आईआईटी कानपुर मोटरस्पोर्ट्स फॉर्मूला भारत 2023, कक्षा I प्रतियोगिता में समग्र विजयी (ओवरऑल विनर) रही। इसके बाद एक साल की कड़ी मेहनत के फलस्वरूप संस्थान ने 2023 में अपनी पहली इलेक्ट्रिक वाहन-विद्युत का निर्माण किया। इसके बाद टीम ने विद्युत के साथ फॉर्मूला भारत 2024 में भाग लिया जिस कारण टीम में प्रतिस्पर्धा का वातावरण पुनः जागृत हुआ।

पाठकों को विद्युत के इंजीनियरिंग दृष्टिकोण से अवगत कराने के लिए, अगले भाग में वाहन के तकनीकी पहलुओं का विवरण दिया गया है :–

मुख्य विशिष्टताएँ (Key Specs)

वजन (ड्राइवर के बिना) : 260 किलोग्राम

टॉप स्पीड : 102 किमी/घंटा

सिंगल चार्ज में रेंज : 25 किमी

पीक लोंगिट्युडनल एक्सेलरेशन : 0.6g

पीक लेटरल एक्सेलरेशन : 1.5g

पीक डीसलरेशन : 1.5g

पीक मोटर शक्ति : 8500 आरपीएम

कुछ खास कार्यक्रम

टीम अपने द्वारा किए गए कार्यों को प्रस्तुत करते हुए लोगों के

साथ जुड़ने के लिए कई कार्यक्रम और प्रदर्शन करती है।

वरुण ग्रोवर (निर्देशक और पटकथा लेखक) के साथ बातचीत

हमें वरुण ग्रोवर से मिलने का सौभाग्य मिला, जो फिल्म उद्योग में अपने लेखन और निर्देशन कौशल के लिए ख्याति प्राप्त व्यक्ति हैं। हमारी मुलाकात के दौरान, हमने गर्व से अपने फॉर्मूला छात्र इलेक्ट्रिक वाहन का प्रदर्शन किया और उनके साथ गहन चर्चा में भाग लिया, जिससे हमारी टीम की गतिशीलता और परिचालन प्रक्रियाओं की एक झलक मिली।

फॉर्मूला भारत 2024

फॉर्मूला भारत, भारत की प्रसिद्ध वैश्विक फॉर्मूला छात्र प्रतियोगिताओं का रूपांतरण है। 2024 में, हमारी टीम ने इलेक्ट्रिक वाहन श्रेणी में अपनी पहली यात्रा शुरू की। इस अनुभव ने साथी टीमों के साथ अच्छे संबंधों की स्थापना को सरल बनाया, जिससे तकनीकी और व्यक्तिगत दोनों संबंधों को

बढ़ावा मिला। हमारे डिजाइनों, प्रस्तुतियों और प्रबंधन पर हमें जो अमूल्य प्रतिक्रिया मिली, उसने हमें अपनी टीम को मजबूत करने और भविष्य के लिए अपनी योजना तैयार करने के लिए अंतर्दृष्टी प्रदान की है।

विज्ञान मेला

प्रोफेसर एच.सी. वर्मा द्वारा स्थापित शिक्षा सोपान, कानपुर में हुए विज्ञान मेले में हमारी टीम शामिल हुई। सुश्री सौम्या पाण्डेय, आई.ए.एस, कानपुर नगर ने इस कार्यक्रम में आकर इसकी शोभा को बढ़ाया। कार्यक्रम में विभिन्न स्कूलों के छात्रों सहित 3000 से अधिक लोग शामिल हुए। छात्रों से जुड़कर हमारा उद्देश्य उन्हें एप्लाइड इंजीनियरिंग के प्रति प्रेरित करना था।

एफएसईवी (FSEV) शोकेस

हमने आईआईटी कानपुर के पहले फॉर्मूला इलेक्ट्रिक वाहन (विद्युत) का बहुप्रतीक्षित प्रदर्शन आयोजित किया। हमने अपनी टीम के इतिहास, वाहन विशिष्टताओं, कार्य पद्धतियों और इंजीनियरिंग दृष्टिकोणों में मूल्यवान अंतर्दृष्टि भी प्रदान की। यह महीनों की कड़ी मेहनत, समर्पण और सहयोग का प्रमाण था, जो टिकाऊ गतिशीलता और तकनीकी नवाचार की दिशा में हमारी यात्रा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर था। हमने अपने मूल्यवान प्रायोजकों को भी उनके समर्थन के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया।

टेककृति 2024

हमारी टीम ने टेककृति 2024 प्रदर्शनी में भाग लिया, इस उत्सव में लगभग 60,000 लोगों की भारी भीड़ उमड़ी। हमने उपस्थित लोगों के साथ इंटरैक्टिव सत्रों में भाग लेते हुए अपने BAJA 19 और अपने पहले FSEV विद्युत का प्रदर्शन किया। हमने अपने प्रायोजकों का, उनके अमूल्य समर्थन के लिए आभार प्रकट किया।

अंत में, महत्वपूर्णतः यह सारी प्रगति और सफलता हमारे संकाय सलाहकारों डॉ. मंजेश कुमार सिंह और डॉ. ट्विंकल त्रिपाठी, प्रशासनिक कार्यालय (DoRA, DoSA, DoRD, और SnT काउंसिल), इमेजिनियरिंग लैब, और हमारे सम्मानित प्रायोजक : ग्लिडा, ब्राइट 4 व्हील, भारत फोर्ज, नॉक्कार्क, लोहम, टूलबाय. कॉम और एडविन के सहयोग के बिना हासिल कर पाना संभव नहीं होता।

संकाय मार्गदर्शकों का संदेश

डॉ. मंजेश कुमार सिंह
सहायक प्रोफेसर, यांत्रिक अभियांत्रिकी विभाग,
भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर

टीम आईआईटी कानपुर मोटरस्पोर्ट्स के फैकल्टी सलाहकार के

रूप में, मुझे हमारे छात्रों की उल्लेखनीय यात्रा साझा करते हुए गर्व हो रहा है। टीम की स्थापना के बाद से, हमारे छात्रों ने अपने जुनून से प्रेरित नवाचार का प्रदर्शन किया है। COVID-19 द्वारा उत्पन्न चुनौतियों का सामना करने के बावजूद, उनकी हाल की उपलब्धियों में आईआईटी कानपुर में "प्रारंभिक फॉर्मूला स्टूडेंट इलेक्ट्रिक वाहन" का विकास और फॉर्मूला भारत 2024 इवेंट में भागीदारी शामिल है। यह यात्रा उनकी उत्कृष्टता के प्रति प्रतिबद्धता एवं इंजीनियरिंग और मोटरस्पोर्ट्स में उनकी क्षमताओं के निरंतर विकास का प्रमाण है।

डॉ. ट्विंकल त्रिपाठी
सहायक प्रोफेसर, विद्युत अभियांत्रिकी विभाग
भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, कानपुर

मुझे हमारे टीम की सराहनीय प्रगति प्रस्तुत करते हुए प्रसन्नता हो रही है। इस वर्ष हमने एक महत्वपूर्ण पड़ाव पार किया है क्योंकि हमने इलेक्ट्रिक वाहनों के क्षेत्र में प्रवेश किया हैं, और आईआईटी कानपुर का पहला फॉर्मूला स्टूडेंट इलेक्ट्रिक वाहन प्रस्तुत किया हैं। यह हमारे लिए इलेक्ट्रिक वाहनों में पहली बार कदम रखने का प्रतीक है, और इससे पता चलता है कि टीम की अनुकूलनशीलता और तकनीकी प्रगति के प्रति प्रतिबद्धता कितनी मजबूत है।

—व्रुतिका राव
बीटेक, बी.एस.बी.ई.
भा.प्रौ.सं. कानपुर

—आदित्य सिंह
बीटेक, सिविल एण्ड अभियांत्रिकी
भा.प्रौ.सं. कानपुर

अंतस के 25वें अंक के सर्वश्रेष्ट रचनाकार

जैसा कि आप सभी को विदित है कि अंतस पत्रिका में प्रकाशित तीन सर्वश्रेष्ठ रचनाओं के लेखकों को नगद पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है। इसी क्रम में सूचित किया जाता है कि 25वें अंक की शीर्ष तीन रचनाएँ इस प्रकार हैं:

1. अध्यापन के नए आयाम

प्रो. मनोज कुमार हरबोला (भौतिकी)

2. संगीत- रसोत्पत्ति का एक सशक्त माध्यम-

डॉ. देवानंद पाठक, मीडिया टेक्नालॉजी सेंटर

3. जलता जंगल- श्री अभिनव वर्मा बीएस-एमएस अर्थशास्त्र

विरासत

बड़े भाई साहब

मेरे भाई साहब मुझसे पाँच साल बड़े थे; लेकिन केवल तीन दरजे आगे। उन्होंने भी उसी उम्र में पढ़ना शुरू किया था जब मैंने शुरू किया था; लेकिन तालीम जैसे महत्त्व के मामले में वह जल्दबाजी से काम लेना पसन्द न करते थे। इस भावना की बुनियाद खूब मजबूत डालना चाहते थे, जिस पर आलीशान महल बन सके। एक साल का काम दो साल में करते थे। कभी-कभी तीन साल भी लग जाते थे। बुनियाद ही पुख्ता न हो, तो मकान कैसे पायेदार बने!

मैं छोटा था, वह बड़े थे, मेरी उम्र नौ साल की थी, वह चौदह साल के थे। उन्हें मेरी तम्बीह और निगरानी का पूरा और जन्मसिद्ध अधिकार था, और मेरी शालीनता इसी में थी कि उनके हुक्म को कानून समझूँ ।

वह स्वभाव से बड़े अध्ययनशील थे। हरदम किताब खोले बैठे रहते और शायद दिमाग को आराम देने के लिए कभी कॉपी पर, कभी किताब के हाशियों पर चिड़ियों, कुत्तों, बिल्लियों की तस्वीरें बनाया करते थे। कभी-कभी एक ही नाम या शब्द या वाक्य दस-बीस बार लिख डालते। कभी एक शेर को बार-बार सुन्दर अक्षरों में नकल करते। कभी ऐसी शब्द-रचना करते, जिसमें न कोई अर्थ होता, न कोई सामंजस्य। मसलन, एक बार उनकी कॉपी पर मैंने यह इबारत देखी स्पेशल, अमीना, भाइयों-भाइयों, दर-असल, भाई-भाई, राधेश्याम, श्रीयुत राधेश्याम, एक घंटे तक- इसके बाद एक आदमी का चेहरा बना हुआ था। और उनसे पूछने का साहस न हुआ। वह नवीं जमात में थे, मैं पाँचवीं में। उनकी रचनाओं को समझना मेरे लिए छोटा मुँह बड़ी बात थी।

मेरा जी पढ़ने में बिलकुल न लगता था। एक घंटा भी किताब लेकर बैठना पहाड़ था। मौका पाते ही हॉस्टल से निकल मैदान में आ जाता और कभी कंकरियाँ उछालता, कभी कागज की तितलियाँ उड़ाता, और कहीं कोई साथी मिल गया, तो पूछना ही क्या। कभी चारदीवारी पर चढ़कर नीचे कूद रहे हैं, कभी फाटक पर सवार, उसे आगे-पीछे चलाते हुए मोटरकार का आनन्द उठा रहे हैं, लेकिन कमरे में आते ही भाई साहब का वह रौद्र-रूप देखकर प्राण सूख जाते! उनका पहला सवाल यह होता- 'कहाँ थे?' हमेशा यही सवाल, इसी ध्वनि में हमेशा पूछा जाता था और इसका जवाब मेरे पास केवल मौन था। न जाने मेरे मुँह से यह बात क्यों न निकलती

कि जरा बाहर खेल रहा था। मेरा मौन कह देता था कि मुझे अपना अपराध स्वीकार है और भाई साहब के लिए इसके सिवा और कोई इलाज न था कि स्नेह और रोष से मिले हुए शब्दों में मेरा सत्कार करें।

'इस तरह अंग्रेजी पढ़ोगे, तो जिन्दगी भर पढ़ते रहोगे और हर्फ न आएगा। अंग्रेजी पढ़ना कोई हंसी-खेल नहीं है कि जो चाहे, पढ़ ले; नहीं ऐरा-गैरा नत्थू-खैरा सभी अंग्रेजी के विद्वान हो जाते। यहाँ रात-दिन आँखें फोड़नी पड़ती हैं और खून जलाना पड़ता है, तब कहीं यह विद्या आती है। और आती क्या है, हाँ, कहने को आ जाती है। बड़े-बड़े विद्वान भी शुद्ध अंग्रेजी नहीं लिख सकते, बोलना तो दूर रहा और मैं कहता हूँ, तुम कितने घोंघा हो कि मुझे देखकर भी सबक नहीं लेते। मैं कितनी मेहनत करता हूँ, यह तुम अपनी आँखों से देखते हो, अगर नहीं देखते, तो यह तुम्हारी आँखों का कसूर है, तुम्हारी बुद्धि का कसूर है। इतने मेले-तमाशे होते हैं, मुझे तुमने कभी देखने जाते देखा है? रोज ही क्रिकेट और हॉकी-मैच होते हैं। मैं पास नहीं फटकता। हमेशा पढ़ता रहता हूँ। उस पर भी एक-एक दरजे में दो-दो, तीन-तीन साल पड़ा रहता हूँ; फिर भी तुम कैसे आशा करते हो कि तुम यों खेल-कूद में वक्त गंवाकर पास हो जाओगे? मुझे तो दो-तीन साल ही लगते हैं, तुम उम्र-भर इसी दरजे में पड़े सड़ते रहोगे ! अगर तुम्हें इस तरह उम्र गंवानी है तो बेहतर है, घर चले जाओ और मजे से गुल्ली-डण्डा खेलो। दादा की गाढ़ी कमाई के रुपये क्यों बरबाद करते हो?'

मैं यह लताड़ सुनकर आँसू बहाने लगता। जवाब ही क्या था! अपराध तो मैंने किया, लताड़ कौन सहे? भाई साहब उपदेश की कला में निपुण थे। ऐसी-ऐसी लगती बातें कहते, ऐसे-ऐसे सूक्ति-बाण चलाते, कि मेरे जिगर के टुकड़े-टुकड़े हो जाते और हिम्मत टूट जाती। इस तरह जान तोड़कर मेहनत करने की शक्ति मैं अपने में न पाता था और उस निराशा में जरा देर के लिए मैं सोचने लगता क्यों न घर चला जाऊँ। जो काम मेरे बूते के बाहर है, उसमें हाथ डालकर क्यों अपनी जिन्दगी खराब करूँ। मुझे अपना मूर्ख रहना मंजूर था, लेकिन उतनी मेहनत! मुझे तो चक्कर आ जाता था; लेकिन घंटे-दो घंटे के बाद निराशा के बादल छँट जाते और मैं इरादा करता कि आगे से खूब जी लगाकर पढ़ूँगा। चटपट एक टाइम-टेबिल बना डालता। बिना पहले से नक्शा बनाए, कोई स्कीम तैयार किये बिना काम कैसे शुरू करूं। टाइम-टेबिल में खेलकूद की मद बिलकुल उड़ जाती। प्रातः काल उठना, छह बजे मुँह-हाथ धो, नाश्ता कर, पढ़ने बैठ जाना। छह से आठ तक अंग्रेजी, आठ से नौ तक हिसाब, नौ से साढ़े नौ तक इतिहास, फिर भोजन और स्कूल। साढ़े तीन बजे स्कूल से वापस होकर आध घण्टा आराम, चार से पाँच तक भूगोल, पाँच से छह तक ग्रामर, आध घंटा हॉस्टल के सामने ही टहलना, साढ़े छह से सात तक अंग्रेजी कम्पोजीशन, फिर भोजन करके आठ से नौ तक अनुवाद, नौ से दस तक हिन्दी, दस से ग्यारह तक विविध-विषय, फिर विश्राम।

मगर टाइम-टेबिल बना लेना एक बात है, उस पर अमल करना दूसरी बात। पहले ही दिन उसकी अवेहलना शुरू हो जाती। मैदान की वह सुखद हरियाली, हवा के हल्के-हल्के झोंके, फुटबाल की तरह उछलकूद, कबड्डी के वह दाँव-घात, वॉलीवाल की वह तेजी और फुरती, मुझे अज्ञात और अनिवार्य रूप से खींच ले जाती और वहाँ जाते ही मैं सब कुछ भूल जाता। वह जानलेवा टाइम-टेबिल, आँखफोड़ पुस्तकें किसी को याद न रहतीं और भाई साहब को नसीहत और फजीहत का अवसर मिल जाता। मैं उनके साये से भागता, उनकी आँखों से दूर रहने की चेष्टा करता, कमरे में इस तरह दबे पाँव आता कि उन्हें खबर न हो। उनकी नजर मेरी ओर उठी और मेरे प्राण निकले। हमेशा सिर पर एक नंगी तलवार-सी लटकती मालूम होती। फिर भी जैसे मौत और विपत्ति के बीच भी आदमी मोह और माया के बन्धन में जकड़ा रहता है, मै फटकार और घुड़कियाँ खाकर भी खेल-कूद का तिरस्कार नहीं कर सकता।

सालाना इम्तहान हुआ। भाई साहब फेल हो गए, मैं पास हो गया और दरजे में प्रथम आया। मेरे और उनके बीच में केवल दो साल का अन्तर रह गया। जी में आया, भाई साहब को आड़े हाथों लूँ आपकी वह घोर तपस्या कहाँ गई? मुझे देखिए, मजे से खेलता भी रहा और दरजे में अव्वल भी हूँ। लेकिन वह इतने दुखी और उदास थे कि मुझे उनसे दिली हमदर्दी हुई और उनके घाव पर नमक छिड़कने का विचार ही लज्जास्पद जान पड़ा। हाँ, अब मुझे अपने ऊपर कुछ अभिमान हुआ और आत्मसम्मान भी बढ़ा। भाई साहब का वह रौब मुझ पर न रहा। आज़ादी से खेलकूद में शरीक होने लगा। दिल मजबूत था। अगर उन्होंने फिर फजीहत की, तो साफ कह दूँगा-आपने अपना खून जलाकर कौन-सा

तीर मार लिया? मैं तो खेलते-कूदते दरजे में अव्वल आ गया। ज़बान से यह हेकड़ी जताने का साहस न होने पर भी मेरे रंग-ढंग से साफ ज़ाहिर होता था कि भाई साहब का वह आतंक मुझ पर नहीं था। भाई साहब ने इसे भाँप लिया उनकी सहज-बुद्धि बड़ी तीव्र थी और एक दिन जब मैं भोर का सारा समय गुल्ली-डंडे की भेंट करके ठीक भोजन के समय लौटा तो भाई साहब ने मानो तलवार खींच ली और मुझ पर टूट पड़े-देखता हूँ, इस साल पास हो गए और दरजे में अव्वल आ गए, तो तुम्हें दिमाग हो गया है; मगर भाईजान, घमंड तो बड़े-बड़े का नहीं रहा, तुम्हारी क्या हस्ती है ? इतिहास में रावण का हाल तो पढ़ा ही होगा। उसके चरित्र से तुमने कौन-सा उपदेश लिया? या यों ही पढ़ गए? महज इम्तहान पास कर लेना कोई चीज़ नहीं, असल चीज़ है- बुद्धि का विकास। जो कुछ पढ़ो, उसका अभिप्राय समझो। रावण भूमण्डल का स्वामी था। ऐसे राजाओं को चक्रवर्ती कहते हैं। आजकल अंग्रेजों के राज्य का विस्तार बहुत बढ़ा हुआ है; पर इन्हें चक्रवर्ती नहीं कह सकते। संसार में अनेकों राष्ट्र अंग्रेज़ों का आधिपत्य स्वीकार नहीं करते, बिलकुल स्वाधीन हैं। रावण चक्रवर्ती राजा था, संसार के सभी महीप उसे कर देते थे। बड़े-बड़े देवता उसकी गुलामी करते थे। आग और पानी के देवता भी उसके दास थे; मगर उसका अन्त क्या हुआ? घमंड ने उसका नामो-निशान तक मिटा दिया, कोई उसे एक चुल्लू पानी देनेवाला भी न बचा। आदमी और जो कुकर्म चाहे करे, पर अभिमान न करे, इतराये नहीं। अभिमान किया, और दीन-दुनिया दोनों से गया। शैतान का हाल भी पढ़ा ही होगा। उसे यह अभिमान हुआ था कि ईश्वर का उससे बढ़कर सच्चा भक्त कोई है ही नहीं! अंत में यह हुआ कि स्वर्ग से नरक में ढकेल दिया गया। शाहेरूम ने भी एक बार अहंकार किया था। भीख माँग-माँगकर मर गया। तुमने तो अभी केवल एक दरजा पास किया है, और अभी से तुम्हारा सिर फिर गया, तब तो तुम आगे पढ़ चुके। यह समझ लो कि तुम अपनी मेहनत से नहीं पास हुए, अन्धे के हाथ बटेर लग गई। मगर बटेर केवल एक बार हाथ लग सकती है, बार-बार नहीं लग सकती। कभी-कभी गुल्ली-डंडे में भी अंधा-चोट निशाना पड़ जाता है। इससे कोई सफल खिलाड़ी नहीं हो जाता। सफल खिलाड़ी वह है, जिसका कोई निशाना खाली न जाए। मेरे फेल होने पर मत जाओ। मेरे दरजे में आओगे, तो दाँतों पसीना आ जाएगा, जब अलजबरा और ज्यॉमेट्री के लोहे के चने चबाने पड़ेंगे, और इंग्लिस्तान का इतिहास पढ़ना पड़ेगा। बादशाहों के नाम याद रखना आसान नहीं। आठ-आठ हेनरी ही गुजरे हैं। कौन-सा कांड किस हेनरी के समय में हुआ, क्या यह याद कर लेना आसान समझते हो? हेनरी सातवें की जगह हेनरी आठवाँ लिखा और सब नम्बर गायब! सफाचट। सिफर भी न मिलेगा, सिफर भी! हो किस खयाल में? दरजनों तो जेम्स हुए हैं, दरजनों विलियम, कोड़ियों चार्ल्स! दिमाग़ चक्कर खाने लगता है। आँधी रोग हो जाता है। इन अभागों को नाम भी न जुड़ते थे। एक ही नाम के पीछे दोयम, सोयम, चहारुम, पंजुम लगाते चले गए। मुझसे पूछते, तो दस लाख नाम बता देता और ज्यॉमेट्री तो बस खुदा की पनाह! अ ब ज की जगह अ ज ब लिख दिया और सारे नम्बर कट गए।

कोई इन निर्दयी भुमतहिनों से नहीं पूछता कि आखिर अ ब ज और अ ज ब में क्या फर्क है, और व्यर्थ की बात के लिए क्यों छात्रों का खून करते हो? दाल-भात-रोटी या भात-दाल-रोटी खाई, इसमें क्या रखा है, मगर इन परीक्षकों को क्या परवाह! वे तो वही देखते हैं जो पुस्तक में लिखा है। चाहते हैं कि लड़के अक्षर-अक्षर रट डालें। और इसी रटन्त का नाम शिक्षा रख छोड़ा है। और आखिर इन बे-सर-पैर की बातों के पढ़ने से फायदा? इस रेखा पर वह लम्ब गिरा दो, तो आधार लम्ब से दुगुना होगा। पूछिए, इससे प्रयोजन? दुगुना नहीं, चौगुना हो जाए, या आधा ही रहे, मेरी बला से; लेकिन परीक्षा में पास होना है, तो यह सब खुराफात याद करनी पड़ेगी। कह दिया 'समय की पाबन्दी' पर एक निबन्ध लिखो, जो चार पन्नों से कम न हो। अब आप कॉपी सामने खोले, कलम हाथ में लिए उसके नाम को रोइए। कौन नहीं जानता कि समय की पाबन्दी बहुत अच्छी बात है, इससे आदमी के जीवन में संयम आ जाता है, दूसरों का उस पर स्नेह होने लगता है और उसके कारोबार में उन्नति होती है, लेकिन इस जरा-सी बात पर चार पन्ने कैसे लिखें। जो बात एक वाक्य में कही जा सके, उसे चार पन्नों में लिखने की जरूरत? मैं तो इसे हिमाकत कहता हूँ। यह तो समय की किफ़ायत नहीं; बल्कि उसका दुरुपयोग है कि व्यर्थ में किसी बात को ठूँस दिया जाए। हम चाहते हैं, आदमी को जो कुछ कहना हो, चटपट कह दे, अपनी राह ले। मगर नहीं, आपको चार पन्ने रँगने पड़ेंगे; चाहे जैसे लिखिए। और पन्ने भी पूरे फुलस्केप के आकार के। यह छात्रों पर अत्याचार नहीं तो और

क्या है? अनर्थ तो यह है कि कहा जाता है, संक्षेप में लिखो। समय की पाबन्दी पर संक्षेप में एक निबन्ध लिखो, जो चार पन्नों से कम न हो। ठीक! संक्षेप में तो चार पन्ने हुए, नहीं शायद सौ-दो सौ पन्ने लिखवाते। तेज़ भी दौड़िए और धीरे-धीरे भी। उलटी बात है या नहीं? बालक भी इतनी-सी बात समझ सकता है, लेकिन इन अध्यापकों को इतनी तमीज़ भी नहीं। उस पर दावा है कि हम अध्यापक हैं। मेरे दरजे में आओगे लाला, तो ये सारे पापड़ बेलने पड़ेंगे और तब आटे-दाल का भाव मालूम होगा। इस दरजे में अव्वल आ गए हो, तो ज़मीन पर पाँव नहीं रखते। इसलिए मेरा कहना मानिए। लाख फेल हो गया हूँ, लेकिन तुमसे बड़ा हूँ, संसार का मुझे तुमसे कहीं ज़्यादा अनुभव है। जो कुछ कहता हूँ, उसे गिरह बाँधिए, नहीं पछताइएगा।

स्कूल का समय निकट था, नहीं ईश्वर जाने यह उपदेश-माला कब समाप्त होती। भोजन आज मुझे निःस्वाद-सा लग रहा था। जब पास होने पर यह तिरस्कार हो रहा है, तो फेल हो जाने पर शायद प्राण ही ले लिए जाएँ। भाई साहब ने अपने दरजे की पढ़ाई का जो भयंकर चित्र खींचा था, उसने मुझे भयभीत कर दिया। स्कूल छोड़कर घर नहीं भागा, यही ताज्जुब है; लेकिन इतने तिरस्कार पर भी पुस्तकों में मेरी अरुचि ज्यों-की-त्यों बनी रहीं। खेल-कूद का कोई अवसर हाथ से न जाने देता। पढ़ता भी, मगर बहुत कम, बस इतना ही कि रोज का टास्क पूरा हो जाए और दरजे में ज़लील न होना पड़े। अपने ऊपर जो विश्वास पैदा था, वह फिर लुप्त हो गया और फिर चोरों का-सा जीवन कटने लगा।

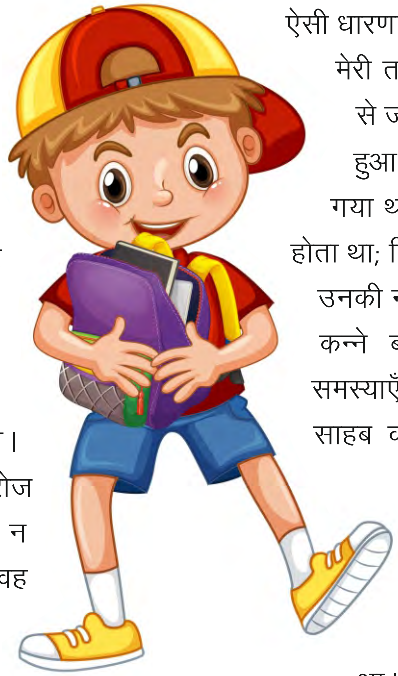

फिर सालाना इम्तहान हुए, और कुछ ऐसा संयोग हुआ कि मैं फिर पास हुआ और भाई साहब फेल हो गए। मैंने बहुत मेहनत नहीं की, पर न जाने कैसे दरजे में अव्वल आ गया। मुझे खुद अचरज हुआ। भाई साहब ने प्राणांतक परिश्रम किया। कोर्स का एक-एक शब्द चाट गए थे, दस बजे रात तक इधर, चार बजे भोर से उधर, छह से साढ़े नौ तक स्कूल जाने के पहले। मुद्रा कांतिहीन हो गई थी; मगर बेचारे फेल हो गए। मुझे उन पर दया आती थी! नतीजा सुनाया गया, तो वह रो पड़े और मैं भी रोने लगा। अपने पास होने की खुशी आधी हो गई! मैं भी फेल हो गया होता, तो भाई साहब को इतना दुःख न होता, लेकिन विधि की बात कौन टाले?

मेरे और भाई साहब के बीच में अब केवल एक दरजे का अन्तर और रह गया। मेरे मन में एक कुटित भावना उदय हुई कि कहीं भाई साहब एक साल और फेल हो जाएँ, तो मैं उनके बराबर हो जाऊँ, फिर वह किस आधार पर मेरी फजीहत कर सकेंगे, लेकिन मैंने इस कमीने विचार को दिल से बलपूर्वक निकाल डाला। आखिर वह मुझे मेरे हित के विचार से ही तो डाँटते हैं। मुझे इस वक्त अप्रिय लगता है अवश्य, मगर वह शायद उनके उपदेशों का ही असर हो कि मै दनादन पास हो जाता हूँ और इतने अच्छे नम्बरों से।

अब भाई साहब बहुत कुछ नर्म पड़ गए थे। कई बार मुझे डाँटने का अवसर पाकर भी उन्होंने धीरज से काम लिया। शायद अब वह खुद समझने लगे थे कि मुझे डाँटने का अधिकार उन्हें नहीं रहा, या रहा भी, तो बहुत कम। मेरी स्वच्छन्दता भी बढ़ी। मैं उनकी सहिष्णुता का अनुचित लाभ उठाने लगा। मुझे कुछ ऐसी धारणा हुई कि मैं पास हो ही जाऊँगा, पढ़ूँ या न पढ़ूँ मेरी तकदीर बलवान है, इसलिए भाई साहब के डर से जो थोड़ा-बहुत पढ़ लिया करता था, वह भी बन्द हुआ। मुझे कनकौए उड़ाने का नया शौक पैदा हो गया था और अब सारा समय पतंगबाज़ी की ही भेंट होता था; फिर भी मैं भाई साहब का अदब करता था, और उनकी नज़र बचाकर कनकौए उड़ाता था। माँझा देना, कन्ने बाँधना, पतंग टूर्नामेंट की तैयारियाँ आदि समस्याएँ सब गुप्त रूप से हल की जाती थीं। मैं भाई साहब को यह सन्देह न करने देना चाहता था कि उनका सम्मान और लिहाज मेरी नजरों में कम हो गया है।

एक दिन संध्या समय, हॉस्टल से दूर में एक कनकौआ लूटने बेतहाशा दौड़ा जा रहा था। आँखें आसमान की ओर थीं और मन उस आकाशगामी पथिक की ओर, जो मन्द गति से झूमता पतंग की ओर चला आ रहा था, मानो कोई आत्मा स्वर्ग से निकलकर विरक्त मन से नए संस्कार ग्रहण करने आ रही हो। बालकों की पूरी सेना लग्गे और झाड़दार बॉस लिए इसका स्वागत करने को दौड़ी आ रही थी। किसी को अपने आगे-पीछे की खबर न थी। सभी मानो उस पतंग के साथ ही आकाश में उड़ रहे थे, जहाँ सब कुछ समतल है-न मोटरकारें हैं, न ट्राम, न गाड़ियाँ।

सहसा भाई साहब से मेरी मुठभेड़ हो गई, जो शायद बाज़ार से लौट रहे थे। उन्होंने वहीं हाथ पकड़ लिया और उग्र भाव से बोले-इन बाज़ारी लौंडों के साथ धेले के कनकौए के लिए दौड़ते तुम्हें शर्म नहीं आती? तुम्हें इसका भी कुछ लिहाज नहीं कि अब नीची जमाअत में नहीं हो; वल्कि आठवीं जमाअत में आ गए हो

और मुझसे केवल एक दरजा नीचे हो। आखिर आदमी को कुछ तो अपनी पोजीशन का खयाल करना चाहिए। एक जमाना था कि लोग आठवाँ दरजा पास करके नायब तहसीलदार हो जाते थे। मैं कितने ही मिडिलचियों को जानता हूँ, जो आज अव्वल दरजे के डिप्टी मैजिस्ट्रेट या सुपरिंटेंडेंट हैं। कितने ही आठवीं जमाअतवाले हमारे लीडर और समाचारपत्रों के सम्पादक हैं। बड़े-बड़े विद्वान उनकी मातहती में काम करते हैं। और तुम उसी आठवें दरजे में आकर बाज़ारी लौंडों के साथ कनकौए के लिए दौड़ रहे हो ? मुझे तुम्हारी इस कमअक्ली पर दुःख होता है। तुम ज़हीन हो, इसमें शक नहीं, लेकिन वह ज़ेहन किस काम का, जो हमारे आत्म-गौरव की हत्या कर डाले। तुम अपने दिल में समझते होंगे, मैं भाई साहब से महज एक दरजा नीचे हूँ, और अब उन्हें मुझको कुछ कहने का हक नहीं, लेकिन यह तुम्हारी गलती है। तुमसे पाँच साल बड़ा हूँ और चाहे आज तुम मेरी ही जमाअत में आ जाओ-और परीक्षकों का यही हाल है; तो निस्सन्देह अगले साल तुम मेरे समकक्ष हो जाओगे और शायद एक साल बाद मुझसे आगे भी निकल जाओ-लेकिन मुझमें और तुममें जो पाँच साल का अन्तर है, उसे तुम क्या, खुदा भी नहीं मिटा सकता। मैं तुमसे पाँच साल बड़ा हूँ और हमेशा रहूंगा! मुझे दुनिया का और जिन्दगी का जो तजरुबा है, तुम उसकी बराबरी नहीं कर सकते, चाहे तुम एम.ए. और डी.लिट्. और डी.फिल. ही क्यों न हो जाओ। समझ किताबें पढ़ने से नहीं आती, दुनिया देखने से आती है। हमारी अम्माँ ने कोई दरजा नहीं पास किया, और दादा भी शायद पाँचवीं-छठी जमाअत के आगे नहीं गए, लेकिन हम दोनों चाहे सारी दुनिया की विद्या पढ़ लें, अम्माँ और दादा को हमें समझने और सुधारने का अधिकार हमेशा रहेगा। केवल इसलिए नहीं कि वे हमारे जन्मदाता हैं, बल्कि इसलिए कि उन्हें दुनिया का सबसे ज्यादा तजुरबा है और रहेगा। अमेरिका में किस तरह की राज-व्यवस्था है, और आठवें हेनरी ने कितने ब्याह किये और आकाश में कितने नक्षत्र हैं ये बातें चाहे उन्हें न मालूम हों, लेकिन हजारों ऐसी बातें हैं, जिनका ज्ञान उन्हें हमसे और तुमसे ज्यादा है। दैव न करे, आज मैं बीमार हो जाऊँ, तो तुम्हारे हाथ-पाँव फूल जाएँगे। दादा को तार देने के सिवा तुम्हें और कुछ न सूझेगा; लेकिन तुम्हारी जगह दादा हों, तो किसी को तार न दें, न घबराएँ, न बदहवास हों। पहले खुद मरज पहचान कर इलाज करेंगे, उसमें सफल न हुए, तो किसी डॉक्टर को बुलाएँगे। बीमारी तो खैर बड़ी चीज है। हम-तुम तो इतना भी नहीं जानते कि महीने भर का खर्च महीना भर कैसे चले? जो कुछ दादा भेजते हैं, उसे हम बीस-बाईस तक खर्च कर डालते हैं, और फिर पैसे-पैसे को मुहताज हो जाते हैं। नाश्ता बन्द हो जाता है, धोबी और नाई से मुँह चुराने लगते हैं, लेकिन जितना आज हम और तुम खर्च कर रहे हैं, उसके आधे में दादा ने अपनी उम्र का बड़ा भाग इज़्ज़त और नेकनामी के साथ निभाया है और कुटुम्ब का पालन किया है जिसमें सब मिलाकर नौ आदमी थे। अपने हेडमास्टर साहब ही को देखो। एम.ए. हैं कि नहीं; और यहीं के एम.ए. नहीं, ऑक्सफोर्ड के। एक हजार रुपये पाते हैं; लेकिन उनके घर का इन्तज़ाम कौन करता है-उनकी बूढ़ी माँ। हेडमास्टर साहब की डिग्री यहाँ आकर बेकार हो गई। पहले खुद घर का इन्तज़ाम करते थे। खर्च पूरा न पड़ता था। कर्जदार रहते थे। जब से उनकी माताजी ने प्रबन्ध अपने हाथ में ले लिया है, जैसे घर में लक्ष्मी आ गई है। तो भाईजान, यह ग़रूर दिल से निकाल डालो कि तुम मेरे समीप आ गए हो और अब स्वतंत्र हो। मेरे देखते तुम बेराह न चलने पाओगे। अगर तुम यों न मानोगे तो मैं (थप्पड़ दिखाकर) इसका प्रयोग भी कर सकता हूँ। मैं जानता हूँ, तुम्हें मेरी बातें जहर लग रही हैं...

मैं उनकी इस नई युक्ति से नत-मस्तक हो गया। मुझे आज सचमुच अपनी लघुता का अनुभव हुआ और भाई साहब के प्रति मेरे मन में श्रद्धा उत्पन्न हुई। मैंने सजल आँखों से कहा-हरगिज़ नहीं। आप जो फरमा रहे हैं, वह बिलकुल सच है और आपको उसको कहने का अधिकार है।

भाई साहब ने मुझे गले से लगा लिया और बोले- मैं कनकौए उड़ाने को मना नहीं करता। मेरा भी जी ललचाता है; लेकिन करूँ क्या? खुद बेराह चलूँ, तो तुम्हारी रक्षा कैसे करूँ? यह कर्तव्य भी तो मेरे सिर है!

संयोग से उसी वक्त एक कटा हुआ कनकौआ हमारे ऊपर से गुजरा। उसकी डोर लटक रही थी। लड़कों का एक गोल पीछे-पीछे दौड़ रहा था। भाई साहब लम्बे हैं ही। उछलकर उसकी डोर पकड़ ली और बेतहाशा हॉस्टल की तरफ दौड़े। मैं पीछे-पीछे दौड़ रहा था।

—साभार
प्रेमचंद

हिंदी साहित्य में प्रेमचंद का अपना एक विशिष्ट स्थान है। इनका जन्म 31 जुलाई 1880 को बनारस के पास स्थित छोटे से गांव लमही में हुआ था। इनका पूरा नाम 'धनपत राय श्रीवास्तव' था। सबसे पहले इन्होंने 'नवाबराय' उपनाम से अपनी रचनाएं लिखी, बाद में 'प्रेमचंद' उपनाम अपनाया। इन्होंने 300 से अधिक कहानियाँ एवं अनेकों प्रसिद्ध उपन्यास लिखे हैं। इनकी मृत्यु 8 अक्टूबर 1936 को 56 वर्ष की उम्र में हुई।

श्रीमद्भगवद्गीता से प्रकट हुए सर्वकालिक नेतृत्व सिद्धान्त

नेतृत्व किसी भी संगठन, समुदाय या समाज का अतिमहत्त्वपूर्ण पहलू है। यह लोगों को समान रूप से एक सामान्य लक्ष्य प्राप्त करने के लिए प्रेरित, प्रभावित और उत्साहित करने की क्षमता है। अद्वितीय प्राचीन भारतीय धर्मग्रन्थ श्रीमद्भगवद्गीता द्वारा वीर योद्धा राजकुमार अर्जुन और उनके गुरु योगेश्वर श्रीकृष्ण के चरित्र के माध्यम से नेतृत्व की खोज की गई है। गीता, विश्वभर में अति श्रद्धापूर्वक एवं सर्वाधिक पढ़े जाने वाले धर्मग्रन्थों में से एक है, जो एक श्रेष्ठ नेतृत्वकारी के गुणों और प्रभावकारी नेतृत्व के सिद्धान्तों के संबंध में मूल्यवान अन्तर्दृष्टि प्रदान करता है।

अर्जुन, गीता का एक नायक, कुशल योद्धा और पाण्डव सेना का नेता है। प्रारम्भ में, जैसा कि श्रीमद्भगवद्गीता में उल्लेख है, उसे, उस समय एक नैतिक दुविधा का सामना करना पड़ता है, जब सिंहासन के लिए अपने ही सगे-सम्बन्धियों के विरुद्ध युद्ध का उसका आह्वान होता है। अर्जुन दुख और शंकाओं से घिर जाता है। उसे अपनी सेना को विजय की ओर ले जाने की अपनी क्षमता पर संदेह है। राज्य या भौतिक लाभ के लिए अपने ही लोगों से युद्ध करना उसे पाप लगता है। लेकिन, योगेश्वर श्रीकृष्ण अर्जुन को योग्य परामर्श देने के साथ ही उसका मार्गदर्शन करते हैं तथा नेतृत्व पर उसे मूल्यवान शिक्षा देते हैं। आइए, हम कुछ उन अति प्रासंगिक श्लोकों का अध्ययन तथा विश्लेषण करें, जो श्रीमद्भगवद्गीता में, नेतृत्व के प्रमुख सिद्धान्तों पर प्रकाश डालते हैं।

नेतृत्व का प्रथम सिद्धान्त, जो गीता से निकलता है, वह आत्म-जागरूकता के महत्त्व से जुड़ा है। इससे पूर्व कि कोई दूसरों का नेतृत्व करे, उसे पहले स्वयं को समझना होगा। अर्जुन की युद्ध के प्रति प्रारम्भिक अनिच्छा अपने कर्त्तव्य के संबंध में भ्रम और सगे-सम्बन्धियों के प्रति उसके लगाव के कारण थी। योगेश्वर श्रीकृष्ण उसे यह अनुभूति करने में सहायता करते हैं कि उसका वास्तविक कर्तव्य जगत-कल्याण के एक उच्च उद्देश्य के लिए लड़ना है और अपने परिवार के प्रति उसका लगाव स्वामित्व और अधिकार के असत्यमय विचारों पर आधारित है। अर्जुन को यह ज्ञान होता है कि एक नेतृत्वकर्ता को आत्म-जागरूक होना चाहिए और उसे अपने वास्तविक उद्देश्य और मूल्यों को समझना चाहिए।

"नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः।
उभयोरपि दृष्टोऽन्तस्त्वनयोस्तत्त्वदर्शिभिः।।"

तात्पर्य यह है, "हे अर्जुन, जो लोग बुद्धिमान हैं और जिन्होंने सत्य को जान लिया है, वे समझते हैं कि आत्मा (तो) काया, मन और इन्द्रियों से भिन्न है; वे स्वयं को शाश्वत और अविनाशी जानते हैं। इसलिए, हे अर्जुन, युद्ध करो।" (श्रीमद्भगवद्गीता, 2: 16)

यह श्लोक आत्म-जागरूकता और भौतिक काया व मन से परे जीव के वास्तविक स्वरूप (आत्मा) को समझने के महत्त्व पर प्रकाश डालता है। एक अच्छे नेतृत्वकारी को अपने कार्यों में अटल रहने के लिए अपने जीवन के वास्तविक उद्देश्य और मूल्यों की गहरी समझ होनी चाहिए।

गीता में नेतृत्व-संबंधी द्वितीय महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त अन्यों को समान रूप से एक सामान्य लक्ष्य की ओर प्रेरित और प्रोत्साहित करने की क्षमता से जुड़ा है। श्रीकृष्ण अर्जुन को एक योद्धा के रूप में उसके कर्त्तव्यों का स्मरण कराते हैं। उसे शंकाओं व भय पर नियंत्रण पाने के लिए प्रोत्साहित करते हुए दृष्टिकोण-स्पष्टता के लिए प्रेरित करते हैं। एक अच्छे नेतृत्वकारी को अपने दृष्टिकोण को स्पष्ट करने में सक्षम होना चाहिए। उसे अपने अनुयायियों को उस दृष्टिकोण की दिशा में उत्साह एवं प्रतिबद्धता के साथ कार्य करने के लिए प्रेरित करना चाहिए। योगेश्वर श्रीकृष्ण अर्जुन को **"धर्म स्थापित रहे"**, जीवन के इस सर्वप्रमुख उद्देश्य पर ध्यान केन्द्रित करते हुए अपने विचारों और कार्यों को इसके साथ अभिन्नतः सम्बद्ध रखने का परामर्श देते हैं।

**“योगस्थः कुरु कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा धनञ्जय।
सिद्ध्यसिद्ध्योः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते।।”**

अर्थात “हे अर्जुन, योग (समभाव) में स्थिर रहो। सफलता या विफलता-सम्बन्धी समस्त आसक्तियों का त्याग कर अपने कर्त्तव्य का निर्वहन करो। ऐसी समता को योग कहा जाता है। ” (श्रीमद्भगवद्गीता, 2: 48)

श्रीमद्भगवद्गीता का यह श्लोक सफलता या विफलता की स्थिति में वैराग्य और मन की समता के महत्त्व पर बल देता है। एक अच्छे नेतृत्वकारी को परिणाम की आशा से जुड़े बिना, अपने अनुयायियों को उत्साह तथा प्रतिबद्धता के साथ, कर्त्तव्य-निर्वहन द्वारा वृहद् कल्याण को समर्पित एक सामान्य लक्ष्य की ओर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करना चाहिए; उसे केवल वृहद् जन कल्याण के उद्देश्य के प्रति समर्पित होना चाहिए।

श्रीमद्भगवद्गीता में नेतृत्व का अगला प्रमुख सिद्धान्त, उदाहरण के द्वारा नेतृत्व प्रदान करना है। एक नेतृत्वकारी द्वारा जो उपदेश दिया जाता है, उसका (उसे स्वयं) पालन अवश्य करना चाहिए और, इस प्रकार, अपने अनुयायियों के लिए एक उदाहरण स्थापित करना चाहिए। योगेश्वर श्रीकृष्ण अर्जुन को एक आत्म-नियंत्रित और अनुशासित नेतृत्वकारी बनने का परामर्श देते हैं, जो न्यायपरायणता और निष्पक्षता का उदाहरण प्रस्तुत करता है। श्रीकृष्ण का सुझाव है कि राजा को इस प्रकार से कार्य करना चाहिए, जिससे प्रजा में उसका सम्मान और प्रशंसा बढ़े; उसे ईमानदार, न्यायप्रिय और दयालु होना चाहिए।

**“यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते।।”**

अर्थात “एक महापुरुष का जो आचरण होता है, सामान्य जन उसका अनुसरण करते हैं। महान व्यक्ति अपने अनुकरणीय कार्यों द्वारा जो भी मानक स्थापित करता है, उसका अनुकरण सारा विश्व करता है।'' (श्रीमद्भगवद्गीता, 3: 21)

इस श्लोक में योगेश्वर श्रीकृष्ण यह बताते हैं कि लोग महान नेतृत्वकारियों द्वारा स्वयं अपने जीवन से प्रस्तुत उदाहरणों का अनुसरण करते हैं। इसलिए, एक राजा के लिए सतर्क रहने, समाज के लिए एक आदर्श के रूप में कार्य करने तथा, साथ ही, अपनी प्रजा के लिए उच्च मानक स्थापित करने हेतु अपने उत्तरदायित्व की अनुभूति, तदनुसार कार्य करना अतिमहत्त्वपूर्ण है। श्रीमद्भगवद्गीता में नेतृत्व-संबंधी चतुर्थ उल्लेखनीय सिद्धान्त, अनुकूल एवं लचीला होने की क्षमता है। एक नेतृत्वकारी को अपरिहार्य परिवर्तित परिस्थितियों के अनुरूप ढलने में सक्षम होना चाहिए। साथ ही, उसे अपने दृष्टिकोण में लचीला होना चाहिए। योगेश्वर श्रीकृष्ण अर्जुन को युद्धभूमि की स्थिति के आधार पर अपनी रणनीति निर्धारित करने का परामर्श देते हैं। एक नेतृत्वकारी को त्वरित निर्णय लेने में सक्षम होना चाहिए और अपने दृष्टिकोण में स्फूर्तिमान होना चाहिए।

**“सन्नयासस्तु महाबाहो दुःखमाप्तुमयोगतः।
योगयुक्तो मुनिर्ब्रह्म न चिरेणाधिगच्छति।।”**

अर्थात “जो अपने कर्म के फल के प्रति अनासक्त है और भक्ति-भावना के साथ कर्म करता है, वह मुनि (चिन्तनशील) है। उस विचारवान का मन परमेश्वर में लगा होता है और उसे वह शीघ्र ही प्राप्त कर लेता है।'' (श्रीमद्भगवद्गीता, 5: 6)

एक अच्छे नेतृत्वकारी को त्वरित निर्णय लेने में सक्षम होना चाहिए और अपने दृष्टिकोण में विनम्र भी होना चाहिए। उसे किसी बाह्य कारक या कठोर मानसिकता से उस समय अप्रभावित रहना चाहिए, जब विद्यमान परिस्थितियों के अनुसार रणनीतियाँ बनाई जा रही हों।

एक नेतृत्वकारी के लिए गीता में नेतृत्व का अगला उल्लेखनीय सिद्धान्त यह है कि उसे स्वयं को अपने अनुयायियों के विश्वास और सम्मान के योग्य सिद्ध करना चाहिए। योगेश्वर श्रीकृष्ण अर्जुन को धर्म-मार्ग दिखाकर, उसे अपने वास्तविक उद्देश्य की प्राप्ति हेतु मार्गदर्शन देते हैं; साथ ही, उसका विश्वास अर्जित करते हैं। एक नेतृत्वकारी को अपने अनुयायियों का विश्वास और सम्मान अर्जित करने के लिए ईमानदार व पारदर्शी होना चाहिए, उसके कार्य भी ईमानदारीपूर्ण होने चाहिए।

**“ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति।
भ्रामयन्सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया।।”**

अर्थात ''हे अर्जुन, परमेश्वर (ब्रह्म) प्रत्येक के हृदय में स्थित हैं; ईश्वर भौतिक शक्ति से निर्मित यंत्र में बैठकर प्राणिमात्र का निर्देशन कर रहे हैं।'' (श्रीमद्भगवद्गीता, 18: 61)

यह श्लोक परमेश्वर-सर्वोच्च शक्तिमान पर भरोसा करने और उसके द्वारा निर्देशित होने के महत्त्व पर बल देता है, क्योंकि जब कोई व्यक्ति परमात्मा द्वारा निर्देशित होता है, तो वह अनैतिक कार्यों से दूर रहता है। एक श्रेष्ठ नेतृत्वकारी को, यह बारम्बार कहा जा सकता है, ईमानदारी और पारदर्शिता से कार्य करते हुए अपने अनुयायियों का विश्वास और सम्मान अर्जित करना ही चाहिए।

श्रीमद्भगवद्गीता में नेतृत्व-सम्बन्धी अगला उल्लेखनीय सिद्धान्त सहानुभूति और समावेशिता से सम्बद्ध है। योगेश्वर श्रीकृष्ण अर्जुन का प्राणिमात्र के प्रति दयालु और सहिष्णु होने का आह्वान करते हैं, भले ही उनकी पृष्ठभूमि या स्थिति कुछ भी हो:

"यो मां पश्यति सर्वत्र सर्वं च मयि पश्यति ।
तस्याहं न प्रणश्यामि स च मे न प्रणश्यति ।।"

इसका अर्थ है, "जो सर्वत्र मुझे देखता है और मुझमें ही सब कुछ देखता है, मैं कभी भी उसकी दृष्टि से दूर नहीं होता, और न ही वह कभी मेरी दृष्टि से बाहर होता है।" (श्रीमद्भगवद्गीता, 6: 30)

यह श्लोक सभी प्राणियों के मध्य समानता की अवधारणा पर प्रकाश डालता है। हम सभी एक ही दिव्य स्रोत से निकले हैं; इसलिए, हम सभी एक हैं। एक श्रेष्ठ नेतृत्वकारी को समावेशी होना चाहिए और सभी के साथ, मतभेदों की चिन्ता किए बिना, सम्मान और सहानुभूति के साथ व्यवहार करना चाहिए।

अन्त में, श्रीमद्भगवद्गीता समर्पण के महत्त्व पर बल देती है। योगेश्वर श्रीकृष्ण अर्जुन को अपने सभी कर्म उन्हें समर्पित करने का परामर्श देते हैं।

"ब्रह्मण्याधाय कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा करोति यः।
लिप्यते न स पापेन पद्मपत्रमिवाम्भसा ।।"

अर्थात "जो बिना आसक्ति के अपना कर्त्तव्य निर्वहन करता है, परिणाम को परमेश्वर को समर्पित करता है, वह पाप से उसी प्रकार अप्रभावित रहता है, जैसे कमल का पत्ता पानी से अप्रभावित रहता है।" (श्रीमद्भगवद्गीता, 5: 10)

यह श्लोक निष्ठा के साथ कार्य करने और परिणामों को सर्वोच्च सत्ता-परमेश्वर को समर्पित करने के महत्त्व पर बल देता है। एक श्रेष्ठ नेतृत्वकर्ता को परिणाम की चिन्ता किए बिना अपना कर्त्तव्य निर्वहन करना चाहिए। जब भी कोई अपने कर्मों को परमेश्वर को समर्पित करता है, तो वह अपने कर्मों के प्रति सतर्क रहता है और कर्म के वास्तविक सिद्धान्त में विश्वास करता है। अर्थात प्रत्येक कर्म का फल मिलता है और परमेश्वर भी फल देंगे।

अन्ततः, श्रीमद्भगवद्गीता नेतृत्व-संबंधी सिद्धान्तों द्वारा, उनके अति नैतिक प्रतीत होने के बाद भी, बहुमूल्य अंतर्दृष्टि प्रदान करती है। भ्रम और सन्देह से स्पष्टता और उद्देश्य-प्राप्ति तक अर्जुन की यात्रा, सामान्य से असाधारण तक, आत्म-जागरूकता, प्रेरणा, उदाहरण के द्वारा नेतृत्व, अनुकूलनशीलता और सहानुभूति, करुणा और धर्मपरायणता को सर्वोच्च मानवीय मूल्यों के रूप में प्रस्तुत करते हुए विश्वास और सम्मान अर्जित करने की अद्वितीय शिक्षा है। योगेश्वर श्रीकृष्ण का मार्गदर्शन प्रभावी नेतृत्व की एक रूपरेखा प्रदान करता है, जो आज भी प्रासंगिक है, क्योंकि वह अपरिहार्य सार्वभौमिक नैतिक मूल्यों से बँधी है, तथा ऐसे मूल्यों की अनदेखी करना मानवता के लिए आत्मघाती है।

गीता हमें सिखाती है कि सच्चा नेतृत्व केवल शक्ति और अधिकार के बारे में नहीं है, अपितु सर्वकल्याणकारी उच्च उद्देश्य की प्राप्ति एवं अन्यों को भी ऐसा करने के लिए प्रेरित करने के संबंध में है। श्रीमद्भगवद्गीता में उल्लिखित नेतृत्व के सिद्धान्तों की सर्वकालिक प्रासंगिकता है और इसे आधुनिक संदर्भ में भी लागू किया जा सकता है। किसी समुदाय, संगठन या देश का नेतृत्व करने वाला कोई भी व्यक्ति गीता में बताए गए नेतृत्व सिद्धान्तों से सीख ले सकता है, तदनुसार कार्य करते हुए भावी पीढ़ियों के लिए विरासत छोड़ सकता है।

–डॉ0 रवीन्द्र कुमार
पद्मश्री और सरदार पटेल राष्ट्रीय पुरस्कार
से सम्मानित एवं पूर्व कुलपति
मेरठ विश्वविद्यालय, मेरठ (उ0प्र0)

परं ब्रह्म परं धाम पवित्रं परमं भवान्।
पुरुषं शाश्वतं दिव्यमादिदेवमजं विभुम्।।
(श्रीमद्भगवद्गीताः 10:12)

भावार्थ

अर्जुन ने कहा– आप परम भगवान्, परम धाम, परम पवित्र, परम सत्य हैं। आप नित्य, दिव्य, आदि पुरुष, अजन्मा तथा महानतम हैं।

भाषा विमर्श

उलटबांसी

'उलटबांसी' भारतीय चिंतन परंपरा का शब्द है यह गूढ़ एवं रहस्यमयी बातों को चमत्कारिक ढंग से व्यक्त करने की एक शैली है। इस शैली का प्रयोग नाथपंथियों योगियों और बौद्ध सिद्धों की वाणियों में भी मिलता है। योगियों की दृष्टि में योग-मत के अतिरिक्त अन्य सभी मतों की बातें उल्टी हैं। सूक्ष्म को पहले स्थान मिलना चाहिए स्थूल को बाद में। जो श्रेष्ठ एवं महत्वपूर्ण है उसका उल्लेख पहले होना चाहिए और जो अपेक्षाकृत कम महत्वपूर्ण है उसका उल्लेख बाद में। किंतु दुनिया का क्रम उलटा है। दुनिया का क्रम है- धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष;ब्रह्मचर्य-गृहस्थ-वानप्रस्थ-सन्यास; श्रृंगार-हास्य-करुण-रौद्र-वीभत्स-भयानक-अद्भुत-शांत; पृथ्वी-जल-तेज-वायु-आकाश। यह सारा क्रम उलटा है। दुनिया की इस उल्टी रीति की ओर संकेत करने के लिए ही योगियों ने उलटबांसी शैली का प्रयोग किया। हिंदी में कबीर ने 'उलटबांसी' शैली का सबसे ज्यादा प्रयोग किया है। उन्होंने योगियों से ही इस शैली को ग्रहण किया है। जिस प्रकार योगियों की दृष्टि में दुनिया की रीति उल्टी है, उसी प्रकार दुनिया की दृष्टि में योगियों की बातें उल्टी प्रतीत होती हैं। इसलिए उलटबांसियों में विरोध लक्षित होता है किंतु वास्तव में विरोध होता नहीं है। संतों की मान्यताओं को दृष्टि में रखकर संकेतार्थ ग्रहण करने से विरोध का परिहार स्वतः हो जाता है।

प्रचलित शब्दों के वाच्यार्थो पर निर्भर रहकर कबीर की उलटबांसियों को नहीं समझा जा सकता। इसके लिए सिद्धों और नाथपंथियों की साधना संबंधी शब्दावली निश्चित पारिभाषिक अर्थों तथा प्रतीकयोजना के अभिप्रायों को जानना आवश्यक होता है। इसलिए इन रचनाओं के प्रसंग में यह कहा जाता है कि ये 'संधा भाषा' में रचित हैं अर्थात् रहस्य से आवृत्त अभिप्रायों को व्यंजित करने वाली भाषा में हैं। कबीर की वाणियों में व्यवहृत 'संधा भाषा' की प्रणाली सिद्धों और नाथों की 'संघा भाषा' जैसी ही है। ऐसा प्रतीत होता है कि शास्त्र के विशेषज्ञ पंडितों की परीक्षा लेने तथा उनके अहंकार को चुनौती देने के उद्देश्य से ही अनेक उलटबांसियों की रचना की गई थी। उदाहरण के लिए निम्नलिखित उलटबांसी द्रष्टव्य हैं–

ऐसा अद्भुत मेरा गुरु कथ्या, मैं रहा उमेषै।
मूसा हस्ती सौं लड़े, कोई बिरला पेषै।।
मूसा पैठा बांबि मैं, लारे सांपिनि धाई।
उलटि मूसै सांपिनि गिली, यहु अचरज भाई।।
चींटी परबत उखारिया, ले राख्यौ चौड़े।
मुर्गी मिनकी सों लड़ै, झल पांनी दौड़े।।
सुरही चूषै बछतलि, बछा दूध उतारै।
ऐसा नवल गुंनी भया, सार दूलहिं मारै।।
भील लुका बन बीझ मैं ससा सर मारै।
कहैं कबीर ताहि गुर करौं, जो या पदहिं बिचारै।। ।

इस उलटबांसी द्वारा मूलतः यह कहने का प्रयत्न किया गया है कि सामान्य जीव यद्यपि विषयों के वश में रहता है पर जो सिद्ध साधक होता है वह विषयों पर नियंत्रण कर लेता है। कबीर कहते हैं- मेरे गुरु ने एक अद्भुत सत्य का कथन किया है; मैं अचरज में पड़ गया। अचरज की बात यह है कि चूहा हाथी से लड़ पड़ा (अर्थात साधक माया को पछाड़ बैठा)। यह घटना कोई बिरला ही जान पाया है। साधक (चूहा) विषयों (बांबी) में पैठ गया और विषय रूपी सर्पिणी उसके पीछे पड़ गई। किंतु अचरज की घटना तो यह है कि चूहे ने पलट कर सांप को निगल लिया अर्थात् साधक विषयों को वशीभूत कर लेता है। साधक की अंतःवृत्ति (चींटी) ऐसी होती है कि वह विषय रूपी पर्वत को उखाड़ फेंकती है और उसे गड्ढे में फेंक देती है। साधक (मुर्गी) वासना (बिल्ली) से लड़ पड़ता है और विषयासक्ति की अग्नि भक्ति के जलाशय का रूप ले लेती है। गाय बछड़े के नीचे भाग को मुंह से चूसती है अर्थात् भक्ति से आत्मतत्व की प्राप्ति होती है और आत्मतत्व बोध (बछड़ा) से आनंद (दूध) की सृष्टि होती है। साधक का चित्त (नेवला) ऐसा गुणी हो गया है कि वह वासना से उन्मत्त सिंह को मार डालता है। मोह रूपी शिकारी डर के मारे सघन वन में छिप जाता है और साधक (खरगोश) उस पर ज्ञान के बाण से प्रहार करता है। कबीर का कहना है कि जो इस पद के अर्थ को समझ कर बता देगा, उसे मैं अपने गुरु के रूप में स्वीकार कर लूंगा। कबीर की एक दूसरी उलटबांसी है :–

एक अचंभा देखा रे भाई। ठाढ़ा सिंह चरावै गाई।।
पहले पूत पीछे भई माई। चेला कै गुरु लागै पाई।।

जल की मछली तरवरि ब्याई, पकड़ि बिलैया मुरगै खाई।
बैलई डारि गूनि घर आई; कूता कुहं लै गई बिलाई।।

उपर्युक्त उलटबांसी में सिंह, ज्ञान का प्रतीक है और गाय इंद्रियों का। ज्ञान ही इंद्रियों को नियंत्रित करता है। इसी अर्थ में सिंह गाय को चराता है। इसी प्रकार पूत 'जीवात्मा' का और माई 'माया' का प्रतीक है। जीव पहले शुद्ध और मुक्त होता है, बाद में माया उसे अपने प्रभाव में ले लेती है। 'चेला' शुद्ध चित्त का प्रतीक है, 'गुरु' अहंकार युक्त मन का। अहंकारी मन शुद्ध और सहज होकर ही प्रतिष्ठा प्राप्त कर सकता है। अहंकार त्याग ही चेला के पैर लगना है। जल की मछली से तात्पर्य सांसारिक प्रवृत्ति से है और तरुवर उच्च चेतना या ब्रह्मस्थान का द्योतक है। सांसारिक प्रवृत्ति को अंतर्मुखी करके ब्रह्मस्थान तक पहुंचा देना हो योग साधना का लक्ष्य है। इसी अर्थ में जल की मछली तरुवर से संबंध स्थापित करती है। 'बिलैया' कुबुद्धि का वाचक है और मुर्ग चेतनमन का। चेतनमन कुबुद्धि को नष्ट कर देती है, इसी अर्थ में 'मुर्गा' बिलैया को पकड़कर खा जाता है। 'बैल' इंद्रियों के वश में पड़े हुए मन का द्योतक है 'गूनि' सुरति का व्यंजक है। और 'घर' ईश्वरोन्मुख स्थिति का। सुरति सांसारिक या इंद्रिय ग्रस्त मन को त्यागकर शब्दब्रह्म में लीन हो जाती है। इसी रूप में बैल को छोड़कर गूनी घर आ जाता है। कुत्ता 'काल' का द्योतक है। 'लै' ध्यान वाचक है बिलाई विलीन होने का अर्थ प्रकट करता है। काल का प्रभाव ध्यान की अवस्था में समाप्त हो जाता है और योगी यह मानता है कि समाधिस्थ होकर वह कालातीत हो जाता है। इसी अर्थ में कुत्ते को बिलाई ले जाती है। इस प्रकार प्रतीकार्थों को ग्रहण करने से विरोध का परिहार हो जाता है और हम उलटबांसियों में निहित गूढ़ार्थ ग्रहण कर लेते हैं।

कबीर को संघा भाषा में रचित उलटबांसियों की यह परंपरा सिद्धों और नाथों से मिली थी। उदाहरण के लिए सिद्धों की बानियों के संग्रह 'चर्यापद' तथा गोरखनाथ की बानियों के संग्रह 'गोरखबानी' को देखा जा सकता है। सिद्ध डिंडिपा कहते है बैल ब्याता है, गाय बांझ रहती है और बछड़ा तीनों समय दुहा जाता है। इसी तरह गोरखनाथ एक पद में कहते है कि जल में आग लगी, मछली पर्वत पर चढ़ गई और खरगोश जल में रहता है। ये सारे शब्द प्रतीक हैं जो सातवीं-आठवीं सदी से ही योगियों की साधना में अन्य अर्थ की व्यंजना के लिए उपयोग में लाये जाते रहे हैं। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने 'कबीर' नामक पुस्तक के एक अध्याय ''योगपरक रूपक और उलटबांसियां'' में ऐसे शब्दों की तालिका प्रस्तुत की है। महामहोपाध्याय पंडित विधुशेखर भट्टाचार्य की यह मान्यता है कि संधा भाषा मूलतः संस्कृत 'संध्याय' शब्द का अपभ्रष्ट रूप है जिसका अर्थ होता है अभिप्राय युक्त भाषा। परन्तु हिंदी के अनेक विद्वानों ने इसका रूप बदल कर 'संध्या भाषा' कर दिया और गोधूलि बेला जैसी स्थिति के अर्थ में अथवा अंधेरे और प्रकाश के बीच की अस्पष्ट स्थिति के अर्थ में इसे प्रचारित कर दिया।

आधार ग्रंथ:

1. कबीर मीमांसा, रामचंद्र तिवारी।
2. कबीर, हजारी प्रसाद द्विवेदी।
3. कबीर ग्रंथावली, श्याम सुंदर दास।
4. अकथ कहानी प्रेम की कबीर और उनका समय, पुरूषोत्तम अग्रवाल

—साभार
डॉ. अमरनाथ

सुधी आलोचक और प्रतिष्ठित भाषाविद् के रूप में ख्याति प्राप्त डॉ. अमरनाथ का जन्म गोरखपुर जनपद (संप्रति महाराजगंज) के रामपुर बुजुर्ग नामक गाँव में सन 1954 में हुआ था। इनकी प्रमुख रचनाएं– नारी का मुक्ति संघर्ष, आचार्य रामचंद्र शुक्ल और परवर्ती आलोचना, आचार्य रामचंद्र शुक्ल का काव्य चिंतन, समकालीन शोध के आयाम, हिंदी भाषा का समाजशास्त्र, हिंदी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली, हिंदी के अंत में हिंदी आदि हैं।

पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति।
तदहं भक्त्युपहृतमश्नामि प्रयतात्मनः।।
(श्रीमद्भगवद्गीताः 9:26)

भावार्थ

यदि कोई प्रेम तथा भक्ति के साथ मुझे पत्र, पुष्प, फल या जल प्रदान करता है, तो मैं उसे स्वीकार करता हूँ।

बाल बत्तीसी

गर्म पहाड़

''अब हम नानी के घर नहीं जा रहे हैं।'' अवनि हाँफते हुए अपने बड़े भाई अथर्व को बताने पहुँची। ''शिमला में एक हफ्ते से नलों में पानी नहीं आ रहा। फेसबुक पर भी बाहर से लोगों को शिमला आने के लिए मना कर दिया गया है।''

अथर्व बोला, ''पहाड़ों की रानी शिमला का यह हाल हो गया। इस बार तो मामाजी के होटल को भी बहुत नुकसान हो जाएगा। सारे होटल और रेस्तराँ वाले महीनों से गर्मी का इंतज़ार करते हैं कि टूरिस्ट आएँ और आमदनी हो।'' नाश्ते की टेबल पर अवनि मचल रही थी, ''मुझे तो कालकाजी से ट्रेन से शिमला जाना है।'' मम्मी ने उसे अखबार की फोटो दिखाई, जिसमें लंबी कतारों में लोग प्लास्टिक के डिब्बे-बोतलें लिए पानी मिलने का इंतज़ार कर रहे थे। यह भी समाचार था कि शिमला के पास जंगलों में भीषण आग को बुझाने के लिए एयरफोर्स के हवाई जहाज़ ने पंजाब में नदी से पानी उठाया था।

''अरे नानी के घर में आग लग जाती तो पानी कहाँ से आता? नानी कैसे नहाएँगी? कैसे कपड़े धुलेंगे? नानी के सारे फूल-पौधे तो बिना पानी के मर जाएँगे। ऐसा क्यों हो गया?'' अवनि ने प्रश्नों की बौछार लगा दी।

मम्मी ने उसे प्यार से समझाया, ''सभी हिल स्टेशन पर पानी की कमी होती जा रही है। बिना योजना के शहर बढ़ रहे हैं, पेड़ कट रहे हैं और बरसात के पैटर्न और जलवायु में बदलाव हो रहा है। अम्मा बताती हैं कि अंग्रेजों ने 25,000 लोगों के लिए शिमला शहर बनाया था और आज दो लाख लोग रहते हैं, एक लाख पर्यटक भी आ जाते हैं।''

अथर्व बोला, ''पर मम्मी। यह योजना और पेड़ काटना, यह सब तो मनुष्य ही करता है। हम अपना ही नुकसान क्यों कर रहे हैं?''

चारों तरफ हरे-हरे ऊँचे पहाड़ थे। पहाड़ी रोड करीब सूखी हुई नदी के साथ-साथ घूमती जा रही थी। पापा बता रहे थे कि 10 साल पहले जब वे इसी मौसम में अल्मोड़ा गए थे तब तो नदी में बहुत पानी होता था। शिमला के स्थान पर अब अल्मोड़ा जाएँगे।

सड़क के किनारे वाले घरों में लंबे बालों वाला एक भोटिया कुत्ता दिखा। घरों के छज्जों और लेज पर पुराने तेल के कनस्तर और प्लास्टिक की खाली बोतलों में फ्यूशीमा और एन्ड्रीआ के पौधे लगे दिखे।

सड़क के एक मोड़ के बाद सामने पहाड़ी पर अल्मोड़ा शहर दिखा। जहाँ तक नज़र जाती रंग-बिरंगे मकान-गुलाबी, पीले, बैंगनी, नारंगी, हरे, नीले। लगता जैसे गुड़िया के शहर का पहाड़ हो। घुमावदार चढ़ाई से गाड़ी शहर में पहुंची।

''अरे यहाँ भी लोग छाते लगाते हैं?'' अवनि ने आश्चर्य से पूछा। ''ये तो पहाड़ हैं, यहाँ तो ठंडक होती है।'' हैंडपंप से पानी निकाल रही एक औरत छाता लगाए थी। बाजार में जा रहे अनेक लोग धूप से बचने के लिए भी छाता लगाए थे। वे बाहर से आए पर्यटक नहीं थे, बल्कि स्थानीय लोग थे।

वातानुकूलित गाड़ी में तो पता ही नहीं चला कि बाहर कितनी गर्मी है। होटल पहुंचते ही वेटर ने स्टैंडिंग फैन चालू कर दिया। बोला, ''साहब छत का पंखा नहीं है, क्योंकि जब होटल बना था तव इतनी गर्मी नहीं पड़ती थी। अब तो पहाड़ गर्म हो गए।''

अवनि तुरंत टी.वी. ऑन करने लगी तो अथर्व ने रोका, ''अरे इतनी दूर टी.वी. देखने थोड़ी न आए हैं। यह तो दिल्ली में ही देख सकते थे। आओ बाहर चलते हैं।'' रिसेप्शन के पास से एक पगडंडी व्यू प्वाइंट को जाती थी। वहाँ का दृश्य तो अति सुंदर था। दूर-दूर तक करीब पाँच पहाड़ियों की श्रृंखलाएँ एक के पीछे एक दिख रही थीं। सामने की पहाड़ी पर पट्टी-पट्टी जैसे खेत थे। ऊँचे-ऊँचे देवदार के वृक्ष थे। एक वृक्ष पर अत्यंत सुंदर लाल फूल थे। वहाँ काम कर रहे एक व्यक्ति, जो कि माली था, ने बताया कि यह बुरांश का फूल है, जिससे शरबत बनता है। अथर्व ने माली से पूछा कि वह प्लास्टिक की बोतलों और नमकीन के खाली पैकेटों का ढेर क्यों लगा रहा है। माली ने बताया कि अनेक लोग इन्हें रास्ते के दोनों तरफ फेंक जाते हैं, इसलिए अब पहाड़ों में अधिकतर लोग इन्हें इकट्ठा कर जला देते हैं।

जब अथर्व ने यह बात पापा-मम्मी को बताई तो उन्होंने तय किया कि हम होटल के आर.ओ. का पानी पिएँगे और प्लास्टिक की बोतल के कूड़े को कम करेंगे। घर पर भी तो आर.ओ. फिल्टर का ही पानी पीते हैं।

समीप के कसार देवी मंदिर की चढ़ाई में सब हाँफ गए, और मेहनत करने से सबके चेहरे गुलाबी हो गए। पहाड़ की स्वच्छ हवा का आनंद ही अलग था। दूर-दूर तक घाटियाँ, धुँधले पहाड़ दिख रहे थे, परंतु प्रख्यात नंदा देवी, नंदा कोट और चौखम्बा की बर्फ से ढकी पहाड़ियाँ तो जैसे अंतर्ध्यान हो गई थीं। सभी बहुत मायूस हो गए। पुजारीजी ने कहा, ''इस बार तो दो महीने से बर्फ की हिमालय की श्रृंखला नहीं दिखी। बादल तो कभी-कभी होते हैं, परंतु असंख्य स्थानों पर कूड़ा जलाने व कुछ लापरवाह लोगों की वजह से जंगल में आग लग जाने के कारण अब तो सदैव धुंध-सी रहती है।''

पुजारीजी बोले, ''मैंने 50 वर्षों में बहुत परिवर्तन देखा है। इस पहाड़ी क्षेत्र कुमाऊँ का नाम 'कुर्मावत' यानी 'कुर्मावतार'-ईश्वर के कछुए के अवतार से मिला है। मनुष्य के लालच और ध्यान न देने से यह देव भूमि नष्ट होती जा रही है।'' होटल पहुँच कर मम्मी ने कहा, ''अब सुबह तक के लिए सब अपना मोबाइल अलग रख देंगे। हम आपस में बात करने के स्थान पर लगातार अन्य लोगों के व्हाट्स एप मेसेज और फेसबुक आदि में लगे रहते हैं। धीरे-धीरे बात करने की आदत कम होती जा रही है। बीता हुआ समय कभी वापस नहीं आता। बहुत जल्दी तुम लोग बड़े होकर नौकरी करने चले जाओगे और तब अफसोस होगा।''

सबने मोबाइल अलग रख दिए। पहले अंत्याक्षरी खेली और फिर शतरंज। सबको खूब मजा आया। मम्मी ने बताया कि बचपन में वह भी शतरंज खेलती थीं। शतरंज खेलने से दिमाग तेज़ होता है, क्योंकि हर चाल के भविष्य के लिए अलग-अलग परिणाम पर सोचना पड़ता है। जीवन तो यही है, हर कार्य का क्या नतीजा होगा और हमारे लिए बाद में भी क्या सबसे अच्छा रहेगा, यह विचारना चाहिए।

अगले दिन बाज़ार में खाने के बाद कुमाऊँ की प्रसिद्ध मिठाई-बाल मिठाई, जिसमें चॉकलेट जैसी मिठाई पर सफेद चीनी के दाने चिपका दिए जाते हैं, खाई गई। दुकानवाला 'सुगोडी'-पते में बंधी मावा नारियल और इलायची की मिटाई चखने का आग्रह करने लगा। अथर्व ने मना किया ''मैंने कभी नहीं खाई है। मैं नहीं खाऊंगा।'' पापा ने कहा, ''थोड़ा-सा तो चखो। जीवन में कुछ नया तो ट्राई करना पड़ता है, नहीं तो सब नीरस और पुराना लगेगा। नई चीज़, नए विचार में ही तो परिवर्तन है, विकास है, दिलचस्प है।''

यादगार छुट्टी बिताकर सब वापस दिल्ली की तरफ लौट रहे थे। बच्चे थक कर सो गए थे। बीच में पड़े बैग को खोलने पर मम्मी की आँखों में खुशी के आंसू आ गए। बैग में बच्चों ने अपने चॉकलेट, विस्कुट, नमकीन के खाली रैपर और पहले दिन उपयोग की गई दो पानी की खाली बोतलें रखी थीं। पहाड़ों को सहेजने के लिए बच्चों ने जीवन में अपना पहला कदम जो उठा लिया था।

—साभार

डॉ. अनीता भटनागर जैन

डॉ. अनीता भटनागर जैन वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी और चर्चित लेखिका हैं। इनकी पर्यावरण संरक्षण पर आधारित बाल कहानियों की पुस्तक 'दिल्ली की बुलबुल' बेहद लोकप्रिय रही है। इन्होने कई समाचार पत्रों व पत्रिकाओं में हिंदी व अंग्रेजी दोनों भाषाओं में सतत लेखन किया है।

कार्यालयीन टिप्पणियां

Acts of commission and omission	कृताकृत
Delegation of financial powers	वित्तीय शक्तियों का प्रत्यायोजन
Exigencies of administrative work	प्रशासनिक कार्य की तात्कालिक आवश्यकताएं
Ex parte judgement	एकपक्षीय निर्णय
Ex-post facto sanction	कार्योत्तर मंजूरी, कार्योत्तर संस्वीकृति
Heirship certificate	उत्तराधिकार प्रमाणपत्र
Impulsive action	आवेगी क्रिया
In anticipation of your approval	आपके अनुमोदन की प्रत्याशा में
Kindly expedite disposal	कृपया शीघ्र निपटान करें
Knowingly and unlawfully	जानबूझकर और अवैध रूप से
Letter of credence	प्रत्यय-पत्र
Negotiated contract	बातचीत से तय किया गया ठेका, वार्तातय संविदा
Non-encumbrance certificate	भारमुक्ति प्रमाणपत्र
On compassionate grounds	अनुकंपा के आधार पर
Pro-rata rate of pension	पेन्शन की यथा अनुपात दर

-बी.एस.बी.ई. प्रयोगशाला
भा.प्रौ.सं. कानपुर

अंतर्राष्ट्रीय 10वाँ योग दिवस

International day of yoga 21st June

Yoga for Harmony & Peace

स्वयं और समाज के लिए योग

संपादक- श्री विजय कुमार पाण्डेय
राजभाषा अधिकारी
oic_rp@iitk.ac.in

राजभाषा प्रकोष्ठ
भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर

ईमेलः arkverma@iitk.ac.in; niteshku@iitk.ac.in
वेबः https://www.iitk.ac.in/new/antas

अभिकल्पः नितेश कुमार
सम्पर्कः
राजभाषा प्रकोष्ठ
भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर (उ.प्र.)
दूरभाषः 0512-259-7122

फेसबुक | एक्स | राजभाषा प्रकोष्ठ | ई-पत्रिका | लिंक्ड इन | इंस्टाग्राम | यूट्यूब